www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार ... | पत्र नहीं; मित्र | संपर्क : deshbandhusgr@gmail.com

देशबन्धु

वर्ष – 8 I अंक–295 I सागर, रविवार, 17 दिसम्बर 2023 I पृष्ठ –8 I मूल्य – 3.00 रुपए

केन्द्रीय मंत्री ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के रथों को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया पृष्ठ 3

- दौड़
- बच्चों के लिए संवेदनात्मक रचनाएँ पृष्ठ 4

- अधिकारियों के चश्मे पर चढ़ी भ्रष्टाचार की धूल, नजर नहीं आती गरीबों की परेशानी पृष्ठ 6

प्रधानमंत्री के 9.5 वर्षों के कार्यकाल में देश में लगातार एक सकारात्मक परिवर्तनः महापौर पृष्ठ 8

कानून मंत्री ने संसद में दी जानकारी

देश की अदालतों में 5 करोड़ मामले लंबित

सुप्रीम कोर्ट में 80 हजार, उच्च न्यायालयों में 61 लाख से ज्यादा मामले

नई दिल्ली, एजेंसी। देश के सुप्रीम कोर्ट, 25 हाईकोर्ट, डिस्ट्रिक्ट और अधीनस्थ अदालतों में 5 करोड़ से ज्यादा मामले लंबित हैं। यह जानकारी कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने लोकसभा में दी। कानून मंत्री ने एक सवाल के जवाब में बताया कि 1 दिसंबर तक देशभर की अदालतों में 5 करोड़ 8 लाख 85 हजार 856 केस सुनवाई के लिए बाकी हैं। इनमें से 61 लाख से ज्यादा केस 25 हाईकोर्ट्स में लंबित हैं।

6 महीने में सुप्रीम कोर्ट के पेंडिंग केस 10 हजार बढ़े मेघवाल ने बताया कि मौजूदा समय में 80 हजार केस सुप्रीम कोर्ट में लंबित हैं। छह महीने पहले 1 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट में लंबित केसों की संख्या 69 हजार 766 थी। जो 1 दिसंबर को बढ़कर 80 हजार से ज्यादा हो गई। तीन साल पहले 10 हजार लंबित केस बढ़ने में मार्च 2020 से जुलाई 2023 तक का समय लगा था।

न्यायपालिका में कुल 26 हजार 568 जज

अर्जुन राम मेघवाल ने यह भी कहा कि भारतीय न्यायपालिका में जजों की कुल स्वीकृत संख्या 26 हजार 568 है। सुप्रीम कोर्ट में जजों की संख्या 34 है। वहीं, हाईकोर्ट्स में जजों की संख्या 1,114 है। जिला और अधीनस्थ अदालतों में जजों की स्वीकृत संख्या 25,420 है। लोकसभा में बोलते हुए कानून मंत्री ने बताया कि साल 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने 15 जून तक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से भी मामलों की सुनवाई की। इनमें कुल 1 लाख 82 हजार से ज्यादा का निपटारा हुआ। इसके अलावा गुजरात, गुवाहाटी, उड़ीसा, कर्नाटक, झारखंड, पटना और मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के साथ सुप्रीम कोर्ट ने कॉन्स्टिट्यूशनल बेंच की कार्यवाही की लाइव स्ट्रीमिंग शुरू की है।

उज्जैन में अभूतपूर्व स्वागत से अभिभूत हुए मुख्यमंत्री

उमड़ा जनसैलाब, रथ पर सवार होकर किया उज्जैनवासियों का अभिवादन

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की दशहरा मैदान से प्रारम्भ हुई स्वागत यात्रा में मुख्यमंत्री का जगह-जगह आत्मीय स्वागत किया गया।

मुख्यमंत्री की स्वागत यात्रा दशहरा मैदान से होते हुए सुराना पैलेस होटल, कंट्रोल रूम तिराहा, वर्षा झोन कॉर्नर से फ्रीगंज गुरूद्वारा होते हुए निखार फैशन की ओर बढ़ी। शहर की विभिन्न मार्गों में लोगों ने कतारबद्ध होकर अपने प्रिय मुख्यमंत्री पर पुष्पों की वर्षा की। छतों से, गैलरी से, स्वागत मंचों से लोगों ने पुष्पों की वर्षा की। शहर में लगभग 300 स्वागत मंच बनाये गये थे। मुख्यमंत्री की यात्रा आगे शहीद पार्क सर्कल, टॉवर चौक होते हुए तीन बत्ती चौराहा पहुंची। सभी जगह विभिन्न समाज के लोगों ने मुख्यमंत्री का आत्मीय अभिनन्दन किया। हर कोई अपने प्रिय मुख्यमंत्री की एक झलक पाने के लिये आतुर नजर आया। जनता अपने प्रिय मुख्यमंत्री को अपने समीप देख आनन्द से आल्हादित हो गई। यात्रा आगे सिंधी कॉलोनी तिराहा से शास्त्री नगर, विवेकानंद कॉलोनी से लोटि स्कूल चौराहा पहुंची। यात्रा मार्गों पर विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, संगठनों, जनप्रतिनिधियों, आम नागरिकों, शहरवासियों ने मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव का पुष्पहारों से आत्मीय स्वागत किया। रथ सवार होकर मुख्यमंत्री डॉ.यादव जब विभिन्न स्थानों से होकर गुजरे तो लोगों ने मुख्यमंत्री का उत्साह से स्वागत किया। स्वागत यात्रा आगे धन्नालाल की चाल, फ्रीगंज, चामुण्डा माता चौराहा, देवासगेट, मालीपुरा, दौलतगंज, नईसड़क से होते हुए कंठाल चौराहा, सराफा पहुंची। रथ पर मुख्यमंत्री के साथ सांसद अनिल फिरोजिया, विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा, सतीश मालवीय, आलोट विधायक चिंतामणि मालवीय, महापौर मुकेश टटवाल, पूर्व विधायक पारस जैन, यूडीए अध्यक्ष श्याम बंसल सहित अन्य आदि जनप्रतिनिधि सवार थे। सम्पूर्ण स्वागत यात्रा के दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कमला कुंवर, विवेक जोशी, बहादुर सिंह बोरमुंडला, नगर निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव, दिलीप सिंह शेखावत, शान्तिलाल धबाई, राजेन्द्र भारती, बहादुर सिंह चौहान, विशाल राजौरिया, सनवर पटेल, राजपाल सिंह सिसौदिया, जगदीश पांचाल, पूर्व नगर निगम सभापति सोनू गेहलोत, अशोक प्रजापत, वीरेन्द्र कावड़िया, रूप पमनानी, ओम जैन, जगदीश अग्रवाल, शिवेन्द्र तिवारी, हेमन्त व्यास, इकबाल सिंह गांधी, जिला पंचायत सदस्य शोभाराम मालवीय, पार्षद, जनप्रतिनिधि आदि अन्य गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

प्रधानमंत्री ने लाभार्थियों से की बात

5 और राज्यों में शुरू हुई विकसित भारत संकल्प यात्रा

नई दिल्ली, एजेंसी। विकसित भारत यात्रा पांच और राज्यों में राज्यों में शुरू हो गई है। शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, राजस्थान, तेलंगाना और मिजोरम में वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए हरी झंडी दिखाई। जहां विधानसभा चुनाव के दौरान आचार संहिता लागू होने के चलते शुरू नहीं किया जा सका था।

इस दौरान प्रधानमंत्री ने कहा कि यह यात्रा पिछले एक माह में न केवल सैकडो शहरी बल्कि हजारों ग्रामीण इलाकों में पहुंच चुकी है। उन्होंने पांचो राज्यो की नई सरकारो से अपील की कि वे अपने-अपने राज्यों की जनता तक इस योजना का लाभ पहुंचाने के लिए हर व्यवस्था को सुदृढ करें। प्रधानमंत्री ने कहाकि उनकी सरकार का लक्ष्य है कि हर तबके तक केंद्र की योजनाओं का लाभ पहुंच सके।इस दौरान उन्होंने इस योजना के लाभाथियो से भी बात की। मुंबई की लाभार्थी महिला उद्यमी मेघना ने प्रधानमंत्री से बात करते हुए बताया कि वह एक सिंगल मदर हैं,उसके सामने रोजगार का संकट था। ऐसे में उसने मुद्रा योजना के तहत बैंक से ऋण लिया और अपना व्यवसाय शुरू किया। मेघना ने बताया कि आज उसका व्यवसाय काफी अच्छा चल रहा है और उसने कई अन्य महिलाओं को भी अपने यहां रोजगार दिया है।

प्रधानमंत्री के विकसित भारत के सपने को साकार करेगी संकल्प यात्रा

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने कई क्षेत्रों में विश्व में उत्कृष्ट छवि निर्मित की है। जनकल्याण और विकास के क्षेत्र में देश व प्रदेश में और बेहतर कार्य हो तथा प्रत्येक जरूरतमंद व्यक्ति को शासकीय योजनाओं और कार्यक्रम का लाभ मिल सके, इस उद्देश्य से प्रधानमंत्री श्री मोदी की परिकल्पना के अनुरूप विकसित भारत संकल्प यात्रा आरंभ की जा रही है। यात्रा के माध्यम से जनकल्याण की योजनाओं और कार्यक्रमों का अधिक प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाएगा, साथ ही यह प्रयास होगा कि इन योजनाओं और कार्यक्रमों के लाभ से कोई भी वर्ग वंचित न रहे। यह यात्रा प्रधानमंत्री श्री मोदी के विकसित भारत के सपने को साकार करेगी।

प्रदेश कांग्रेस में बड़ा फेरबदल

पटवारी को बनाया प्रदेश अध्यक्ष, सिंघार को सौंपी नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी

कटारे उप नेता बने

भोपाल, देशबन्धु। मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव हारने के बाद कांग्रेस में बड़ा फेरबदल देखने को मिला है। पार्टी ने पूर्व मुख्यमंत्री एवं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ की जगह युवा नेता जीतू पटवारी को प्रदेश अध्यक्ष बनाया है। वहीं आदिवासी नेता उमंग सिंघार को नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई है। जबकि विधायक हेमंत कटारे को उप नेता बनाया गया है। पार्टी के महासचिव केसी वेणुगोपाल ने आज नई दिल्ली में इन नियुक्तियों की घोषणा की।

हाल ही में हुए कांग्रेस ने कमलनाथ के नेतृत्व में विधानसभा का चुनाव लड़ा था जिसमें पार्टी की बड़ी हार का सामना करना पड़ा था। तभी से प्रदेश कांग्रेस में फेरबदल की अटकलें लगाई जा रही थीं। पिछले दिनों दिल्ली में हुई पार्टी की समीक्षा बैठक में कांग्रेस आलाकमान ने पार्टी संगठन में फेरबदल के लिए नए नेताओं के नामों का सुझाव भी मांगा था। ऐसी अटकलें थीं कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ हार की जिम्मेदारी लेते हुए अपने पद से इस्तीफा दे देंगे। बाद में ऐसी खबरें भी आईं कि वे लोकसभा चुनाव तक अपने पद पर बने रहेंगे।

बताया जाता है कि कमलनाथ को यह संकेत पहले ही मिल गए थे, कि पार्टी जल्द ही फेरबदल कर सकती है। लेकिन वे इससे सहमत नहीं थे। वे चाहते थे कि लोकसभा चुनाव तक वे प्रदेश कांग्रेस की कमान संभालें। किन्तु पार्टी आलाकमान आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर ज्यादा गंभीर है। इसलिए तीनों युवा नेताओं को कमान सौंपी गई है। प्रदेश अध्यक्ष बनाए गए श्री पटवारी राहुल गांधी की पसंद माने जाते हैं। वे इस बार विधानसभा चुनाव हार गए हैं। जबकि नेता प्रतिपक्ष बनाए गए उमंग सिंघार प्रमुख आदिवासी चेहरा हैं। वहीं उप नेता बनाए गए हेमंत कटारे ब्राह्मण वर्ग से आते हैं। देखा जाए तो कांग्रेस ने इन नियुक्तियों में जाति समीकरण भी साधने की कोशिश की है। पार्टी का मानना है कि इन तेजतर्रार युवा नेताओं को कमान देने से प्रदेश में पार्टी संगठन मजबूत होगा।

मुख्यमंत्री ने दिए निर्देश

ग्वालियर में युवकों पर कार्रवाई से जुड़े प्रकरण में जांच होगी

भोपाल, देशबन्धु। हाल ही में ग्वालियर में विश्वविद्यालय कुलपति को अटैक आने पर उन्हें अस्पताल में एडमिट कराकर उनकी जीवन रक्षा का प्रयास करने वाले विद्यार्थी परिषद के दो युवकों पर पुलिस द्वारा की गई कार्रवाई और संपूर्ण घटना की जांच होगी।

इस प्रकरण में युवकों द्वारा अनधिकृत रूप से वाहन के उपयोग और युवकों पर की गई कार्यवाही के संबंध में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जांच के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुलिस महानिदेशक को निर्देश दिए हैं कि युवकों पर डकैती की धारा लगाना न्यायोचित नहीं लगता क्योंकि युवक आपराधिक पृष्ठभूमि के नहीं हैं। युवकों द्वारा मानवीय दृष्टि से तो सही कार्य किया गया लेकिन यह सही है कि युवकों का तरीका गलत था। यह मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा मामला है।

पदयात्रा पश्चिम व उत्तर भारत के कई शहरों और गांवों से होकर गुजरेगी

भारत जोड़ो यात्रा का दूसरा चरण जनवरी में

2 महीने से अधिक समय तक चलेगी

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस भारत जोड़ो यात्रा का दूसरा चरण आयोजित करने की योजना बना रही है, जो जनवरी के पहले सप्ताह से शुरू होने की संभावना है। पार्टी सूत्रों ने शनिवार को यह जानकारी दी।

कांग्रेस सूत्रों के मुताबिक, भारत जोड़ो यात्रा का पहला चरण, जिसका नेतृत्व पूर्व पार्टी प्रमुख राहुल गांधी ने किया था और पांच महीने में तमिलनाडु के कन्याकुमारी से जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर तक 4,000 किमी से अधिक की यात्रा की थी, कांग्रेस कार्यकर्ता को एक साथ लाने के लिए एक बड़ी सफलता थी। इसी प्रकार पार्टी ने 2024 में जनवरी के पहले सप्ताह से यात्रा के दूसरे चरण की योजना बनाई है, जो पार्टी के लोकसभा अभियान की भी शुरुआत करेगी। सूत्र ने कहा कि यात्रा के दूसरे चरण की योजना जनवरी के पहले सप्ताह से बनाई जा रही है।

सूत्र ने बताया कि इस बार भारत जोड़ो यात्रा 2.0 हाइब्रिड मोड में होगी, इसमें पद यात्रा और बस से यात्रा शामिल होगी। सूत्र ने कहा कि पदयात्रा पश्चिम और उत्तर भारत के कई शहरों और गांवों से होकर गुजरेगी। उन्होंने यह भी कहा कि यात्रा पूर्वोत्तर से शुरू होगी और दो महीने से अधिक समय तक चलेगी। सूत्र ने बताया कि पार्टी नेता भारत जोड़ो यात्रा के ■ शेष पृष्ठ 5 पर

संसद में हुई घटना का संबंध बेरोजगारी व महंगाई से

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने संसद की सुरक्षा में हुई चूक को गंभीर मुद्दा बताया लेकिन कहा कि इस घटना का संबंध युवाओं में फैली बेरोजगारी और महंगाई है। श्री गांधी ने कहा, संसद सुरक्षा में हुई चूक का कारण बेरोजगारी और महंगाई है। नौकरियां कहां हैं। युवा हताश हैं -हमें इस मुद्दे पर फोकस करना है और युवाओं को नौकरी देनी है। सुरक्षा चूक ज़रूर हुई है, मगर इसके पीछे कारण ■ शेष पृष्ठ 5 पर

कांग्रेस कल से एकत्रित करेगी फंड

2024 लोकसभा चुनाव से पहले पार्टी फंड बढ़ाने के लिए कांग्रेस ने तैयारी शुरू कर दी है। इसके लिए पार्टी क्राउड फंडिंग मुहिम की शुरुआत करने जा रही है। कांग्रेस ने इस मुहिम का नाम 'डोनेट फॉर देश' रखा है। 18 दिसंबर को दिल्ली से इसकी शुरुआत होगी। पार्टी ने अपने सभी पदाधिकारियों और सदस्यों को इस मुहिम में कम से कम 1380 रुपए का योगदान देने को कहा। कांग्रेस सांसद केसी वेणुगोपाल ने शनिवार को एक प्रेस कांफ्रेंस कर क्राउड फंडिंग मुहिम लॉन्च करने की बात कही। वेणुगोपाल ने कहा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ■ शेष पृष्ठ 5 पर

कथा जब समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच जाएगी तब समाज में रामराज्य संभवः चिन्मयानंद बापू

सागर, देशबन्धु। पीटीसी ग्राउंड में चल रही श्री शिव महापुराण के द्वितीय दिवस में बापू ने कहा कि शनिवार को कथा के बहुत सारे वर्ग कथा से वंचित है और कहीं ना कहीं दुर्भाग्य है। ऐसे लोगों का जो समाज में रहकर भी समाज के प्रति वफादार नहीं है और सनातन धर्म के होकर भी सनातन धर्म को खेद पहुंचा रहे, बापू ने कहा कि समाज के अंतिम वर्ग का व्यक्ति भी अगर कथा से जुड़े तो आज समाज में रामराज्य संभव हो जाएगा बाद में शिव महापुराण की कथा के संबंध में बापू ने चंचला देवी की भक्ति और उनकी द्वारा सुनी गई शिव महापुराण की कथा को बताते हुए कहा कि चंचला का पति अत्यंत दुराचारी था और उसके पापों का परिणाम कि उसकी मृत्यु के पश्चात उसको भयानक प्रेत बनना पड़ा लेकिन बाद में चंचला के द्वारा जब विंध्य पर्वत पर शिव महापुराण कराकर और शिव महापुराण अपने पति के नाम से सुनी गई और उसके कारण उसके पति को प्रेत योनि से मुक्ति मिले। पति पत्नी यदि चाहे ले तो एक दूसरे

को भयानक से भयानक पापों से भी मुक्ति अपने कर्मों से दिला सकते हैं। इस समाज में चाहे पति कितना भी आगे बढ़ जाए और चाहे पत्नी भी कितनी आगे बढ़ जाए लेकिन दोनों को चाहिए कि अपनी भक्ति से एक दूसरे को प्रभावित करें, शिवपुराण की कथा सुनने के बाद हमारा मोक्ष तभी होगा जब हम आगे जीवन में पाप ना करने का संकल्प लें और भोलेनाथ के प्रति अपने अगाध श्रद्धा बताते हुए अपने जीवन को पवित्र और पुनीत बनाएं बापू ने कथा के दौरान एक सुंदर भजन भोले बाबा तेरी नौकरी सबसे बढ़िया है सबसे खरी जैसे ही गाया श्रोता मंत्रमुग्ध हो गये और पंडाल से बाहर तक श्रोताओं की अपार भीड़ भजन में सुंदर नृत्य गान करने लगे इस पवित्रतम कार्तिक मास में कहा कि भोलेनाथ की भक्ति से सर्वोच्च कुछ भी नहीं है और जितना हो सके इस महीने में शिव महापुराण की कथा सुने और भोलेनाथ की आराधना रुद्राभिषेक और उनकी भक्ति करें।

कथा में मुख्य यजमान प्रतिभा तिवारी, डॉ. अनिल तिवारी, शिवशंकर मिश्रा, डॉ. तरूण बडोनिया, अशोक उपाध्याय, अजय दुबे, बुंदेल सिंह, रामअवतार पाण्डे, अनिल दुबे आदि ने आरती की दीप प्रज्वलित कर बापू का व्यास पीठ से आर्शीवाद लिया।

विजय दिवस के अवसर पर मैराथन का हुआ आयोजन

सागर, देशबन्धु। विजय दिवस के अवसर पर सेना के जवानों, स्कूली बच्चों एवं विश्वविद्यालय के युवाओं के लिए 16 दिसम्बर 1971 में भारत की पाकिस्तान पर हुई जीत के राष्ट्रीय गौरव एवं जवानों के शौर्य की उल्लास एवं उत्साहपूर्ण अभिव्यक्ति को एक मैराथन दौड़ के रूप में महार रेजिमेंट केंद्र सागर के तत्वावधान में मनाया गया। इस मैराथन दौड़ को 3 किलोमीटर, 5 किलोमीटर एवं 10 किलोमीटर दूरी की तीन श्रेणियों में आयोजित किया गया। गौरतलब है की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आव्हान पर विकसित भारत/2047 की संकल्पना को युवाओं के माध्यम से विभिन्न क्रियाकलापों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से आयोजित कर रहा है। जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय योजनाओं एवं कार्यक्रमों के लक्ष्यों के निर्माण में देश की युवा शक्ति को सक्रिय रूप से सम्मिलित करना है। विकसित भारत/2047 का उद्देश्य आजादी के 100 वें वर्ष यानी वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। यह दृष्टिकोण आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न पहलुओं को सम्मिलित करता है। डॉ. हरीसिंह गौर विवि ने शिक्षा और कौशल के माध्यम से समर्थ और आत्मनिर्भर युवाशक्ति को निर्मित करने का संकल्प लिया है। इसी क्रम में विवि की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के 60 स्वयंसेवकों ने विकसित भारत के संकल्प और विजय दिवस के उत्तसाह के साथ आयोजित मैराथन दौड़ में भाग लिया। मैराथन प्रतियोगिता में राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्रा प्रांजली बागरी ने प्रतियोगिता के 3 किलोमीटर वर्ग में मैडल प्राप्त किया।

सागर प्रवास के दौरान अविनाश पांडे से कांग्रेस पदाधिकारियों ने मुलाकात की

सागर, देशबन्धु। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव व पूर्व सांसद अविनाश पांडे गत दिवस अल्प प्रवास पर सागर पहुंचे। उनके यहां आगमन पर मप्र कांग्रेस महासचिव रेखा चौधरी, पूर्व निगम अध्यक्ष त्रिलोकीनाथ कटारे व मप्र कांग्रेस प्रवक्ता डॉ. संदीप सबलोक ने उनसे सौजन्य मुलाकात की। अविनाश पांडे स्थानीय वैवाहिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अल्प प्रवास पर सागर पहुंचे थे। इस दौरान कांग्रेस पदाधिकारियों ने उनका आत्मीय स्वागत कर बदली हुई राजनीतिक परिस्थितियों पर चर्चा कर उनसे मार्गदर्शन लिया। हाल ही में आए विधानसभा चुनाव परिणामों को लेकर उन्होंने कहा कि यह समय राजनीति के संक्रमण काल का है। जिसमें कांग्रेसजनों को राजनीतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए बहुत ही धैर्य और विवेक के साथ कदम बढ़ाकर काम करने की जरूरत है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के शुभारंभ का लाइव प्रसारण का हुआ आयोजन

मकरोनिया, देशबन्धु। शनिवार को विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वर्चुअल एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में उज्जैन से किया गया। कार्यक्रम का ब्रॉडकास्ट एवं सजीव प्रसारण किया गया। जिसका लाइव प्रसारण नगर पालिका परिषद मकरोनिया में दिखाया गया। कार्यक्रम में विधायक प्रदीप लारिया शामिल हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक लारिया ने कहा यह भारत विकसित संकल्प यात्रा महत्वपूर्ण यात्रा है जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा चलाई जा रही। इस यात्रा का उद्देश्य सरकारी योजनाओं को शहरी क्षेत्र से लेकर ग्रामीण क्षेत्र तक प्रत्येक व्यक्ति

को योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए चलाई जा रही यात्रा है जो भी व्यक्ति सरकारी योजनाओं से वंचित रह गए हैं उन व्यक्तियों तक योजनाओं को पहुंचाना इस यात्रा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। आज इस यात्रा का शुभारंभ हुआ है और यह यात्रा 22 दिसंबर को नगर पालिका मकरोनिया क्षेत्र में प्रवेश करेगी इस यात्रा में शिविर के माध्यम से सभी सरकारी योजनाएं हैं उनका लाभ व्यक्तियों तक पहुंचाया जाएगा विधायक ने सभी से आग्रह किया सभी लोग शिविर में शामिल होकर योजनाओं का लाभ लें। इस अवसर पर नगर पालिका परिषद मकरोनिया अध्यक्ष मिहिलाल अहिरवार, बलवंत सिंह ठाकुर, विवेक सक्सेना, नरेंद्र सिंह ठाकुर, राजा रिछारिया, मुख्य नगर पालिका अधिकारी रीता कैलासिया, उपयंत्री अमन जैन, उपयंत्री रूबी जैन सहित नगर पालिका अधिकारी कर्मचारी एवं मकरोनिया क्षेत्र के क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

इंसान होकर इंसान के काम आए, गरीब असहाय लोगों की मदद जरूर कीजिएः मुनिश्री

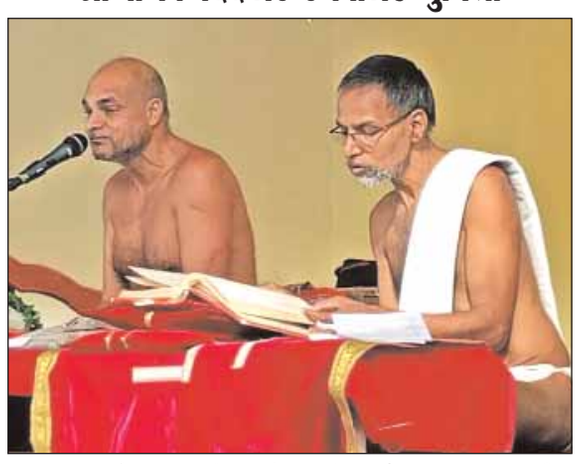

सागर, देशबन्धु। इंसान होकर इंसान के काम आए, गरीब असहाय लोगों की मदद जरूर कीजिए। मेरे द्वारा ही मेरे परिणाम से मेरा कल्याण हो, मेरे परिणाम मुझे ही संभालते हैं तभी भविष्य में तप साधना से मेरे कल्याणक होंगे यह बात मुनिश्री सुदत्तसागर ने विजय टॉकीज चौराहा स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में कही, मुनिश्री ने कहा कल्पद्रुम महामंडल विधान आपके जीवन के व्यवधान समाप्त कर आपको सत्य अहिंसा त्याग का परिधान पहनाएगा। अपनी विशुद्धि बढ़ाएं। सहनशील बनकर समता रखकर बिना आकांक्षा के प्रभु भक्ति करें, आप जरूर सांसारिक और आध्यात्मिक सफलता प्राप्त करेंगे। क्षुल्लक श्री चंद्रदत्त सागर ने कहा आपत्ति विपत्ति संपत्ति सभी दंपति के साथ लगी है इसलिए सब उलझनो को छोड़कर सुलझने के लिए जोड़े के साथ इंद्राणी बनकर गृहस्थ विधान करता है क्योंकि भोगों में साथ हैं, तो योग में, धार्मिक क्रियाओ में भी साथ होना चाहिए, उन्होंने कहा बस शांत परिणाम से पूजा करना। मुझे पूछा नहीं, नाम नहीं बोला, सामग्री नहीं मिली आदि। विकल्प नहीं करना, बस विनय पूर्वक भगवान की पूजा करना, सब भक्त हैं भगवान के सामने और शरण में यह चक्रवर्ती, सौधर्म इंद्र आदि तो सिर्फ पद हैं। मंदिर कमेटी से अशोक जैन चितौरा ने बताया कि रविवार से शुरू होने जा रहे श्री कल्पद्रुम महामंडल विधान में प्रातः 6.30 बजे प्रभु, गुरु आज्ञा, 7 बजे से घट यात्रा, ध्वजारोहण, पांडाल शुद्धि, सकलीकरण, इंद्र प्रतिष्ठा के उपरांत 9 बजे से मुनि संघ के मंगल प्रवचन, तत्पश्चात पूजन संपन्न होगी।

महिला हिंसा विरोधी पखवाड़ा के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

बीना, देशबन्धु। विकासखंड के शासकीय कन्या विद्यालय में महिला हिंसा विरोधी पखवाड़े का आयोजन किया गया जिसमें आवाज संस्था की जिला समन्वयक मालती पटेल द्वारा साइबर अपराध एवं बालिकाओं के संदर्भ में बढ़ते अपराधों के बारे में बच्चियों को जानकारी दी। सुरक्षित एवं असुरक्षित स्पर्श के बारे में बताया गया। इसी के साथ आसपास के घटित घटनाओं को संदर्भ में लेते हुए बच्चियों को सजग रहने हेतु कहा एवं सभी सुरक्षात्मक नंबरों के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम की सफलता तभी होगी जब एक भी बालिका किसी भी प्रकार के अपराध का शिकार ना हो एवं ऐसे किसी भी रास्ते पर न पहुंचे जिससे कि जीवन अंधकार में पहुंचे। विद्यालय के प्राचार्य संजय साहू द्वारा पुणे स्टार के कार्यक्रम करने की बात कही गई एवं कार्यक्रम में केके जैन, अजय सिंह ठाकुर, लोकेश जैन एवं समस्त शिक्षको का सहयोग रहा। विद्यालय की छात्राएं एवं आवाज संस्था से ब्लॉक समन्वयक महेश कुमार उपस्थित रहे।

लापता बहनों के कुएं में मिले शव

बण्डा, देशबन्धु। विनायका थाना क्षेत्र के ग्राम राख में तीन दिनों से लापता दो सगी बहनों के शव कुएं में मिले हैं। शव मिलने की सूचना मिलते ही ग्राम में सनसनी फैल गई। पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू की। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच में लिया है। पुलिस के अनुसार 13 दिसंबर की शाम को अनारकली पति देवेंद्र निवासी राख ने विनायका थाने पहुंचकर अपनी बेटी राधिका पिता देवेंद्र उम्र 13 साल और गुड्डी पिता देवेंद्र उम्र 11 साल की गुमशुदगी दर्ज कराई थी। शिकायत मिलते ही बालिकाओं की तलाश शुरू की गई। जांच में पता चला कि राधिका और गुड्डी 13 दिसंबर की शाम करीब 4.30 बजे स्कूल से लौटकर घर आई थी। जिसके बाद वे पानी भरने के लिए कुएं पर गई थी। साथ ही उसी दिन गांव में कन्याभोज आयोजित था। जहां शाम करीब 5.30 बजे तक राधिका और गुड्डी को देखा गया था। लेकिन इसके बाद उनकी लोकेशन नहीं मिली। मामले में पुलिस गांव और आसपास के क्षेत्रों में बालिकाओं की तलाश कर रही थी। इसी बीच पिता देवेंद्र शनिवार को गांव के पास स्थित दुल्हादेव मंदिर पर दीप जलाने गए थे। तभी उन्होंने पास में बने कुएं में झांककर देखा तो बेटियों के शव उतराते हुए नजर आए। घटनास्थल मृतक बालिकाओं के घर से करीब 100 मीटर दूर

है। घटनाक्रम की सूचना मिलते ही ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। पुलिस मौके पर पहुंची। एफएसएल टीम को बुलाया गया। टीम ने मौके से घटनाक्रम से जुड़े साक्ष्य जुटाए हैं। शवों को ग्रामीणों की मदद से कुएं से बाहर निकाला गया। पंचनामा बनाकर शव पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेजे हैं। परिचितों ने बताया कि देवेंद्र की 9 बेटियां हैं। जिसमें से मृतक राधिका तीसरे और गुड्डी चौथे नंबर की बेटी थी। विनायका थाना प्रभारी धन्नू सिंह ने बताया कि 13 दिसंबर से लापता दो बालिकाओं के शव गांव के पास बने कुएं में मिले हैं। मामले में मर्ग कायम कर जांच की जा रही है। बालिकाओं की मौत का असल कारण पोस्टमार्टम रिपोर्ट में ही सामने आ सकेगा। मामले के हर बिंदु पर बारीकि से जांच की जा रही है।

स्कूल शिक्षा के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की गूंज अनुगूंजा का फायनल रिर्हसल संपन्न

सागर, देशबन्धु। सम्पूर्ण मप्र सहित सागर में सरकारी स्कूलों भी छात्र-छात्राओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम अनुगूंज की फायनल रिर्हसल शनिवार को महाकवि पद्माकर सभागार मोतीनगर में उत्साह और उमंग के साथ हुई। इस कार्यक्रम में सागर नगर के सभी सरकारी विद्यालयों के 626 छात्र-छात्राओं ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित की इसमें मार्गदर्शन के लिए कवि हरगोविंद विश्व डॉ. हरीसिंह विवि के वरिष्ठ प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष ललित मोहन दूरदर्शन कलाकार देवकीनंदन सकवार ने उपस्थित रहकर उनके शिक्षको को कुछ रह गई कमियों की ओर ध्यान आकृष्ट कराया ताकि 18 दिसम्बर को कार्यक्रम में कोई कमी न रह जाए। अनुगूंज कार्यक्रम संयुक्त संचालक लोक शिक्षण मनीष वर्मा एवं नोडल अधिकारी डॉ. महेन्द्र प्रताप तिवारी के मार्गदर्शन में विगत 15 दिनों की तैयारी के बाद प्रस्तुत किया जा रहा है इस कार्य को सफल बनाने के लिए सागर के विभिन्न प्राचार्य एवं शिक्षकों की विभिन्न समितियों का गठन किया गया है। सरकारी स्कूलों के बच्चों द्वारा जो शनिवार को मनमोहक प्रस्तुतियों दी गई। उपस्थित मार्गदर्शको ने उसकी तारीफ करते हुए कहा कि सरकारी स्कूलो छात्र-छात्राओ ने सीमित संसाधनों में मात्र 15 दिवस की अवधि में इन छात्रों ने जो उत्कृष्ट कार्यक्रम प्रस्तुत किए है वह तारीफे काबिल है।

धूमधाम से मनाई जायेगी तारण जयंती

बीना, देशबन्धु। तारण तरण जैन समाज द्वारा 19 दिसंबर को तारण तरण मंडलाचार्य महाराज की जयंती बड़े ही धूमधाम से मनाई जायेगी। कार्यक्रम का आयोजन चिदानंद महाराज, मुक्तानंद महाराज एवं आत्म साधनारत अमित भैया भोपाल के सानिध्य में संपन्न किया जायेगा। कार्यक्रम को लेकर तारण तरण इटावा जैन मंदिर में बैठक आयोजित की। कार्यक्रम आयोजक यतेंद्र मोदी मनोज मोदी मोदी परिवार सहित बैठक में सकल तारण तरण जैन समाज द्वारा निणर्य लिया गया कि तारण समाज के गुरु भक्तो की मंगलमय उपस्थिति, सहयोग, समर्पण से समाज में अपूर्व प्रभावना का योग बनेगा, यह संपूर्ण आयोजन तारण समाज का गौरव है इस अवसर पर हमारा परिवार और सकल तारण समाज बीना अत्यंत हर्षित एवं प्रमुदित भावो सहित आपको आमंत्रित करती है। तारण तरण जयंती के तहत रविवार को सुबह 9 बजे आयोजक परिवार के घर से चैत्यालय तक जिनवाणी प्रभात फेरी निकाली जायेगी। रात्रि 8 बजे से संगीतमय झूला पालना महामहोत्सव एवं श्री तारण भजन भक्ति संध्या का आयोजन किया जायेगा। कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध गायिका नीतू बुंदेला, रीना जैन सिरोंज, नेहा जैन सिरोंज एवं इंस्ट्रूमेंट कलाकार पार्टी जबलपुर द्वारा प्रस्तुति दी जायेगी।

साहित्य ही एकमात्र जरिया है जो समाज की बेहतरी के लिए कार्य कर सकता हैः मणीकांत चौबे

सागर, देशबन्धु। बुंदेलखंड हिंदी साहित्य संस्कृति विकास मंच की 1509 वीं गोष्ठी निर्वाध गति से निरंतर क्रम में संपन्न हो गई। गोष्ठी डॉ. प्रेमलता नीलम की अध्यक्षता में संपन्न हुई। सागर की कवियित्री सुनीला सराफ के द्वारा मां सरस्वती की वंदना प्रस्तुत की गई। अध्यक्ष ने अपने उद्बोधन में कहा बुंदेलखंड हिंदी साहित्य विकास मंच उन्तीस वर्षों से निरंतर संगोष्ठी आयोजित कर समाज में श्रेष्ठ साहित्य रचनाओं के द्वारा आनंदमय सकारात्मक वातावरण बना रहीं हैं। इस साहित्य आराधना के आराधक मणीकांत चौबे अनंत बधाईयों के पात्र है। काव्यपाठ करते हुए कहा तुम चंदा बन, नभ.भुमि चमको, मैं चांदनी बन जाऊंगी। तुम बादल बन जाओ तो मैं दामिनी बन जाऊंगी। संयोजक मणीकांत चौबे ने कहा कोरोना काल में संस्था ने ऑन लाईन संगोष्ठी आयोजित करने का संकल्प लिया और आज हम दो सौ ऑनलाईन संगोष्ठी के समीप पहुंच गये हैं। आने वाले कल में हम क्या करने वाले है, कोई नहीं जानता। परंतु विश्वास यह जानता है कि हम संघर्ष व नव संवेदना के साथ समाज के नवीनीकरण व मार्गदर्शन की दिशा में कार्यरत हैं। साहित्य ही एक मात्र जरिया है जो समाज की बेहतरी के लिए कार्य कर सकता है। काव्यपाठ करते हुए कहा एक नई नई बस्ती में खूब गहराई की मस्ती में, एक दिन बिल्ली इधर से उधर आ जा रही थी। घटना कुछ खास है, उत्सुकता बता रही थी। मैंने एक दर्शक को टोका, घटना का मर्म टटोला, मैंने पूछा भाई साहब क्या हुआ है, वह बोला, भई साहब, कल रात यहां हुआ है, बलात्कार व मर्डर का केस। यह कौन सी नई बात है, ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा देश है। इस गोष्ठी में काव्य पाठ हेतु चित्रकूट उप्र से राम लाल द्विवेदी प्राणेश, पृथ्वीपुर से वीरेंद्र त्रिपाठी, कल्याण दास साहू पोषक एवं संध्या साहू सांझी, निवाडी से राम निवास तिवारी आशु कवि, रीवा से डॉ. बारेलाल जैन, बड़ामलहरा से डॉ. देवदत्त द्विवेदी सरस, खजुराहो से परम लाल तिवारी, दमोह से डॉ. रघु नंदन चिले, विमला तिवारी, खुरई से डॉ. राजेन्द्र मलैया नमन, सागर से डॉ. सीताराम श्रीवास्तव भावुक, पूरन सिंह राजपूत, डॉ. करुणा ठाकुर, पुष्पेन्द्र दुबे, देवकी नन्दन रावत तथा डॉ. नलिन जैन ने भी काव्य की विभिन्न प्रस्तुतियां दी। संगोष्ठी में उपस्थित साहित्य मनीषी व प्रबुद्धजन उपस्थित रहे और कवियों का उत्साह वर्धन किया और गोष्ठी के संचालक डॉ. नलिन जैन ने आभार व्यक्त किया।

सदैव सदाचारी जीवन ही जीना चाहिएः शास्त्री

सागर, देशबन्धु। अंहकार मनुष्य का सबसे बड़ा दोष है और विनाश का कारण है। अंहकार मनुष्य के सारे सदगुणों को सुखे वन में लगी आग की तरह सब कुछ नष्ट कर देता है। राजा परिक्षित जैसे धर्म परायण राजा का छणिक अंहकार घोर पाप के रूप में आकर मृत्यु का कारण बना इस लिए मनुष्यों को अंहकार नहीं करना चाहिए। यह बात पं. कृष्णा शास्त्री ने सदर स्थित श्री सिद्धेश्वर मंदिर में आयोजित सप्त दिवसीय संगीतमय श्रीमदभागवत के प्रथम दिवस की कथा में कही कथा के पूर्व मुख्य यजमान कौशल्या चौबे ने कथा व्यास श्री शास्त्री एवं श्रीमद्भागत जी का पूजन एवं आरती की तत् पश्चात कथा व्यास श्री शास्त्री ने भगवान श्री कृष्ण की सुन्दर स्तुति के साथ प्रथम दिन की कथा आरंभ की शास्त्री जी ने ऋषी पुत्र श्रृंगी जी द्वारा राजा परिक्षित को श्राप देने तथा श्री नारद और भक्ति माता एवं उनके पुत्र ज्ञान और वैराज्ञ की कथा श्रद्वालुओं

को श्रवण कराई इसके बाद आत्मदेव तथा धुंधकारी के प्रेत बनने एवं गोकर्ण जी के द्वारा प्रेत धुंधकारी की मुक्ति का मनमोहक वर्णन कर उपस्थित भक्तों का मनमोह लिया। शास्त्री जी ने अपनी मधुर वाणी से जीवन में सदाचार के महात्व तथा श्री राधे श्याम की भक्ति का महात्व बताते हुए कहा की मनुष्य केवल सदाचारी जीवन ही जी इस पर ही दयालु भगवान श्री कृष्ण उसे अपनी भक्ति का दान दे देते हैं। कथा के बाद सुभाषिनी राजीव चौबे द्वारा बनाई रंगोली थाल से 101 दीपो से भव्य आरती की गई एवं कविता चौबे द्वारा 21 प्रकार के व्यंजनों का प्रसाद वितरण किया गया। कथा में पं. आशीष प्यासी, कमलकांत चौबे, कृष्णकांत शुक्ला, शक्ति बहादूर वर्मा, राजेश सैनी, सुधीर पांडे, राहुल राय, अक्षय शर्मा सहित अधिक संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित रहे एवं कथा अमृत का पान कर अपने जीवन को सफल बनाया।

असुविधाः सड़क पर मनमानी प्रशासन का रवैया निरकुंश

सड़क के बीचों बीच फल सब्जी के हाथठेला, सड़क किनारे सवारी वाहनों का कब्जा

मालथौन, देशबन्धु। शनिवार को हाट बाजार के दिन ओवर ब्रिज के आस पास मनमाने ढंग से सड़क के बीचों बीच फल, सब्जियों के हाथठेला और वाहन खड़े होने से आवागमन में भारी असुविधा का सामना करना पड़ता है एक तरह ओवर ब्रिज के रास्ते पर अतिक्रमण कर रखा जहां से निकलने में परेशानी का सामना करना पड़ता हैं। खिमलासा रोड स्थित गलत तरीके से सड़क किनारे प्रतिदिन बिजली दफ्तर तक सवारी वाहनों के खड़े होने हादसों का डर बना रहता हैं। जबकि अस्पताल कालेज और तहसील तरफआने जाने वालो वाहन चालकों और छात्र-छात्राओं को हादसों का डर बना रहता हैं उन्हें आवागमन असुविधा का सामना करना पड़ता हैं। उल्लेखनीय है विगत महीनों पूर्व एक बड़ी दुर्घटना होने के बाद लोग सबक नहीं ले रहे है। शायद फिर बडी दुर्घटना का इंतजार कर रहे हैं। जबकि इसी हाइवे मार्ग 86 मालथौन बीना और भोपाल के प्रतिदिन हजारों वाहनों का आवागमन रहता है लेकिन इस और पुलिस प्रशासन निरकुंश बना हुआ हैं।

मायके में महिला ने लगाई फांसी

खुरई, देशबन्धु। शहरी थाना क्षेत्र के टीहर गांव में अज्ञात कारणों के चलते एक 35 वर्षीय महिला ने अपने मायके में फांसी लगाकर अपनी जान दे दी है। भागवती पति मूलचंद आदिवासी 35 ने अपने मायके के घर में फांसी लगी ली। इसके बाद परिजन उसे सिविल अस्पताल लेकर पहुंचे जहां डॉक्टर ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी अस्पताल प्रबंधन ने पुलिस को दी। पुलिस ने अस्पताल पहुंचकर पंचनामा कार्यवाही कर शव का पोस्टमार्टम कराया। उसके चाचा अमर सिंह आदिवासी ने बताया कि भतीजी के पति की 3 साल पहले मौत हो चुकी है। भागवती को टीवी की बीमारी भी थी। इसके बाद ससुराल के लोग उसे मायके में छोड़ गए थे। जब घर के सभी लोग खेत में गए हुए थे तभी सूना घर देखकर भतीजी ने फांसी लगा ली। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

विजय दिवस पर अमर शहीदों को कांग्रेस सेवादल परिवार ने किया स्मरण

सागर, देशबन्धु। विजय दिवस के पर्व पर कांग्रेस सेवादल परिवार ने शहीद स्मारक, कटरा बाजार में मोमबत्ती प्रज्जवलित कर देश पर प्राण न्योछावर करने वाले वीर जवानों के बलिदान को स्मरण किया। जैसा कि विदित है कि विजय दिवस बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में 1971 में पाकिस्तान पर मिली विजय के अवसर पर मनाया जाता है। इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष अमित दुबे रामजी ने वीर जवानों की वीरता को नमन करते हुये कहा कि 1971 के

युद्ध की जड़ें जनरल याह्या खान के नेतृत्व वाले पाकिस्तानी सैन्य शासन की दमनकारी कार्यवाहियों में छिपी हैं। यह संघर्ष तब उत्पन्न हुआ जब शेख मुजीबुर रहमान के नेतृत्व वाली अवामी लीग ने 1970 का चुनाव जीता। जवाब में पाकिस्तानी सेना ने नरसंहार का सहारा लिया, जिससे पूर्वी पाकिस्तान से बड़े पैमाने पर पलायन शुरू हो गया। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व में भारत ने शरणार्थियों को आश्रय देने के लिए हस्तक्षेप किया। इस अवसर पर शहर सेवादल अध्यक्ष सिंटू कटारे, महेश जाटव, राहुल चौबे, नितिन पचौरी, आनंद हैला, प्रीतम यादव, परख शुक्ला आदि उपस्थित रहे।

सार समाचार

घर से निकला युवक लापता, पुलिस खोज में जुटी

छतरपुर, देशबन्धु। सिटी कोतवाली के अंतर्गत शहर के सबनीगर मोहल्ला निवासी एक 21 साल का युवक घर से किसी काम से निकला और संदेहास्पद तरीके से लापता हो गया है। पुलिस ने इस मामले की रिपोर्ट पर गुमइंसान का मामला दर्ज करके उसकी तलाश शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार सबनीगर मोहल्ला में सरस्वती मार्केट के सामने रहने वाले शेख शहजाद का 21 साल का बेटा शेख सरताज शुक्रवार की शाम किसी काम से घर से बाहर गया और लौटकर नहीं आया। काफी तलाश करने के बावजूद जब उसका कहीं पता नहीं चला तो थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। परिजन ने शहर में शेखों की बगिया में रहने वाले एक युवक पर उनके बेटे को गायब करने का संदेह जताया है। पुलिस लापता युवक की खोज में लगी है, मगर अभी तक उसका कहीं पता नहीं चला है।

एडीएम ने नया स्लॉटर हाउस का निरीक्षण कर दिए निर्देश

छतरपुर, देशबन्धु। राज्य शासन के निर्देशों के अनुक्रम में अपर कलेक्टर नम: शिवाय अरजरिया ने शनिवार को छतरपुर शहर के नया मोहल्ला तिराहा के पास स्थित स्लॉटर हाउस का निरीक्षण किया है। इस दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विक्रम सिंह एवं नगर पालिका सीएमओ माधुरी शर्मा भी उपस्थित रहीं। एडीएम ने खुले में मांस की दुकाने लगाने वालों को समझाइस देते हुए निर्देशित किया कि खुले में मांस से संबंधित सामग्री का विक्रय न करें। उन्होंने कहा स्लॉटर हाउस में आवंटित दुकानों में ही मांस का विक्रय करें। एडीएम ने नगर पालिका को आस पास स्वच्छता व्यवस्था दुरूस्त करने के निर्देश दिए। एडीएम ने दुकानदारों को समझाइस देते हुए कहा कि खुले में मांस का विक्रय करते पाए जाने पर संबंधित पर कार्यवाही की जाएगी। एडीएम ने वहां स्थित प्राथमिक शाला का निरीक्षण कर स्कूल का द्वार मेन रोड की तरफ करने का प्लान तैयार करने के निर्देश दिए।

केन्द्रीय मंत्री ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के रथों को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया

- स्टाल लगाकर किया हितग्राहियों को लाभान्वित, मेघावी बच्चे हुए सम्मानित

छतरपुर, देशबन्धु। शनिवार को नगर पालिका परिसर में आयोजित कार्यक्रम में विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार द्वारा किया गया। जिला स्तरीय कार्यक्रम में डॉ. वीरेन्द्र कुमार एवं अन्य अतिथियों ने हरी झण्डी दिखाकर जिले के आठ विकासखण्डों में योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए विकसित भारत संकल्प यात्रा के रथों को रवाना किया। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उद्बोधन का सीधा प्रसारण किया गया। उज्जैन मे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में हुए राज्य स्तरीय कार्यक्रम को सभी ने ऑनलाइन देखा। इसके बाद मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार जिले में विकसित भारत संकल्प यात्रा का प्रभावी तरीके से क्रियान्वयन पर अमल शुरू कर दिया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष विद्या अग्निहोत्री, विधायक महाराजपुर कामाख्या प्रताप सिंह, जिला पंचायत सीईओ तपस्या परिहार, अपर कलेक्टर नम: शिवाय अरजरिया, नगर पालिका अध्यक्ष छतरपुर ज्योति चौरसिया, मलखान सिंह, सीएमओ माधुरी शर्मा, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अर्चना सिंह, भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष पुष्पेन्द्र प्रताप सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक और अधिकारी-कर्मचारी मौजूद थे।

आकर्षक रहे विभिन्न योजनाओं के स्टाल

विकसित भारत संकल्प भारत यात्रा के शुभारंभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में स्वास्थ्य कैंप, पीएम स्वनिधि, कृषि विकास सेवाएं, आयुष्मान व उज्जवला योजना के स्टाल आकर्षक रहे। मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार ने अतिथियों के साथ स्टालों का अवलोकन किया। कार्यक्रम में केन्द्र सरकार के विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों द्वारा मेरी कहानी मेरी जुबानी के अंतर्गत अपने अनुभव साझा किये। लाभार्थियों ने बताया योजना का लाभ लेने से किस तरह उनके जीवन में खुशहाली आई है।

महाराजपुर के ग्राम मऊ के लाभार्थी बृजबिहारी ने बताया कि बकरी पालन के लिए एक करोड़ ऋण प्राप्त किया था। पशु पालन के अंतर्गत उसका फार्म अच्छा चल रहा है। इस योजना में 50 प्रतिशत अनुदान का लाभ भी मिलेगा। प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राही द्रोपदी सेन, अनीता श्रीवास, पीएम स्वनिधि के लाभार्थी बृजेश लोधी और विद्यादेवी बरार, इसी तरह नि:शक्त विवाह प्रोत्साहन योजना की लाभार्थी श्रीमती सोनम गुप्ता, संगीता पटेल और आरती अहिरवार ने अपने अनुभव बताये।

महिलाओं को दिया उज्ज्वला योजना का लाभ

मुख्य अतिथि ने प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत लाभार्थी प्राची त्रिपाठी, पूनम द्विवेदी, विनीता सिंह सेंगर और वंदना द्विवेदी को रसोई गैस कनेक्शन वितरित किये। साथ ही कक्षा 10वीं और 12वीं में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी मंच से सम्मानित किया। केंद्रीय मंत्री ने मेरी कहानी मेरी जुबानी के तहत योजना के लाभ मिलने पर अपने अनुभव साझा करने वाले लाभार्थियों को भी सम्मानित किया।

ग्रामीण इलाकों के लिये प्रमुख योजनाएं

कार्यक्रम में वक्ताओं ने ग्रामीण इलाकों के लिये प्रमुख योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इनमें आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, दीनदयाल अत्योदय योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान, किसान क्रेडिट कार्ड, प्रधानमंत्री पोषण अभियान, हर घर जल, जल जीवन मिशन, प्रधानमंत्री स्वामित्व, जन धन योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री प्रणाम, नैनो फर्टिलाइजर योजना के बारे में बताया गया। साथ ही जनजातीय परिवारों के कल्याण से संबंधित योजनाओं में सिकल सेल एनीमिया निवारण मिशन, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों में प्रवेश, स्कॉलरशिप, वन अधिकार, वन-धन विकास केन्द्र के बारे में भी बताकर हितग्राहियों को इनका लाभ लेने के लिए प्रेरित किया गया।

सीएम के आदेश के बावजूद नगर प्रशासन नहीं कर रहा अवैध दुकानों पर कार्रवाई

- नगर में जगह जगह खुली माँस की दुकानें, खुले में बेचा जा रहा मांस

हरपालपुर, देशबंधु। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा शपथ ग्रहण करने के तुरंत बाद आदेश जारी करते हुए खुले मे माँस, मछली बेचने वालों पर कार्यवाही करने का आदेश जारी किया था। मगर सीएम के आदेश के बावजूद दुकानें तो नहीं हटाई बल्कि केवल मुनादी कराके खानापूर्ति कर ली है।

नगर जगह जगह गली मोहल्लों और मंदिर मार्गों पर खुली मटन चिकन दुकानों से लोग परेशान हैं। वार्ड 2 लहचूरा रोड़ पर अर्द्धकुवारी माता मंदिर की ओर जाने वाली सड़क पर ही मटन, चिकन की अवैध मंडी चल रही है। जिसके कारण सुबह से पूजन करने मंदिर जाने वाली महिलाओं को सड़कों पर फैली गंदगी और मुर्गों के पंख दिन भर उड़ने से परेशान होना पड़ रहा है। नगर की राजपूत, बस स्टैंड, लहचूरा रोड, राठ रोड़, गलान रोड़, स्टेशन मुहल्ला, नये थाने के पास कई स्थानों पर गुमटियों में पिंजरा रखकर मांस बेचा जा रहा है। मीट दुकानों से निकलने वाला अपशिष्ट पदार्थ दुकानदार सड़क किनारे फेंक देते हैं। इससे दुर्गंध आती है। लोगों का कहना है कि खुले में बेचे जा रहे मांस से राहगीरों को समस्या हो रही है। इसके बावाजूद नगर परिषद नगर में संचालित माँस की दुकानों पर कोई कार्रवाई नही कर रही है। सड़क किनारे रहवासी क्षेत्रों में बकरे मुर्गे के काटे जाने और उसकी गंदगी सड़क पर फैली रहने से लोगों का जीना मुश्किल हो रहा है। इन अवैध मांस की दुकानें बंद कराने के लिए स्थानीय लोग नगर परिषद से कई बार शिकायत भी कर चुके हैं, लेकिन उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही। नौबत यह है कि हर सड़क पर मीट दुकानें सजी हैं।

इनका कहना हैं

मुनादी कर मांस बेचने वाले दुकानदारों को दुकानें हटाने की चेतावनी दी है। साथ ही नगर परिषद मांस की दुकानों की गणना करा रही है। नगर में जितनी मांस की दुकानें हैं इनको जल्द हटाने की कार्यवाही होगी।

प्रताप सिंह खेंगर
सीएमओ, नगर परिषद
हरपालपुर।

रामराजा सरकार धौर्रा मंदिर में

आज राघवेंद्र जू, बनेंगे दूल्हा, दुल्हन जनक किशोरी जू

नौगांव -छतरपुर। आज रविवार की शुभ लग्न में , जनक नन्दनी जू , को शुभ विवाह अवध दुलारे राघवेंद्र जू के संग सम्पन्न होवो सुनिश्चित है , ऐसी अलौकिक समैया पे , सबई भक्तजन , अपने पुरा पड़ोस के संग सादर आमंत्रित हैं । बाराती और घराती दोई तरफ से आप जनें न्योते हैं , सो दोई तरफ को काज भली प्रकार सम्पन्न होवे , जा चिंता भी आप सबई जनन खाँ करने है । राघवेन्द्र सरकार को विवाह ऐतिहासिक बने , ओरछा की तरह इते भी उच्छव छावे ईके लाने हम आप सब भक्तजन अपनी अपनी जिम्मेवारी निभावे के लाने स्वयं सामने आवें , ऐई करवद्ध प्रार्थना है।

भगवान श्री राघवेंद्र सरकार के विवाहोत्सव को धूमधाम तथा हर्सोल्लास के साथ मनाने के लिए बीती 10 दिसम्बर को एक बैठक , श्री रामराजा मन्दिर धौर्रा नौंगाँव में सम्पन्न हुई । जिसमें नगर के अनेक श्रद्धालुजन उपस्थित हुए , सभी ने एकमत से इस आयोजन को मनाने के लिए अपनी सहमति प्रदान की । ध्यान रहे , यह आयोजन श्री रामराजा मन्दिर ओरछा में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है , जिसमें हजारों श्रद्धालुजन उपस्थित होते हैं । चूँकि श्री रामराजा मन्दिर धौर्रा नौगांव भी ओरछा मन्दिर की अनुकृति है , इसलिए यह आयोजन यहाँ होना अपरिहार्य है । आप सभी श्रद्धालुओं से करबद्ध प्रार्थना है कि आइये हम आप सब मिलकर इस आयोजन को अपने नगर का एक मुख्य आयोजन बनाएं , इसके लिए हमें आपका तन मन और यथा सामर्थ धन भी चाहिए है । इस समूचे आयोजन के लिए लगभग दो लाख के अनुमानित बजट की जरूरत पडने वाली है । आप भक्तजन विवाह में सम्पन्न होने वाली विभिन्न रस्मों के यजमान भी बन सकते हैं , यथा टीका द्वारचार , पैर पखराई , विदाई इत्यादि । श्री रामराजा सरकार मन्दिर धौर्रा नौंगाँव में आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य , सनातन धर्मावलंबियों में सामूहिक प्रार्थना के संस्कार पुनर्स्थापित करना मात्र ध्येय है ।

कार्यक्रम विवरण

अपरान्ह 3 बजे से - मनसा देवी मंदिर से भगवान की बारात का प्रस्थान।

सायं 5 बजे से - भगवान का द्वारचार टीका तथा विवाह की विभिन्न रस्मों का वैदिक रीति से पूजन।

सायं 6 बजे से - सभी बारातियों के लिए प्रसादी भण्डारे का प्रारम्भ।

दिव्यांगजन ने खेलों और विभिन्न विधाओं में दिखाई प्रतिभा, जीते पुरस्कार

छतरपुर, देशबन्धु। विश्व विकलांग दिवस के उपलक्ष्य मे शहर के शा. उत्कृष्ठ उ.मा. विद्यालय कमांक 1 में जिला स्तरीय दिव्यांग बच्चो एवं दिव्यांग व्यक्तियो के लिए खेलकूद स्पर्धा व सांस्कृतिक कार्यकम का आयोजन किया गया।

खेलकूद प्रतियोगिताओं में अव्वल रहे दिव्यांगजनों को जिला पंचायत उपाध्यक्ष पार्वती राजूपत, जिला पंचायत सीईओ तपस्या परिहार द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। इस दौरान प्रभारी अधिकारी राजीव सिंह सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, अरविन्द सिंह उप निदेशक नेहरू युवा केन्द्र, डायरेक्टर सीआरसी केन्द्र सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। उत्कृष्ट विद्यालय में आयोजित हुई खेलकूद एवं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए जिले से 326 दिव्यांगजनों ने अपना पंजीयन कराया। इनमें अस्थि बाधित, दृष्टिबाधित, मानसिक मंदबुद्धि, मूक बधिर शामिल हैं। इसमें 251 दिव्यांगजनों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। दिव्यांगजनों ने विभिन्न विधाओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर 100 मीटर दौड़, गोलाफेंक, रंगोली, चित्रकला, व्हीलचेयर, तबा फेंक सहित अन्य प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

चोरों की सक्रियता ने उड़ाई नींद, लोगों में आक्रोश

हरपालपुर, देशबन्धु। नगर में इन दिनों चोरों के हौसले बुलंद है। आये दिन नगर से गांव तक तेजी से चोरी की घटनाएं बढ़ रही हैं। पिछले दिनों हुई चोरियों का पुलिस को अभी तक कोई सुराग नही मिला है। वही हाल में चोर एक गोदाम से एक लाख रुपये कीमत की मटर चुराकर ले गए हैं।

बताया गया है कि चोर किसी वाहन से आये और गोदाम में रखे मटर की 40 बोरी लादकर भाग निकले हैं। ये मटर करीब एक लाख रुपए कीमत की थी। थाने में इस मामले की रिपोर्ट दर्ज करा दी गई है। पुलिस को अभी तक चोरी का कोई सुराग नहीं मिला है। इस घटना को लेकर लोगों में खासी नाराजगी है। खास बात ये है कि हर बार घटना को अंजाम देने के बाद चोर आसानी से निकल भागते हैं। पुलिस इतनी निष्क्रिय बनी है कि चोर बड़ी आसानी से चोरी की वारदात घटित करने के कुछ दिन तक बेख़ौफ़ होकर घूमते हैं और फिर चोरी की दूसरी वारदात को अंजाम देकर आराम से फरार हो जाते हैं। लोगों का कहना है कि थाना पुलिस चोरो के मजबूत नेटवर्क को तोड़ने में सफल नहीं हो पा रही हैं, जिससे चोरों के हौसले बुलंद हैं। चोरो की सक्रियता से नगरवासियों में दहशत बढ़ रही हैं जो घर खाली छोडने से डर रहे हैं। उनकी रातों की नींद उड़ गई है।

हरपालपुर नगर में पिछले महीने से चोरी की वारदातें बढ़ी हैं। नगर में अगल अगल स्थानों पर चोरी की कई घटनाएं हो चुकी हैं। पुलिस किसी भी घटना से पर्दा उठाने में कामयब नहीं ही स्की है। घटनाओं के बाद पुलिस के पास खाली लकीर पीटने के अलावा कुछ भी हाथ नहीं लग पा रहा है। लोगों का कहना है कि पिछले माह में आधा दर्जन से अधिक घरों, व्यापारियों के गोदाम में चोरी की घटनाओं सहित बाइक चोरी की वारदातें हो चुकी हैं। लगातार चोरी की वारदातें बढ़ रही हैं। लोगों का कहना है कि पुलिस रात को गश्त की खानापूर्ति कर रही है।

आये दिन घट रही चोरी वारदातें

पिछले कुछ दिनों में हुई चोरी की वारदातों पर गौर करें तो नगर का ऐसा कोई इलाका नहीं है, जहाँ चोरों ने वारदात को अंजाम न दिया हो। बीते माह थाना क्षेत्र के परेथा गाँव में कल्लू यादव के घर में घुसकर लाखों रुपये की चोरी की घटना को अंजाम दिया था। इस मामले का पुलिस को कोई सुराग नही मिला है। नगर की राजपूत कॉलोनी में बाइक से आये चोरों ने व्यापारी के सुने मकान का ताला तोड़कर 2 लाख से अधिक की नगदी, सोने जेवरों पर हाथ साफ करके फरार हो गए थे। चोरी की ये वारदात सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गए थे, उसके बावजूद पुलिस अभी तक चोरों को नहीं पकड़ स्की है। कुछ दिन पहले चोरों द्वारा भीड़भाड़ भरे बाजार से बाइक चुरा ली है। लोगों का कहना है कि नगर में बाइक चुराने वाला गिरोह भी सक्रिय है और पुलिस इस मामले में निष्क्रिय बनी हुई है। पुलिस की निष्क्रियता का ही चोर गिरोह फायदा उठा रहे हैं।

युवा मंथन के तहत भाषण, वाद विवाद में छात्रों ने दिखाई प्रतिभा

छतरपुर, देशबन्धु। महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय में यूजीसी के निर्देशानुसार युवा मंथन अनुभवात्मक शिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो शुभा तिवारी एवं कुलसचिव यशवंत सिंह पटेल के निर्देशन और संयोजक डॉ कल्पना वैश्य के मार्गदर्शन में इस कार्यक्रम में छात्र छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया। युवा मंथन कार्यक्रम के प्रथम चरण में युवा संवाद मे भाषण, तात्कालिक भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ नंदकिशोर पटेल के संयोजन में आयोजित भाषण प्रतियोगिता में सत्यम खरे प्रथम, श्रेया चनपूरिया ने द्वितीय तथा निहारिका जोशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। डॉ आरडी अहिरवार के संयोजन मे तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में निहारिका जोशी ने प्रथम, रामकिंकर अवस्थी ने द्वितीय तथा अंशिका तिवारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी तरह डॉ डीके प्रजापति के संयोजन में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में जैविक खेती के पक्ष में श्रेया चनपुरिया ने प्रथम, अंकिता शुक्ला ने द्वितीय तथा माही अवस्थी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विपक्ष में परंपरागत खेती के विषय पर विचार रखते हुए अंशिका तिवारी प्रथम, रितिका पाठक द्वितीय और दयाशंकर अहिरवार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है। सभी प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने भाग लेकर अपने विचार रखे। बताया गया है कि यूजीसी से कार्यक्रम निर्धारित होने के बाद यूएनओ मॉडल का प्रदर्शन विश्वविद्यालय में किया जाएगा। इसके पश्चात युवा हैकाथन तथा युवा संसद कार्यक्रम भी होंगे।

लखन असाटी पटना में अधिकारियों को कराएंगे अल्पविराम

छतरपुर, देशबन्धु। पूरे देश में मध्य प्रदेश इकलौता ऐसा राज्य है जहां प्रथक से आनंद विभाग काम कर रहा है। इस विभाग के गठन के पीछे अवधारणा यह है कि मानव के सुख के लिए भौतिक विकास के साथ-साथ आंतरिक विकास भी महत्वपूर्ण है। बिहार सरकार को यह कार्यक्रम पसंद आया है, इसीलिए राजधानी पटना से अल्पविराम कार्यक्रम की शुरुआत की जा रही है। राज्य आनंद संस्थान मप्र से लखनलाल असाटी पटना मंत्रालय पहुंचकर सहकारिता विभाग के अधिकारियों को अल्पविराम का प्रशिक्षण देंगे। श्री असाटी के साथ जबलपुर से अर्चना शर्मा और भोपाल से मुकेश कारूवा भी पटना जाएंगे। पटना में दो दिवसीय अल्पविराम कार्यशाला 23 एवं 24 दिसंबर को आयोजित की गई है। उल्लेखनीय है कि जम्मू कश्मीर में सेना के अधिकारियों को भी आनंद विभाग अल्पविराम का प्रशिक्षण दे चुका है। श्री असाटी ने बताया अल्पविराम के माध्यम से व्यक्ति का ध्यान उसकी कल्पनाशीलता की ओर दिलाया जाता है। क्योंकि विचार के रूप में जो भाव हमारे अंदर चलते हैं वही हमारे सुख दुख का कारण होते हैं।

राजा यादवेन्द्र सिंह जू देव स्टेडियम में 68 वें मेला वीक क्रिकेट टूर्नामेंट का हुआ शुभारंभ

नौगांव, देशबन्धु। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी शनिवार को राजा यादवेन्द्र सिंह जू देव स्टेडियम में 68 वें मेला वीक क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया जिसमें मैचों के शुरूआत से पहले मुख्य अतिथि पूर्व विधायक मानवेन्द्र सिंह (भंवर राजा) ने खिलाड़ियों से हाथ मिलाकर उनका अभिवादन किया जिसके तत्पश्चात मैचों की शुरुआत हुई !

मीडिया प्रभारी अभिषेक टीनू पटेरिया ने जानकारी देते हुए बताया कि शनिवार को राजा यादवेन्द्र सिंह जू देव स्टेडियम में छ: छ: ओवर के चार मैच खेले गए जिसमें पहला मैच डॉ के.एन.मैमोरियल स्पोर्ट्स और के.डी.स्पोर्ट्स के मध्य खेला गया जिसमें डॉ.के.एन.मैमोरियल ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया,पहले बल्लेबाजी करते हुए डॉ के एन मैमोरियल ने निर्धारित छ: ओवरों में 02 विकेट के नुकसान पर शानदार बल्लेबाजी करते हुए 54 रन बनाए जिसके जवाब में के डी स्पोर्ट्स लक्ष्य का पीछा करते हुए छ: ओवरों में 05 विकेट खोकर महज़ 32 रन ही बना सकी और डॉ के एन मैमोरियल ने यह मैच 22 रनों से जीत लिया, इस मैच में मुख्य अंपायर की भूमिका में संजीव साहू और लेग अंपायर की भूमिका में इसराज कुरैशी रहे ! दूसरा मैच अभय इलेवन और लगान क्रिकेट क्लब के मध्य खेला गया जिसमें लगान क्रिकेट ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया, पहले बल्लेबाजी करते हुए लगान क्रिकेट क्लब ने निर्धारित छ: ओवरों में 02 विकेट पर शानदार 61 रन बनाए और जीत के लिए अभय इलेवन को 62 रनों का विशाल लक्ष्य दिया,जीत के लिए बल्लेबाजी करने उतरी अभय इलेवन छ: ओवरों में 01 विकेट के नुकसान पर महज़ 48 रन ही बना सकी और लगान क्रिकेट क्लब ने इस मैच को 48 रनों से जीतकर अपने नाम किया, इस मैच में मेन अंपायर की भूमिका में यशवंत और लेग अंपायर की भूमिका में शिवम् रहे!

तीसरा मैच लकी इलेवन और रॉयल इलेवन के मध्य खेला गया जिसमें लकी इलेवन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया, बल्लेबाजी करने उतरी लकी इलेवन निर्धारित छ: ओवरों में 04 विकेट के नुकसान पर महज़ 29 रन ही बना सकी जिसके जवाब में लक्ष्य का पीछा करने उतरी रॉयल इलेवन ने 02 विकेट खोकर बढ़े ही आसानी से यह मैच 08 विकेट से जीतकर मैच को अपने नाम किया, इस मैच में मेन अंपायर की भूमिका में अंकित और लेग अंपायर की भूमिका में कल्लू रावत रहे ! वहीं चौथा मैच बजरंग क्रिकेट क्लब बी और रॉयल स्टार के मध्य खेला जाना था जिसमें रॉयल स्टार के समय से न आने पर बजरंग क्रिकेट क्लब बी को वॉक ओवर दे दिया गया, शनिवार को खेले गए मैचों में स्कोरर की भूमिका में यतेंद्र सिंह सेंगर और राजपाल सिंह राजपूत और कमेंट्रेटर की भूमिका में कलीम और लिटिल चैम्प तासू सेंगर रही! शनिवार को खेले गए मैचों में मुख्य अतिथि पूर्व विधायक मानवेन्द्र सिंह (भंवर राजा) के साथ नगर पालिका अध्यक्ष अनूप तिवारी, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अंजुल सक्सेना, मुख्य नगरपालिका अधिकारी श्रीमती नीतू सिंह उपाध्यक्ष अजय दौलत तिवारी सभापति ताहिर मंसूरी सभी पार्षद गण आयोजन कर्ताओं में जुगल सचान,सन्नो सक्सेना,सोनू जैन, अशोक तिवारी,बुल्ली राजा,प्रशांत नामदेव रामदत्त पाठक और मैचों के प्रभारी अखंड प्रताप सिंह राय एवं कैलाश रिछारिया मौजूद रहे!

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय में 12 दिवसीय स्पोर्ट्स फेस्ट के आठवें दिन छाया रहा क्रिकेट का उल्लास

विधि संकाय की टीम ने रोमांचक खेल का प्रदर्शन करके जीता फाइनल खिताब

छतरपुर, देशबन्धु। श्री कृष्णा विश्वविद्यालय में 12 दिवसीय स्पोर्ट्स फेस्ट के आठवें दिन शनिवार को मैदान पर छात्राओं के क्रिकेट टूर्नामेंट का रोमांच छाया रहा। आज खेले गये फाइनल मैच में विधि संकाय की टीम का मुकाबला पैरामेडिकल संकाय की टीम से हुआ। जिसमें विधि संकाय ने जीत दर्ज करके क्रिकेट चैंपियन का खिताब जीत लिया है।

इसी तरह पुरूष वर्ग का क्रिकेट मैच कृषि संकाय बनाम फार्मेसी संकाय के मध्य हुआ जिसे फार्मेसी संकाय ने 8 विकेट से जीत लिया। पुरूष वर्ग की फाइनल शतरंज प्रतियोगिता बीसीए के छात्र कौशलेन्द्र सिंह एवं एमसीए के छात्र महेन्द्र पटेल के बीच मैच हुआ। जिसमें महेन्द्र पटेल ने जीत हासिल की है। महिला क्रिकेट के फाइनल

मुकाबले की मुख्य अतिथि महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय की डॉ गायत्री सहप्राध्यापक अंग्रेजी थीं। विशिष्ट अतिथि वीरेन्द्र तिवारी एडवोकेट और जय तिवारी एडवोकेट थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ रचना चौरसिया नेत्र रोग विशेषज्ञ ने की।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ ब्रजेन्द्र सिंह गौतम ने अतिथियों का स्वागत करते हुये कहा कि खेल हमारे जीवन में खास महत्व रखता है। यह हमारे स्वास्थ्य, मनोविज्ञानिक विकास और सामाजिक विकास के लिए एक संपूर्ण उपाय है। मुख्य अतिथि डॉ गायत्री ने कहा कि खेल के माध्यम से हम अपने सहपाठियों से जुडकर उनसे मैत्री संबंध बनाते हैं। खेल मैदान के अंदर और बाहर रिश्ते बनाने में मदद करता है। खेल कौशल और व्यक्तिगत विकास में शिक्षा को भी प्रोत्साहित करता है। विशिष्ट अतिथि वीरेन्द्र तिवारी, एडवोकेट जय तिवारी और प्रियंका चतुर्वेदी ने भी संक्षिप्त विचार रखे। अंत में सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुये उपकुलपति गिरीश त्रिपाठी ने कहा कि खेल हमारी शारीरिक और मानसिक स्थिति को सुधारने का अद्वितीय माध्यम है। जब हम खेल खेलते हैंए तो हमारे शरीर की कसरत होती है।

साहित्य

कहानी

दौड़

■ डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

नौगढ़ के टूर्नामेंट की बड़ी तैयारी की गई थी. सारा नगर सुसज्जित था. स्टेशन से लेकर स्कूल तक सड़क के दोनों ओर झंडियाँ लगाई गई थीं. मोटरें खूब दौड़ रही थीं. टूर्नामेंट में पारितोषिक वितरण के लिए स्वयं कमिश्नर साहब आने वाले थे. इसीलिए शहर के सब अफसर और रईस व्यस्त थे. आज स्कूल के विस्तृत मैदान में दर्शकों की बड़ी भीड़ थी. नगरपालिका के सदस्य, सचिव, अध्यक्ष आदि सभी उपस्थित थे. दर्शकों में सेठों और साहूकारों का भी अभाव न था.

हेडमास्टर साहब तो प्रतिष्ठित लोगों का आदर-सत्कार करने में लगे हुए थे. पर इधर लड़कों में कुछ दूसरा ही जोश फैला हुआ था. यों तो कितने ही स्कूलों से लड़के आए थे, पर होड़ दो ही स्कूलों में थी ङ्क नौगढ़ और विजयगढ़. विजयलक्ष्मी भी इन्हीं दोनों के बीच में झूल रही थी. कभी वह नौगढ़ की ओर झुकती तो कभी विजयगढ़ की ओर. सभी लड़कों के हृदय धड़क रहे थे. सभी उत्सुक थे कि देखें कौन बाजी मार ले जाता है—ऊँट किस करवट बैठता है?

पहले दिन 90 मीटर की दौड़ थी. नौगढ़ के लड़कों ने विजयगढ़ को नीचा दिखा दिया. पर दूसरे दिन विजयगढ़ के लड़कों ने उसकी लाज रख ली. इसी तरह दोनों स्कूलों के नंबर बराबर थे. अब सिर्फ एक दौड़ बच गई थी. विजयमाला उसी के गले में पड़ेगी जो इसमें बढ़ जाएगा. नौगढ़ की ओर से जो लड़का दौड़ने वाला था, उसकी उम्र बीस साल थी. नाम था भुवनमोहन. बड़ा तेज दौड़ने वाला था.

विजयगढ़ की ओर से एक सत्रह वर्ष का लड़का खड़ा हुआ. वह दुबला-पतला था, पर उसके चेहरे पर बड़ी कांति थी, आँखों में तेज था. मास्टर ने उसकी पीठ ठोकी और कहा-'अब तुम्हारा ही भरोसा है.' लेकिन लड़के ने आँख तक ऊपर नहीं उठाई. मास्टर ने कुछ बातें कीं. इस पर उसने जब ध्यान नहीं दिया, तब मास्टर ने उसके एक सहपाठी को बुलाकर कहा : 'देखो, जगदानंद चिढ़ गया है. उसे समझाओ. यदि वह प्रसन्नचित्त होकर दौड़े तो मुझे जीत की पूरी आशा है. नहीं तो हम लोगों की हार है.'

वह विद्यार्थी दौड़ता हुआ जगदानंद के पास गया. उसने जगदानंद से कहा: 'यों सिर पकड़कर बैठ जाने से कैसे होगा ?' जगदानंद ने कहा : 'मेरे पीछे हाथ धोकर क्यों पड़े हो? मोहन से जाकर क्यों नहीं कहते? वह तो मास्टर साहब की नाक का बाल हो रहा है. उसी की पाँचों उंगलियाँ घी में हैं.' उस विद्यार्थी ने कहा : 'भाई, नाक कट जाएगी.' पर जगदानंद चुप रहा. उसने खूब समझाया, पर वह ज्यों का त्यों बना रहा.

इतने में भुवनमोहन उधर निकल पड़ा. उसने जगदानंद को देख कर कहा: 'अच्छा, आप हैं.' फिर उसने अपने साथी की तरफ देखकर व्यंग्य से कहा: 'भाई, अच्छों से बचकर रहना चाहिए.' जगदानंद की आँखें चमक उठीं. उसने अपने सहपाठी मित्र से कहा: 'तुम चिंता मत करो, मैं दौडूंगा.'

दौड़ शुरू हुई. पहले चक्कर में जगदानंद और भुवन साथ-साथ रहे. कोई आगे नहीं बढ़ा. पर दोनों इतनी तेजी से दौड़े कि मानो यह 90 मीटर की दौड़ हो और सब लड़के पीछे रह गए. कोई उनका साथ नहीं दे सका.

दूसरे चक्कर में जगदानंद आगे बढ़ा, परंतु भुवनमोहन उसके दो ही कदम पीछे रहा. तीसरा चक्कर अंतिम था. पहले तो जगदानंद पचास कदम आगे बढ़ गया, पर उसकी शक्ति क्षीण होने लगी. आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा. भुवनमोहन सरपट दौड़ता हुआ उसके पास पहुँच गया.जगदानंद ने उसके साथ ही साथ दौड़ने की कोशिश की पर उसके पैरों ने जवाब दे दिया. नौगढ़ के लड़के चिल्लाने लगे: ' नौगढ़. नौगढ़.' भुवनमोहन आगे बढ़ गया. 180 मीटर का फासला था.

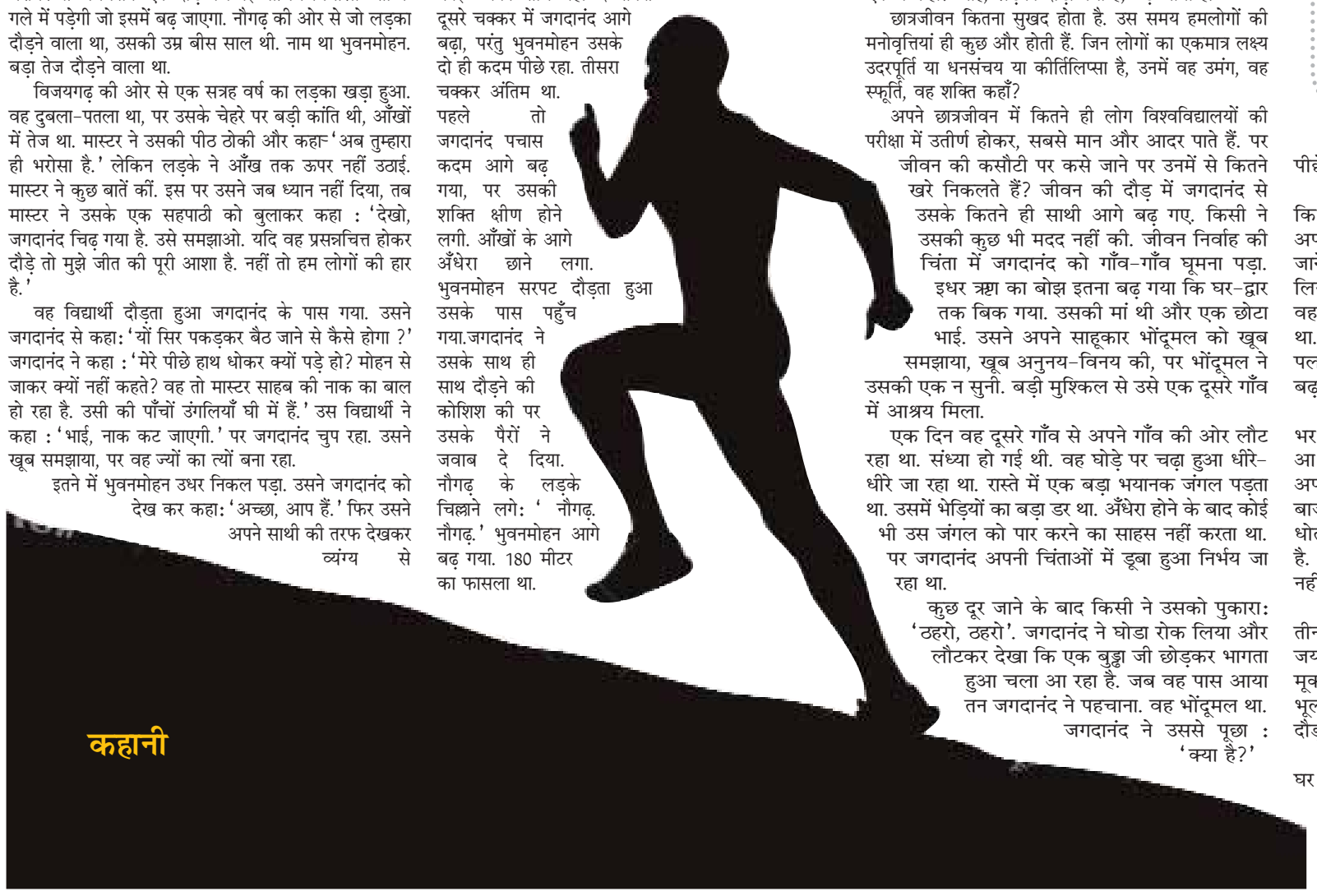

एकाएक जगदानंद ने अपना सिर उठाया. चार हज़ार आँखें उस पर जमी हुई थीं. वह फिर दौड़ने लगा. पल भर में वह भुवनमोहन के पास पहुँच गया. विजयगढ़ के लड़के चिल्लाने लगे: 'विजयगढ़. विजयगढ़.' जगदानंद आगे बढ़ता ही गया. उसकी आँखें लाल हो रही थीं. उसने कई मीटर से भुवनमोहन को नीचा दिखलाया. लड़कों ने जयध्वनि की और दर्शकों ने करतल ध्वनि. एक ने कहा: 'वाह, लड़का दौड़ा क्या है, उड़ आया है.'

छात्रजीवन कितना सुखद होता है. उस समय हमलोगों की मनोवृत्तियां ही कुछ और होती हैं. जिन लोगों का एकमात्र लक्ष्य उदरपूर्ति या धनसंचय या कीर्तिलिप्सा है, उनमें वह उमंग, वह स्फूर्ति, वह शक्ति कहाँ?

अपने छात्रजीवन में कितने ही लोग विश्वविद्यालयों की परीक्षा में उतीर्ण होकर, सबसे मान और आदर पाते हैं. पर जीवन की कसौटी पर कसे जाने पर उनमें से कितने खरे निकलते हैं? जीवन की दौड़ में जगदानंद से उसके कितने ही साथी आगे बढ़ गए. किसी ने उसकी कुछ भी मदद नहीं की. जीवन निर्वाह की चिंता में जगदानंद को गाँव-गाँव घूमना पड़ा. इधर ऋण का बोझ इतना बढ़ गया कि घर-द्वार तक बिक गया. उसकी मां थी और एक छोटा भाई. उसने अपने साहूकार भोंदूमल को खूब समझाया, खूब अनुनय-विनय की, पर भोंदूमल ने उसकी एक न सुनी. बड़ी मुश्किल से उसे एक दूसरे गाँव में आश्रय मिला.

एक दिन वह दूसरे गाँव से अपने गाँव की ओर लौट रहा था. संध्या हो गई थी. वह घोड़े पर चढ़ा हुआ धीरे-धीरे जा रहा था. रास्ते में एक बड़ा भयानक जंगल पड़ता था. उसमें भेड़ियों का बड़ा डर था. अँधेरा होने के बाद कोई भी उस जंगल को पार करने का साहस नहीं करता था. पर जगदानंद अपनी चिंताओं में डूबा हुआ निर्भय जा रहा था.

कुछ दूर जाने के बाद किसी ने उसको पुकारा: 'ठहरो, ठहरो'. जगदानंद ने घोडा रोक लिया और लौटकर देखा कि एक बुड्ढा जी छोड़कर भागता हुआ चला आ रहा है. जब वह पास आया तन जगदानंद ने पहचाना. वह भोंदूमल था. जगदानंद ने उससे पूछा : 'क्या है?'

वह विद्यार्थी दौड़ता हुआ जगदानंद के पास गया. उसने जगदानंद से कहा: 'यों सिर पकड़कर बैठ जाने से कैसे होगा ?' जगदानंद ने कहा : 'मेरे पीछे हाथ धोकर क्यों पड़े हो? मोहन से जाकर क्यों नहीं कहते? वह तो मास्टर साहब की नाक का बाल हो रहा है. उसी की पाँचों उंगलियाँ घी में हैं.' उस विद्यार्थी ने कहा : 'भाई, नाक कट जाएगी.' पर जगदानंद चुप रहा. उसने खूब समझाया, पर वह ज्यों का त्यों बना रहा. इतने में भुवनमोहन उधर निकल पड़ा. उसने जगदानंद को देख कर कहा: 'अच्छा, आप हैं.' फिर उसने अपने साथी की तरफ देखकर व्यंग्य से कहा: 'भाई, अच्छों से बचकर रहना चाहिए.' जगदानंद की आँखें चमक उठीं. उसने अपने सहपाठी मित्र से कहा: 'तुम चिंता मत करो, मैं दौडूंगा.'

उसने गिड़गिड़ा कहा : 'मेरे प्राण बचाओ. भेड़िये मेरे पीछे पड़े हैं. मुझे घोड़े पर चढ़ाकर ले चलो.'

क्षण भर के लिए जगदानंद के मन में एक बात आई कि मैं घोड़ा दौड़ाकर भाग जाऊं और यह दुष्ट यहीं अपने दुष्कर्मों का फल भोगे. पर हृदय के भीतर से न जाने किसने उसे रोका. जगदानंद ने उसे घोड़े पर चढ़ा लिया और तेज़ी से घोड़ा दौड़ाया. घोड़ा थका हुआ था. वह दो आदमियों को लेकर तेजी से नहीं दौड़ सकता था. सोच-विचार करने का अवसर नहीं था. जगदानंद ने पल भर में अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया. भेड़िये बढ़ते ही आ रहे थे. जगदानंद तुरंत घोड़े से उतर पड़ा.

घोड़ा भोंदूलाल को लेकर तेजी से चला गया. पल भर में ही अदृश्य हो गया. भेड़िये जब बिल्कुल समीप आ गए, तब जगदानंद ने दौड़ने का विचार किया. उसे अपनी पहली दौड़ का स्मरण हो आया. वह दौड़ थी बाजी के लिए और यह है प्राणरक्षा के लिए. जगदानंद ने धोती कस ली. उसने हँसकर कहा: 'यह मेरी अंतिम दौड़ है. पर मैं तुमसे दौड़ने में किसी प्रकार का लाभ उठाना नहीं चाहता. देखें कौन आगे बढ़ता है?'

भेड़िये गरजते हुए बिलकुल उसके समीप आ गए. तीन किलोमीटर तक दौड़ बराबर जारी रही. किसी ने जयध्वनि नहीं की, किसी ने ताली नहीं बजाई. केवल मूक प्रकृति यह दृश्य देखती रही. जगदानंद सब कुछ भूल गया. उसके लिए पृथ्वी अदृश्य हो गयी. वह केवल दौड़ता ही चला गया.

दूसरे दिन , रामपुर के एक किसान ने देखा कि उसके घर के सामने जगदानंद का मृत शरीर पड़ा हुआ है. उसके शरीर पर किसी तरह की चोट नहीं है, पर चेहरे पर अभी तक हँसी झलक रही है.

क्या यह विजय की हँसी थी?

अनवर शऊर

इत्तिफ़ाक़ अपनी जगह
खुश-क़िस्मती अपनी जगह

खुद बनाता है जहाँ में
आदमी अपनी जगह

कह तो सकता हूँ मगर
मजबूर कर सकता नहीं

इख्तियार अपनी जगह है
बेबसी अपनी जगह

कुछ न कुछ सच्चाई होती
है निहाँ हर बात में

कहने वाले ठीक कहते हैं
सभी अपनी जगह

सिर्फ़ उस के होंट काग़ज़
पर बना देता हूँ मैं

खुद बना लेती है होंटों पर
हँसी अपनी जगह

दोस्त कहता हूँ तुम्हें शाएर
नहीं कहता 'शुऊर'

दोस्ती अपनी जगह है
शाएरी अपनी जगह

समीक्षा

प्रज्ञान

बच्चों के लिए संवेदनात्मक रचनाएँ

प्रज्ञान, बाल साहित्यकार डॉ सत्यवान सौरभ जी की इक्यावन बाल कविताओं का सुन्दर संग्रह है। इन कविताओं में जीवन के विविध रंग देखने को मिलते हैं। इनमें प्रकृति का सौन्दर्य है तो समाज की कुरूपता भी है। जहाँ बचपन के आनंद का सजीव चित्रण है वहीं आर्थिक विवशताओं के कारण काम के बोझ तले दबे बच्चों का मर्मस्पर्शी वर्णन है। बचपन जीवन का स्वर्णिम काल होता है लेकिन सभी बच्चों का बचपन एक - सा नहीं होता। कुछ बच्चों का बचपन काल के क्रूर हाथों द्वारा मसल दिया जाता है। इस कसक की झलक इस संग्रह में देखी जा सकती है-

कागज़ पर शिक्षा मिले, वादों में बस प्यार।
बाल दिवस पर बाँटते, भाषण प्यार-दुलार।।

दो रोटी की चाह में, लूटता है संसार।
फुटपाथो पर रेंगते, झोली रहे पसार।।

बालसाहित्य में बच्चों की कोमल भावनाओं का ध्यान रखा जाता है। बच्चे मनोरंजन पसन्द करते हैं, लेकिन कवि चाहता है कि बच्चे जीवन के विषय में भी जानकारी प्राप्त करें। आसपास जो विसंगतियाँ फैली हुई हैं उनसे बच्चों को अवगत कराना भी कवि अपना धर्म समझता है। वह बच्चों की संवेदनशीलता को सम्पूर्ण समाज तक विस्तृत करना चाहता है। 'गूगल की आगोश में' कविता में कवि की यह भावप्रवण संवेदना मर्मस्पर्शी है -

छीन लिए हैं फ़ोन ने, बचपन से सब चाव।
दादी बैठी देखती, पीढ़ी में बदलाव।।
मन बातों को तरसता, समझे घर में कौन ।
दामन थामे फ़ोन का, बैठे हैं सब मौन।।

बच्चे की दुनिया माँ के आसपास घूमती है और माँ की दुनिया तो बच्चे ही होते हैं। माँ स्वयं दु:ख सहकर बच्चे को हर सुख देना चाहती है। 'माँ हरियाली दूब' एक छोटी - सी कविता है लेकिन इस कविता में कवि ने माँ की सारी ममता को गहराई के साथ उकेर दिया है -

'आँचल की छाया' कविता में माँ के त्यागमय स्वरूप के प्रति अपनी निश्छल संवेदना दर्शाता एक बच्चा कहता है -

त्याग और बलिदान का, माँ ही है प्रतिरूप।
आँचल की छाया करे, हर संकट की धूप।।
माँ जैसा संसार में, सौरभ नहीं सुजान।
माँ की वाणी में निहित , गीता का सब ज्ञान।।

कवि का मानना है कि हमें परिवर्तनों को सहज स्वीकार करना चाहिए। बड़े - बुजुर्ग लोग हर समय परिवार के लिए मजबूत स्तम्भ रहे हैं। कवि को उनका जाना पसन्द नहीं है। दादा -दादी के जाने के बाद कवि का जीवन सूना हो गया है, कवि तरह - तरह की कल्पना करता है जिससे कि हर समय उसे उनकी याद आती है। 'दादा-दादी' कविता में कवि की कल्पना की ताजगी द्रष्टव्य है -

दादा-दादी बन गए, केवल अब फरियाद।
खुशियां आँगन की करे, रह-रह उनको याद।।
रो ले, गा ले, हँस ले, दादा-दादी साथ।
ये आँगन से क्या गए, जीवन हुआ अनाथ।।

कवि की संवेदनशीलता का हाल यह है कि वह पुराने हो चुके झाड़ू में भी वृद्ध लोगों की छवि देखता है। कवि का हृदय वृद्धों की उपेक्षा से व्यथित है। 'काम लेकर फेंक देने की प्रवृत्ति', स्वार्थ और संकीर्णता पर आधारित है। वृद्धों का सम्मान करने की सीख देती कविता 'वृद्धों की हर बात का' अद्भुत है -

वृद्धों की हर बात का, रखता कौन खयाल।
आधुनिकता की आड़ में, हर घर है बेहाल।।
होते बड़े बुजुर्ग है, सारस्वत सम्मान।
मिलता इनसे ही हमें, है अनुभव का ज्ञान।।

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्रज्ञान बाल संग्रह की रचनाओं का प्रमुख स्वर मानवीय संवेदना और करुणा है। शांत नदी की तरह बहती ये कविताएँ पाठक के मन को शीतल भावों की लहरों से भिगो देती हैं।

छन्द में लिखी ये रचनाएँ गीत और कविता का मिलाजुला रूप है। इनमें लय और प्रवाह है जो इन कविताओं को प्रभावशाली बनाता है। भाषा बालमन के अनुरूप सरल, सरस और सहज बोधगम्य है। मुद्रण सुन्दर एवं त्रुटिरहित है। फैलते आकाश के साथ प्रज्ञान के मनमोहक चित्र से सजा आवरण अत्यंत आकर्षक है। बालमन को लुभाने वाले मनोरंजक एवं संवेदनशील कविताओं से सजी पठनीय कृति 'प्रज्ञान' के सृजन के लिए डॉ सत्यवान सौरभ जी को हार्दिक बधाई।

प्रज्ञान = बच्चों के लिए संवेदनात्मक रचनाएँ

■ सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'

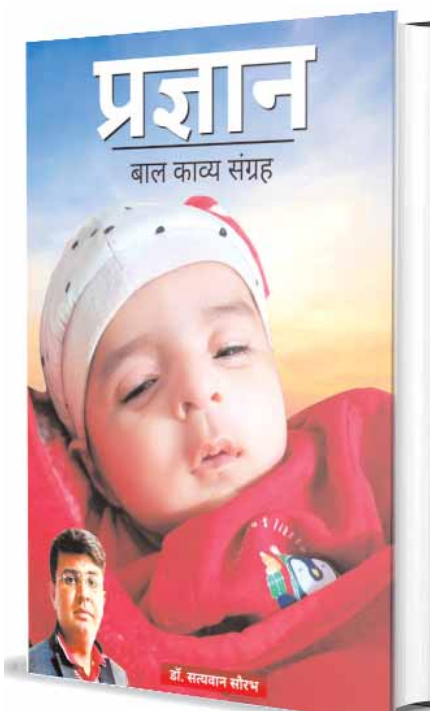

पुस्तक : प्रज्ञान
लेखक : डॉ. सत्यवान 'सौरभ'
प्रकाशक : नोशन प्रकाशन समूह, चेन्नई।
मूल्य : 160/-

लघुकथा

बुलेट ट्रेन

■ घनश्याम अग्रवाल

जैसे ही ट्रेन रवाना होने को हुई, एक औरत और उसका पति एक ट्रंक लिए डिब्बे में घुस पड़े।दरवाजे के पास ही औरत तो बैठ गई पर आदमी चिंतातुर खड़ा था।जानता था कि उसके पास जनरल टिकट है और ये रिज़र्वेशन डिब्बा है। टीसी को टिकट दिखाते उसने हाथ जोड़ दिए।

'ये जनरल टिकट है। अगले स्टेशन पर जनरल डिब्बे में चले जाना।वरना आठ सौ की रसीद बनेगी।' कह टीसी आगे चला गया।

पति-पत्नी दोनों बेटी को पहला बेटा होने पर उसे देखने जा रहे थे।सेठ ने बड़ी मुश्किल से दो दिन की छुट्टी और सात सौ रुपये एडवांस दिए थे। बीबी व लोहे की पेटी के साथ जनरल बोगी में बहुत कोशिश की पर घुस नहीं पाए थे। लाचार हो स्लिपर क्लास में आ गए थे।

'साब, बीबी और सामान के साथ जनरल डिब्बे में चढ़ नहीं सकते। हम यहीं कोने में खड़े रहेंगे। बड़ी मेहरबानी होगी।' टीसी की ओर सौ का नोट बढ़ाते हुए कहा।

'सौ में कुछ नहीं होता। आठ सौ निकालो वरना उतर जाओ।'

'आठ सौ तो गुड्डो की डिलिवरी में भी नहीं लगे साब। नाती को देखने जा रहे हैं।गरीब लोग हैं, जाने दो न साब।' अबकि बार पत्नी ने कहा।

'तो फिर ऐसा करो, चार सौ निकालो।एक की रसीद बना देता हूँ, दोनों बैठे रहो।'

'ये लो साब, रसीद रहने दो।दो सौ रुपये बढ़ाते हुए आदमी बोला।

'नहीं-नहीं रसीद दो बनानी ही पड़ेगी। देश में बुलेट ट्रेन जो आ रही है। एक लाख करोड़ का खर्च है।कहाँ से आयेगा इतना पैसा ? रसीद बना-बनाकर ही तो जमा करना है।ऊपर से आर्डर है।रसीद तो बनेगी ही।

चलो, जल्दी चार सौ निकालो। वरना स्टेशन आ रहा है, उतरकर जनरल बोगी में चले जाओ।' इस बार कुछ डांटते हुए टीसी बोला।

आदमी ने चार सौ रुपए ऐसे दिए मानो अपना कलेजा निकालकर दे रहा हो। टीसी रसीद बनाने लगा। पास ही खड़े दो यात्री बतिया रहे थे। 'ये बुलेट ट्रेन क्या बला है ?'

'बला नहीं जादू है जादू। बिना पासपोर्ट के जापान की सैर।जमीन पर चलने वाला हवाई जहाज है। बिना रिजर्वेशन उसे देख भी लो तो चालान हो जाएगा। एक लाख करोड़ का प्रोजेक्ट

है। राजा हरिश्चंद्र को भी ठेका मिले तो बिना एक पैसा खाये खाते में करोड़ों जमा हो जाए।

सुना है, 'अच्छे दिन' इसी ट्रेन में बैठकर आनेवाले हैं।'

उनकी इन बातों पर आसपास के लोग मजा ले रहे थे। मगर वे दोनों पति-पत्नी उदास रुआंसे ऐसे बैठे थे मानो नाती के पैदा होने पर नहीं उसके सोग में जा रहे हो।कैसे एडजस्ट करेंगे ये चार सौ रुपए? क्या वापसी की टिकट के लिए समधी से पैसे मांगना होगा? नहीं-नहीं। आखिर में पति बोला- 'सौ- डेढ़ सौ तो मैं जियादा लाया ही था। गुड्डो के घर पैदल ही चलेंगे।शाम को खाना नहीं खायेंगे। दो सौ तो एडजस्ट हो गए। और हाँ, आते वक्त पैसिंजर से आयेंगे। सौ रूपए बचेंगे। एक दिन जरूर ज्यादा लगेगा।सेठ भी चिल्लायेगा। मगर मुन्ने के लिए सब सह लूंगा।मगर फिर भी ये तो तीन सौ ही हुए।'

'ऐसा करते हैं, नाना-नानी की तरफ से जो हम सौ-सौ देनेवाले थे न, अब दोनों मिलकर सौ देंगे। हम अलग थोड़े ही हैं। हो गए न चार सौ एडजस्ट।' पत्नी के कहा। 'मगर मुन्ने के कम करना....'

और पति की आँख छलक पड़ी।

'मन क्यूँ भारी करते हो जी।गुड्डो जब मुन्ना को लेकर घर आयेंगी; तब दो सौ ज्यादा दे देंगे।' कहते हुए उसकी आँख भी छलक उठी।

फिर आँख पोंछते हुए बोली-'अगर मुझे कहीं मोदीजी मिले तो कहूंगी-' इतने पैसों की बुलेट ट्रेन चलाने के बजाय, इतने पैसों से हर ट्रेन में चार-चार जनरल बोगी लगा दो, जिससे न तो हम जैसों को टिकट होते हुए भी जलील होना पड़े और ना ही हमारे मुन्ने के सौ रुपये कम हो।' उसकी आँख फिर छलके पड़ी।

'अरी पगली, हम गरीब आदमी हैं, हमें मोदीजी को वोट देने का तो अधिकतर है, पर सलाह देने का नहीं। रो मत। देखना, हमारा मुन्ना इतना बड़ा आदमी बनेगा, इतना बड़ा कि एक दिन बुलेट ट्रेन में बैठेगा।'

'हाँ-हाँ क्यों नही बैठेगा? जरूर बैठेगा। सौ रुपये भरकर अभी से टिकट जो बुक करा लिया उसने।' कहकर वह फक-से हँस पड़ी।

ट्रेन तेजी से भागी जा रही थी। वे दोनों अब ऐसे खुश थे मानो 'बुलेट ट्रेन' में सफर कर रहे हों।

मुख्यमंत्री ने प्राध्यापकों और विद्यार्थियों से किया संवाद

देश के विकास का आधार बनेगी नई शिक्षा नीति

डॉ. यादव ने किया एमवीएम कॉलेज का निरीक्षण

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री उत्कृष्टता महाविद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करेंगे। हर जिले में जिला महाविद्यालयों का प्रधानमंत्री उत्कृष्टता महाविद्यालय के रूप में उन्नयन किया जाएगा। इन महाविद्यालयों को सर्वसुविधायुक्त बनाया जाएगा। मुख्यमंत्री बनने के बाद पहली बार मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय में पहुंचे डॉ. यादव ने यह बात यहां विद्यार्थियों और प्राध्यापकों से संवाद के दौरान कही।

उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री उत्कृष्टता महाविद्यालयों में सभी संकायों से सबंधित कोर्स संचालित किए जाएंगे। विद्यार्थियों के लिए सर्व सुविधायुक्त कक्षाएं, खेल मैदान, ऑडिटोरियम, प्लेसमेंट सेल, ट्रेनिंग सेंटर आदि की सुविधा होगी। डॉ. यादव ने कहा कि नई शिक्षा नीति को क्रियान्वित करने में मध्यप्रदेश अग्रणी रहा है। इस नीति के अनुसार महाविद्यालयीन शिक्षा के साथ वोकेशनल सब्जेक्ट, व्यक्तित्व विकास, योग शिक्षा और संगीत सहित विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाएगी। योग्य प्राध्यापक और प्रशिक्षक की नियुक्ति की जाएगी। मुख्यमंत्री ने एमवीएम कॉलेज की भूविज्ञान प्रयोगशाला के नमूनों को देखा और जानकारी प्राप्त की। उन्होंने प्रयोगशाला के रखरखाव संबंधी आवश्यक निर्देश भी दिए। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा के. सी. गुप्ता, प्रभारी प्राचार्य एमवीएम कॉलेज डॉ. गीता मोदी सहित बड़ी संख्या में प्राध्यापक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने पूछे सवाल ....

संवाद के दौरान मुख्यमंत्री ने प्राध्यापकों और विद्यार्थियों से नई शिक्षा नीति, डिजि लाकर, जैसे विषयों पर संवाद किया।

मुख्यमंत्री – नई शिक्षा नीति में विद्यार्थियों के विकास के लिए क्या क्या प्रावधान है?

प्राध्यापक – नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों के समेकित विकास पर केंद्रित है। इसमें विद्यार्थियों को संकाय के विषय के साथ उद्यमिता, योग, कला संकाय के विषय, संगीत भी संवाद, ग्रुप डिस्कशन और विचार मंथन आदि माध्यमों से पढ़ाया जाता है।

मुख्यमंत्री- लोकरंग में क्या अनुभव किया?

विद्यार्थी- लोकरंग में जनजातीय संस्कृति को करीब से जानने और समझने का अवसर मिला। किताबों की दुनिया से बाहर निकलकर जनजातीय संस्कृति को महसूस करने का यह पहला अवसर मिला।

मुख्यमंत्री- डिजि लाकर के बारे में क्या जानते हैं?

विद्यार्थी- मंत्री परिषद ने छात्रों की डिग्री/मार्कशीट भी डिजि लाकर में अपलोड करने का निर्णय लिया है। डिजि लाकर में डिग्री/मार्कशीट वेरिफाइड डॉक्यूमेंट होंगे।

भाजपा के वरिष्ठ नेता अलग-अलग स्थानों से यात्रा में होंगे शामिल

विकसित भारत संकल्प यात्रा से पूरी होंगी प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी

भोपाल, देशबन्धु। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विकास, गरीब कल्याण और जनहितकारी योजनाओं के साथ प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने हेतु विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ शनिवार 16 दिसंबर 2023 को उज्जैन के दशहरा मैदान से किया जा रहा है। यात्रा के शुभारंभ अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समारोह को वर्चुअली संबोधित कर हितग्राहियों से संवाद करेंगे। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने बताया कि इस यात्रा का शुभारंभ प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के द्वारा किया जाएगा। शनिवार 16 दिसंबर को उज्जैन से प्रारंभ हो रही इस यात्रा में पार्टी के वरिष्ठ नेतागण प्रदेश के अलग-अलग स्थानों से शामिल होंगे। विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान जनहितकारी एवं कल्याणकारी योजनाओं को केंद्र की 366 आईसीसी वैनों के द्वारा घर-घर पहुंचाया जाएगा।

पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष शर्मा ने कहा कि यात्रा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी के साथ केन्द्र सरकार की जनहितैषी योजनाओं के बारे में जागरूकता सुनिश्चित करने और समाज के अंतिम व्यक्ति तक योजना को पहुंचाने के उद्देश्य से विकसित भारत संकल्प यात्रा आरंभ की जा रही है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष शर्मा ने कहा कि बिना किसी भेदभाव के पूरी पारदर्शिता के साथ योजनाओं का लाभ लक्षित व्यक्ति तक पहुंचाना हमारा लक्ष्य है। इसके लिए पार्टी के सभी पदाधिकारी व कार्यकर्ता सहभागिता कर यात्रा को सफल बनाने के लिए अपना योगदान दें।

इन्हें सौंपी जिम्मेदारी

विकसित भारत संकल्प यात्रा को पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा पन्ना, प्रदेश के उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला रीवा, केन्द्रीय मंत्री वीरेन्द्र खटीक छतरपुर, पूर्व केन्द्रीय मंत्री व विधायक प्रहलाद पटेल नरसिंहपुर, प्रदेश महामंत्री रणवीर सिंह रावत शिवपुरी, प्रदेश कार्यालय प्रभारी व विधायक भगवानदास सबनानी भोपाल, सांसद सुधीर गुप्ता मंदसौर, महेन्द्र सिंह सोलंकी शाजापुर, गणेश सिंह सतना, के.पी.यादव अशोकनगर, गुमान सिंह डामोर झाबुआ, श्रीमती संध्या राय भिण्ड, विवेक नारायण शेजवलकर ग्वालियर, शंकर लालवानी इंदौर, राजबहादुर सिंह सागर, जनार्दन मिश्रा रीवा, पूर्व मंत्री व विधायक तुलसी सिलावट इंदौर, प्रद्युम्न सिंह तोमर ग्वालियर तथा विधायक श्रीमती रीति पाठक सीधी से हरी झंडी दिखायेंगी।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने ग्वालियर मामले में प्रभावित छात्रों के अभिभावकों को मदद का दिया भरोसा, कहा-

कुलपति को अस्पताल पहुंचाने वाले छात्रों की मंशा अपराधिक नहीं मानवतावादी थी

भोपाल, देशबन्धु। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने ग्वालियर रेलवे स्टेशन पर एक निजी विश्वविद्यालय के कुलपति को अस्पताल पहुंचाने के लिए वाहन ले जाने के मामले में छात्रों को आरोपी बनाए जाने के मामले पर संज्ञान लिया है। प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने छात्र एवं उनके अभिभावकों को हर संभव मदद का आश्वासन दिया है। श्री शर्मा ने कहा कि निजी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रणजीत सिंह जो दिल्ली से झांसी जा रहे थे, उनका अचानक स्वास्थ्य खराब हो गया। उनके बिगड़ते स्वास्थ्य को देखते हुए मानवीयता के आधार पर छात्रों ने ग्वालियर रेल्वे स्टेशन पर आनन-फानन में उन्हें उतारा और समय पर अस्पताल पहुंचाने के लिए रेलवे स्टेशन के बाहर खड़ी न्यायाधीश की कार का उपयोग किया, ताकि कुलपति को जल्द से जल्द स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें। हालांकि कुलपति प्रो. रणजीत सिंह की जान नहीं बचाई जा सकी, उन्होंने अस्पताल में दम तोड़ दिया। इस पूरे मामले में कुलपति की सहायता करने वाले छात्रों पर गंभीर धाराओं के अंतर्गत प्रकरण दर्ज किया गया। श्री शर्मा ने कहा कि दोनों छात्रों ने मानवीय आधार पर कुलपति की जान बचाने के लिए हर संभव प्रयास किए, छात्रों का उद्देश्य मानवतावादी था। श्री शर्मा ने छात्रों के परिजनों को भरोसा दिलाया है कि उन पर दर्ज प्रकरण को लेकर मानवता के आधार पर हर संभव मदद की जाएगी। छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए उन पर दर्ज प्रकरण को वापस कराने के लिए हर स्तर पर प्रयास किया जाएगा। श्री शर्मा ने अभिभावकों को आश्वासन दिया कि छात्रों के भविष्य को देखते हुए जल्द से जल्द मामले को सुलझाने की कोशिश की जाएगी।

कुलपति की जान बचाने के प्रयास में छात्रों से अज्ञानतावश हुआ अपराध

उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को शिवराज ने लिखा पत्र

छात्रों को माफ करें मी लार्ड...

भोपाल, देशबन्धु। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिखा है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि 'माफ करें मिलार्ड ...'। दरअसल श्री चौहान ने इस पत्र के माध्यम में मुख्य न्यायाधीश से उच्च न्यायालय के जज की कार छीनने वाले छात्रों के बचाव में अपील की है।

पुलिस ने इस मामले में डकैती की धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है, इन छात्रों पर जज की कार छीनने का आरोप है। जज की कार छीनने वाले अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के दोनों कार्यकर्ता वर्तमान में जेल में हैं, न्यायालय ने उनकी जमानत याचिका को ये कहकर ख़ारिज कर दिया कि किसी की मदद करने के लिए कार को जबरज छीनकर ले जाना उचित नहीं है। छात्रों की रिहाई की मांग को लेकर विद्यार्थी परिषद आंदोलन कर रही है और नरमी बरतने की मांग कर रही है। उधर अब पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने भी मप्र उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिखकर दोनों छात्रों को क्षमा करने का अनुरोध किया है।

उन्होंने मुरैना से ग्वालियर तक घटे पूरे घटनाक्रम का जिक्र पत्र में किया है और कहा है कि दोनों छात्र हिमांशु और सुकृत ने जो किया उसमें उनकी भावना कुलपति की किसी भी स्थिति में जान बचाना था। उन्होंने कहा कि चूंकि ये अपराध मानवीय आधार पर किसी की जान बचाने के अभिप्राय से किया गया है इसलिए उनका यह कृत्य क्षमा योग्य है।

महिलाओं के सम्मान और अधिकारों की लड़ाई लड़ेगी कांग्रेस : विभा

भोपाल, देशबन्धु। महिला कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष विभा पटेल ने महिला कांग्रेस की पदाधिकारियों से आव्हान किया है कि वे लोकसभा चुनाव की तैयारियों में जुट जाएं। यह बात उन्होंने भोपाल और विदिशा जिले की महिला कांग्रेस पदाधिकारियों और जिला अध्यक्षों की बैठक को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि महिला कांग्रेस पूरी ताकत के साथ मैदान में आएगी और महिलाओं के सम्मान और उनके अधिकारों के लिए सदन से सड़क तक लड़ाई लड़ेगी।

श्रीमती पटेल ने भाजपा की जीत पर सवाल उठाते हुए कहा कि इस अप्रत्याशित निर्णय से जनता हतप्रभ है, क्योंकि जनता का स्पष्ट रूख कांग्रेस की सरकार बनाने के लिए एकतरफा था। श्रीमती पटेल ने कहा कि प्रदेश की नवनिर्वाचित सरकार से उम्मीद है कि वह महिलाओं का सम्मान और उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के लिए सशक्त कदम उठाएगी। बैठक में लोकसभा चुनाव में महिला कांग्रेस की भूमिका को लेकर रणनीति पर चर्चा हुई।

बैठक में राजलक्ष्मी नायक प्रतिभा तोमर, राशिदा मुस्तफा, गीता जाटव, श्वेता पटेरिया, कुसुम पाल, ज्योति पदम, वैशाली, रजनी दुबे, शीला भारती सहित महिला कांग्रेस की अन्य महिला नेत्रिया पदाधिकारी उपस्थित थीं।

कांग्रेसजनों ने किया सरदार पटेल का पुण्य स्मरण

भोपाल, देशबन्धु। देश के प्रथम गृह मंत्री स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लौह पुरुष स्व. सरदार वल्लभ भाई पटेल की 73 वीं पुण्य तिथि पर कांग्रेसजनों ने उनका पुण्य स्मरण किया। कांग्रेसजनों ने प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय के सभागार में उनके चित्र पर माल्यार्पण कर उनका पुण्य स्मरण किया। इसके पहले कांग्रेसजनों ने वल्लभ भवन स्थित लौह पुरूष की प्रतिमा पर माल्यार्पण और पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

इस दौरान प्रदेश कांग्रेस के उपाध्यक्ष प्रकाश जैन ने कहा कि बारडोली सत्याग्रह का नेतृत्व कर रहे श्री पटेल को सत्याग्रह की मिली सफलता पर वहां की महिलाओं ने उन्हें सरदार की उपाधि प्रदान की। आजादी के बाद विभिन्न रियासतों में बिखरे भारत के भू-राजनीतिक एकीकरण में केन्द्रीय भूमिका निभाने के लिए पटेल को लौह पुरूष भी कहा जाता है। उन्होंने भारत के पहले उप-प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। वे एक भारतीय अधिवक्ता और राजनेता थे, जो कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता और भारतीय गणराज्य के संस्थापक थे, जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए देश के संघर्ष में अग्रणी भूमिका निभाई और एक एकीकृत, स्वतंत्र राष्ट्र में अपने एकीकरण का मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता और कार्यक्रम समन्वयक आनंद तारण, भोपाल जिला शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रवीण सक्सेना, अनीस खान गुड्डू, मुजफ्फर अली, अभिषेक शर्मा सहित अन्य कांग्रेसजन उपस्थित थे।

नागपुर से लोस चुनाव का शंखनाद करेगी कांग्रेस

- 28 दिसम्बर को करेगी बड़ी रैली
- राहुल, प्रियंका गांधी व खड़गे करेंगे रैली में शिरकत

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस 28 दिसम्बर को अपना 139वां स्थापना दिवस समारोह नागपुर में आयोजित करने जा रही है। इस अवसर पर पार्टी नागपुर में एक बड़ी रैली का आयोजन भी करेगी, जिसमें पार्टी के सभी वरिष्ठ नेता शिरकत करेंगे। माना जा रहा है कि इस रैली से कांग्रेस लोकसभा चुनाव-2024 का शंखनाद भी करेगी।

कांग्रेस पार्टी के महासचिव केसी वेणुगोपाल ने कहा कि स्थापना दिवस पर आयोजित होने वाली रैली में राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी भी शामिल होंगी। इसमें करीब 10 लाख से ज्यादा लोगों के शिरकत करेंगे। इस बीच वेणुगोपाल ने 13 दिसम्बर को संसद सुरक्षा चूक मामले पर भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि संसद पर दो बार हमला हुआ है। दोनों बार यह हमला तब हुआ जब केंद्र में भाजपा की सरकार रही। उन्होंने यह भी कहा कि पूरे देश को पता है कि संसद के भीतर क्या हो रहा है। कांग्रेस नेता ने यह भी सवाल किया कि भाजपा सांसद प्रताप सिम्हा पर कार्रवाई क्यों नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के शासन से जनता परेशान हो गई है।

लैंगिक समानता यथार्थवादी होनी चाहिए : उच्च न्यायालय

कोच्चि, एजेंसी। केरल उच्च न्यायालय ने गर्भावस्था और मातृत्व के कारण महिलाओं को होने वाले नुकसान पर गौर करने के लिए लैंगिक अंतर से निपटने की जरूरत को रेखांकित किया है।

अदालत ने ये टिप्पणी एमडी रेडियो डायग्नोसिस की पढ़ाई कर रही दो महिला डॉक्टरों द्वारा दायर याचिका पर गौर करते हुए की, जिन्हें मातृत्व अवकाश के कारण अपने अनिवार्य सीनियर रेजीडेंसी कोर्स को पूरा करने में देरी का सामना करना पड़ा था। उच्च न्यायालय ने कहा, लैंगिक समानता यथार्थवादी होनी चाहिए। लिंग भेद की खाई को पाटने के लिए परिस्थितिजन्य विश्लेषण जरूरी है। यदि स्थितिजन्य वास्तविकता पर प्रतिक्रिया नहीं दी जाती है, तो यह जैविक कारकों के कारण अवसर से वंचित करने का कारण बन सकता है। पुरुष और महिलाएं प्रजनन का हिस्सा हैं, लेकिन पुरुषों को गर्भ धारण करने का कोई बोझ नहीं होने का फायदा है और वे सार्वजनिक नियुक्तियों में महिलाओं से आगे निकल सकते हैं। महिलाओं को गर्भ धारण करने के नुकसान का सामना करना पड़ता है क्योंकि गर्भावस्था की अवधि का उसे नुकसान हो सकता है। इसमें आगे कहा गया है कि मातृत्व जटिल नुकसान का कारण बन सकता है, जिससे संभावित रूप से लिंग अंतर पैदा हो सकता है। अदालत ने कहा, मातृत्व भी जटिल नुकसान पैदा करता है। इसके परिणामस्वरूप लिंग अंतर हो सकता है। मातृत्व के कारण होने वाले नुकसान पर विचार न करने से भेदभाव होगा।

हालाँकि, इसने मातृत्व को एक बोझ के रूप में देखने को खारिज कर दिया और बाधाओं को दूर करने की वकालत की, जिससे महिलाएं सार्वजनिक नौकरियों के नियमों में पुरुषों के साथ समान रूप से प्रतिस्पर्धा कर सकें।

पहाड़ों पर बर्फबारी से मैदानों में सर्दी बढ़ी

दिल्ली में पारा 5 डिग्री, शिमला से ज्यादा ठंड

- मध्य प्रदेश-राजस्थान में न्यूनतम तापमान सात डिग्री
- दिल्ली में शुक्रवार रहा मौसम का सबसे ठंडा दिन

नई दिल्ली, देशबन्धु। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में बीते कुछ दिनों से जारी बर्फबारी के चलते पंजाब, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान सहित अन्य राज्यों में ठंड बढ़ गई है। दिल्ली में शुक्रवार को सीजन का सबसे ठंडा दिन रहा। यहां न्यूनतम तापमान 4.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दिल्ली में शिमला से भी ज्यादा ठंड है। शिमला में शुक्रवार को न्यूनतम तापमान 6.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विभाग के मुताबिक, हरियाणा का हिसार भारत के मैदानी इलाकों में सबसे ज्यादा ठंडा रहा। यहां न्यूनतम तापमान 4.2 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचा। भारत के अधिकांश हिस्सों में ठंड के कारण विजिबिलिटी 500 मीटर से भी कम रही। मप्र-राजस्थान के कई इलाकों में न्यूनतम तापमान 7 डिग्री से कम रहा। छत्तीसगढ़ के सरगुजा में ओस जम गई। मौसम विभाग ने कहा कि हरियाणा, चंडीगढ़, यूपी, एमपी, बिहार,असम, मेघालय, उत्तरी राजस्थान और त्रिपुरा में भी मध्यम स्तर का कोहरा छाया रहा। दिल्ली में अगले चार दिन तक हल्का कोहरा छाए रहने का अनुमान है। इस सप्ताह के दौरान इन सभी इलाकों के तापमान में कोई महत्वपूर्ण बदलाव की उम्मीद नहीं है। हालांकि, अगले सप्ताह से देश के कुछ हिस्सों में न्यूनतम तापमान में गिरावट की उम्मीद है। सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के मुताबिक, दिल्ली में 14 दिसम्बर को एक्यूआई बहुत खराब (326) रहा। शुक्रवार में सुधार हुआ है। जिससे यह बहुत खराब से खराब की लिस्ट में आ गया है। बता दें कि 0 और 50 के बीच एक्यूआई को अच्छा, 51 और 100 के बीच संतोषजनक, 101 और 200 के बीच हल्का, 201 और 300 के बीच खराब, 301 और 400 के बीच बहुत खराब और 401 और 500 के बीच गंभीर माना जाता है।

दिल्ली-पंजाब में घना कोहरा

मौसम विभाग के मुताबिक, शुक्रवार को दिल्ली के लोधी रोड, आयानगर, कर्तव्य पथ सहित कई इलाकों में घना कोहरा भी छाया रहा। पंजाब के अमृतसर में भी घने कोहरे की चादर छाई रही। यहां पर मिनिमम टेम्प्रेचर 6 डिग्री सेल्सियस रहा। कोल्ड वेव के चलते अमृतसर में जगह-जगह अलाव जल रहे हैं।

तनी बादलों की चादर, मौसम में घुली ठंडक, लुढ़का तापमान

सड़कों पर पसरा सन्नाटा, बाजारों की रौनक पर पड़ने लगा असर, पारा 8.5 डिग्री पहुंचा

टीकमगढ़, देशबन्धु। मौसम के मिजाज ठंडे होते नजर आने लगे हैं। मौसम में घुली ठंडक और सर्द हवाओं ने लोगों के गर्म कपड़े निकलवा दिए हैं। एक ओर शादियों के मौसम में शहनाईयों की गूंज बनी हुई है, वहीं मौसम के बदल मिजाजों ने विवाह घरों में आने वालों की हालत पतली कर दी है। मौसम में घुली ठंडक के चलते बाजारों की रौनक भी जल्दी शांति होने लगी है। सड़कों पर सन्नाटा भी जल्दी पसरने लगा है। बताया गया है कि जिले में बीते तीन दिनों से रात के तापमान में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है। गुरुवार रात न्यूनतम तापमान 8.5 रिकार्ड किया गया। जो अब तक का सबसे कम तापमान दर्ज किया गया है। कृषि महाविद्यालय के मौसम विभाग से मिली जानकारी के अनुसार आगामी 48 घंटे में रात के तापमान में अधिक गिरावट दर्ज होने का अनुमान लगाया गया है। पिछले 1 सप्ताह से दिन में धूप निकलने से अधिकतम तापमान में बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। सोमवार को दिन का तापमान 26.5 और रात का तापमान 9. 8 रिकार्ड किया गया था। मंगलवार को दिन का तापमान 24.02 और रात का तापमान 11 डिग्री रहा। बुधवार को दिन का तापमान 24.5 और रात का तापमान 9.8 रिकार्ड किया गया। गुरुवार को दिन का तापमान 26.5 और रात का तापमान 9.6 रिकार्ड किया गया है। कृषि कॉलेज के मौसम विभाग के अनुसार गुरुवार रात अब तक का सबसे कम 8.5 तापमान रिकार्ड किया गया है। इसके अलावा आगामी दो दिनों में रात के तापमान में और अधिक गिरावट होने की संभावना व्यक्त की जा रही है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में 2 सौ शिक्षकों को दिया गया मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण

भोपाल, देशबन्धु। जनजातीय कार्य विभाग द्वारा श्यामला हिल्स स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में शिक्षकों को मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण दिया गया। इसमें 8 विभिन्न बैच में गणित, भौतिकी, जीव विज्ञान, विज्ञान, रसायन विज्ञान और अंग्रेजी के शिक्षकों को 4 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण प्रदान किया गया। सी.बी.एस.ई. की मूल्यांकन पद्धति एवं शिक्षाशास्त्र विषय पर आयोजित इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों से लगभग 200 शिक्षकों ने हिस्सा लिया। विभाग द्वारा संचालित एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय, कन्या शिक्षा परिसर, आदर्श आवासीय विद्यालय, सी.एम. राइज विद्यालय एवं ज्ञानोदय विद्यालय के 9वीं से 12वीं कक्षा के शिक्षक इस प्रशिक्षण में शामिल हुए।

प्रथम पृष्ठ का शेष

भारत जोड़ो यात्रा का दूसरे.... कार्यक्रम की तैयारी और उसे दुरुस्त करने के लिए चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर भारत की पहाड़ी और ठंड की स्थिति को देखते हुए यात्रा की योजना में कई चीजें शामिल हैं। सूत्र ने यह भी कहा कि यात्रा के दौरान पूरे रास्ते के शहरों और गांवों में कई नुक्कड़ और सार्वजनिक बैठकें होंगी। भारत जोड़ो यात्रा पिछले साल 7 सितंबर को तमिलनाडु के कन्याकुमारी से शुरू हुई और केरल, कर्नाटक, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेशों दिल्ली और जम्मू-कश्मीर से होकर गुजरी। यात्रा 30 जनवरी को श्रीनगर में संपन्न हुई। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आगे बढ़कर यात्रा का नेतृत्व किया और कई सार्वजनिक बैठकों को संबोधित किया और यात्रा के दौरान समाज के कई समूहों से भी मुलाकात की।

संसद में हुई घटना का.... है देश का सबसे बड़ा और ज्वलन्त मुद्दा बेरोजगारी। उन्होंने कहा, संसद सुरक्षा में हुई घटना के पीछे सबसे बड़ा कारण बेरोजगारी और महंगाई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों के कारण युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा है।

कांग्रेस कल से एकत्रित करेगी.... को अपने ऑनलाइन क्राउडफंडिंग अभियान, 'डोनेट फॉर देश' के लॉन्च की घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है। यह पहल 1920-21 में महात्मा गांधी के ऐतिहासिक तिलक स्वराज कोष से प्रेरित है और इसका उद्देश्य एक श्रेष्ठ भारत बनाने में हमारी पार्टी को सशक्त बनाना है।

लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन विभाग

45 ए, अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन (आफिस)0755-2597290/ 2765205
ईमेल info-pamd@mp.gov.in वेबसाइट www.pam.mp.gov.in
NIT No. 2402/MPSAMC/PAM/465/2023 date 13.12.2023

निविदा आमंत्रण (द्वितीय)

राजस्व विभाग की भूमि, ग्राम चाका जिला कटनी, म. प्र.

लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन विभाग म.प्र. शासन अंतर्गत म.प्र. राज्य परिसम्पत्ति प्रबंधन कम्पनी लि. भोपाल (म.प्र.रा.प.प्र. कं.लि.), द्वारा राजस्व विभाग की भूमि, ग्राम चाका जिला कटनी, मध्य प्रदेश स्थित परिसम्पत्ति की बिक्री 'जहां है जिस स्थिति में है' के आधार पर ई-निविदा कम नीलामी की बोली आमंत्रित की जाती है। परियोजना की विस्तृत जानकारी, ज्ञापन एवं संबंधित नियम तथा शर्तें एम.पी. ई-टेंडर पोर्टल www.mptenders.gov.in पर 'Madhya Pradesh State Asset Management Company Ltd.' के अंतर्गत उपलब्ध हैं।

स. क्र.	विवरण	राशि/तिथि/विस्तृत
1	भूमिक्षेत्र	1900 वर्ग मीटर
2	रिजर्व मूल्य	रु. 0.78 करोड (रुपये अठहत्तर लाख मात्र)
3	निविदा जारी / बिड डाक्यूमेंट प्रारंभ एवं अंतिम दिनांक	18 दिसंबर 2023 से 03 जनवरी 2024 वेबसाइट www.mptenders.gov.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
4	अन्य विवरण / प्रश्न प्राप्त होने की अंतिम तिथि	29 दिसंबर 2023 समय 11.00 बजे ई-मेल:- info-pamd@mp.gov.in
5	परिसम्पत्ति पर स्थल भ्रमण के लिए प्री-बिड कॉन्फ्रेंस एवं सहूलियत	29 दिसंबर 2023 स्थल पर - 12.00 से 14.00 बजे
6	बिड जमा करने की प्रारंभ तिथि एवं समय	19 दिसंबर 2023 समय 11.00 बजे
7	बिड जमा करने की अंतिम तिथि एवं समय	03 जनवरी 2024 समय 11.00 बजे
8	बिड खोलने की तिथि एवं समय (तकनीकी)	04 जनवरी 2024 समय 11.00 बजे
9	ई-नीलामी प्रारंभ दिनांक एवं समय	04 जनवरी 2024 समय 15.30 बजे
10	ई-नीलामी समाप्ति दिनांक एवं समय	04 जनवरी 2024 समय 17.30 बजे
11	बिड खोलने की तिथि एवं समय (वित्तीय)	ई-नीलामी पूर्ण उपरांत
12	बिड डाक्यूमेंट की कीमत (गेटवे और सर्विस चार्ज छोड़कर)	रु.20,000/- (रुपये बीस हजार मात्र) वेबसाइट www.mptenders.gov.in पर ऑनलाइन देय

भविष्य में कोई शुद्धिपत्र उपरोक्त वेबसाइट पर ही अपलोड किया जावेगा। अगर इस बिड के बारे में किसी भी गतिविधि के लिए निर्धारित कार्यक्रम में उल्लेखित किसी भी तारीख को म.प्र. शासन द्वारा अवकाश घोषित किया जाता है, तो वह तिथि आगामी कार्य दिवस में स्थानांतरित हो जावेगी ।

म.प्र.रा.प.प्र.कं.लि. को किसी भी निविदा को स्वीकृत या अस्वीकृत करने या समस्त निविदाओं को बिना कारण बताये अस्वीकृत करने का अधिकार होगा।

उपसचिव
मध्यप्रदेश शासन
लोक परिसंपत्ति प्रबंधन विभाग, भोपाल

जी-21762/23

अधिकारियों के चश्मे पर चढ़ी भ्रष्टाचार की धूल, नजर नहीं आती गरीबों की परेशानी

- छत तो मिली नहीं और गरीबो ने तोड़ दिया अपना आशियाना
- ठंड में टूटे मकानों पर पन्नी के सहारे रात बिताने मजबूर

टीकमगढ़ देशबन्धु। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत पात्र परिवारों को किस्तें नहीं मिल रही है। शासन के भरोसे सैकड़ों परिवारों ने आशियाने बनाने के लिए हिम्मत जुटाकर अपने कच्चे घर तुड़वा दिए थे। प्रधानमंत्री आवास की पहली किस्त से दूसरी और आखिरी किस्त ना मिलने के चक्कर में पिछले 6 साल से हितग्राहियों के आशियाने अधूरे पड़े हैं। पीएम आवास की प्रथम, दूसरी और आखिरी किस्त कब मिलेगी, इसका जवाब भी किसी के पास नहीं है। नगर परिषद खरगापुर के पात्र हितग्राहियों के प्रधानमंत्री आवास लेंटर लेबिल से लेकर आवास का निर्माण पूर्ण होने के बावजूद भी पहली किस्त से दूसरी किस्त नहीं डाली गई है। यहां तक कि ऐसे कई हितग्राहियों के आवास स्वीकृत होने के बाद भी पहली किस्त का इंतजार कर रहे हैं। आपको बता दें कि प्रधानमंत्री आवास के हितग्राहियों कहना है कि नगर परिषद के जनप्रतिनिधि और उपयंत्री की मनमानी के चलते आवास की किस्तें उन्हीं हितग्राहियों की डाली जाती है, जिनसे सुविधा शुल्क मिलने के बाद ही किस्तें डाली जा रही है। यहां तक कि जिन हितग्राहियों से सुविधा शुल्क ने मिलने से उनके नाम नोट सीट से हटा देते है। इसमें आवास के सुविधा शुल्क लेने एजिस कर्मचारी पीछे नहीं है। कुछ हितग्राहियों के बगैर जियो टेकिंग के ही अपात्र

और सरकारी भूमियों पर आवास की किस्तें डाली जा चुकी है। बताया गया है कि वार्ड क्रमांक. 12 श्रीमति कोशिल्या साहू ने बताया कि पति के नाम से आवास मिला। जिसकी किस्त एक लाख रुपये खाते में आई, जिससे आवास का निर्माण लेंटर तक दिवारें बनाई जा चुकी है। दूसरी किस्त न मिलने से पन्नी के सहारे बच्चों के साथ रात बिताना पड़ती है। वहीं आवास की दूसरी किस्त डलवाने के लिए पांच हजार रुपए मांग रहे हैं। उसी के बाद ही किस्त मिलेगी। वार्ड क्रमांक-11 घनश्याम कुशवाहा का नाम प्रधानमंत्री आवास के लिए आया। जिसने पुराना कच्चा घर तोड़कर नया मकान बना कर तैयार कर लिया है, जिसका छत डलना है। इसमें दूसरी किस्त के लिए 6 महीने से नगर परिषद के उपयंत्री और जिस कर्मचारी परेशान किया जा रहा है। हितग्राहियों को यहां पन्नी तानकार रात गुजारना पड़ती है। यहां तक कि चक्कर कटवाये जा रहे है। ऐसे में अपने मेहमानों की को भी कहा पर कैसे व्यवस्था नहीं कर पाते है। वार्ड क्रमांक-11 गोविंद कुशवाहा का कहना है कि आवास की पहली किस्त एक लाख की राशि से लेंटर लेबिल तक दिवारे बनाई गई, दूसरी किस्त डलवाने 6 महीने से नगर परिषद के चक्कर काट रहे है। जिससे किस्त न मिलने के कारण मजदूरी करने बाहर निकल गए।

3 साल से नहीं मिली आवास की दूसरी किस्त

वार्ड क्रमांक 6 सुनील कोरी ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत हुआ। जिसमें पहली किस्त से आवास का निर्माण लेंटरलेविल लेकर छत तक पूर्ण हों गया। दूसरी डलवाने के लिए तीन साल से नगर परिषद के चक्कर काट रहे है, जिसमे हितग्राही ने दूसरी किस्त न मिलने के कारण सीएम हेल्पलाइन नंबर 25116237 शिकायत दर्ज कराए, जिससे हितग्राही को दूसरी किस्त मिले सकें।

पुराने बस स्टेंड पर दी प्रशासनिक अधिकारियों ने चेतावनी और समझाईश, फैली सनसनी-

खुले में बेंचा मांस-मछली और अंडा, तो चलेगा कानून का डंडा

टीकमगढ़, देशबन्धु। समय-साढ़े पांच बजे.. स्थान पुराना बस स्टेंड..मछली और मीट मार्केट...। अचानक यहां पहुंचा अधिकारियों का काफिला। मछली और मीट बिक्रेताओं जो आशंका थी, आखिर वही हुआ...। यहां पहुंचे अधिकारियों ने यहां खुले में बिक रही मछलियों एवं मीट पर नाराजगी जाहिर की और आगे इस तरह की खुले में की जा रही बिक्री पर आपत्ति जताई। एसडीएम ने कहा कि मछली और मीट का ढक कर दुकानों में रखा जाए। जो लोग मीट और मछली आदि नहीं खाते हैं, उन्हें इसकी बिक्री से किसी प्रकार की परेशानी नहीं होना चाहिए। जो बिना लाईसेंस मीट या मछली की बिक्री करते पाए जाएंगे, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। प्रदेश सरकार द्वारा मीट और मछली बिक्री को लेकर दिए गए निर्देशों के पालन में जिले में भी प्रशासन सख्ती दिखाता नजर आने लगा है। इस दौरान मुख्य नगर पालिका अधिकारी गीता मांझी सहित पुलिस एवं नगर पालिका कर्मचारी भी मौजूद रहे। बताया गया है कि यहां अधिकांश बिक्रेताओं के पास लाईसेंस नहीं हैं। मछली बिक्रेता अधिकांश तालाब से मछली पकड़कर अब तक यहां बिक्री करते आ रहे थे, अब उन्हें लाईसेंस बनवाना आवश्यक हो गया है। खुले मैदानों एवं धार्मिक स्थलों के पास अब तक मछली बिक्री होती आ रही थी। यहां के शंकरगढ़ मंदिर एवं जानकीबाग मंदिर जाने वाले दर्शनार्थियों को भी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। अब प्रशासन द्वारा की जा रही सख्ती

खुले में मांस बेंचने पर होगा लाईसेंस निरस्त एसडीएम संजय दुबे

के बाद लोगों को उम्मीद बन गई है कि मांस मछली की बिक्री अब खुले में नहीं हो सकेगी। अनेक लोगों ने शासन और प्रशासन के इस कदम की सराहना करने के साथ ही शहर के सार्वजनिक स्थानों पर की जा रही मांस मछली की बिक्री पर पाबंदी लगाने के साथ बिना लाईसेंस बिक्री करने वालों पर कार्रवाई किए जाने पर जोर दिया है। इसके साथ ही शहर के बाहर या सुरक्षित स्थान पर मीट मार्केट बनाए जाने की भी जरूरत बताई है। एसडीएम श्री दुबे ने कहा कि आज पहले दिन मीट बिक्रेताओं एवं मछली बिक्रेताओं को हिदायत दी गई है, इसके बाद भी यदि बिना लाईसेंस एवं मनमाने तरीके से मीट मछली बिक्री की जाती है, तो निश्चित ही दोषियों पर कार्रवाई की जाएगी। पुराने बस स्टेंड के बाद प्रशासनिक अमला यहां के मोटे के मोहल्ला इलाके में पहुंचा, जहां उन्होंने दुकानदारों एवं मीट बिक्रेताओं को मीट एवं मछली आदि ढक कर रखने एवं काली पन्नी में रखकर बेंचने की हिदायत दी। उन्होंने बिना लाईसेंस बिक्री करने वालों पर कार्रवाई करने की भी चेतावनी दी। एसडीएम श्री दुबे ने कहा है कि शनिवार को पहला दिन होने पर चेतावनी एवं समझाईश दी गई है। व्यवस्थाओं में सुधार न होने पर प्रशासन सख्ती से कार्रवाई करेगा। इस दौरान राकेश बाल्मीकि, मुकेश हवालदार, राहुल बाल्मीकि, राजा बाल्मीकि सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे। इस कार्रवाई के बाद से दुकानदार में सनसनी फैली हुई है, वहीं दुकानदारों एवं अन्य लोगों में यह कार्रवाई चर्चा का विषय बनी हुई है। स्थानीय लोगों ने प्रशासन द्वारा की गई कार्रवाई की सराहना करते हुए मांस-मदिरा की दुकानों को सार्वजनिक स्थानों पर न रखने की मांग की है। इसी प्रकार यदि गली-मुहल्लों में अवैध रूप से बिकने वाली शराब को लेकर भी कार्रवाई की जाने लगे, तो सैकड़ों गरीब परिवार तबाह होने से बच सकेंगे। यहां बता दें कि पूर्व में प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री उमा भारती ने भी शराब बंदी के लिए आवाज बुलंद की थी, हालांकि इस मामले में शासन ने रूचि नहीं दिखाई थी।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का हुआ शुभारंभ

मोबाइल वैनों को अतिथियों ने हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

टीकमगढ़, देशबन्धु। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केंद्र सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाने एवं इनसे लाभ लेने वाले हितग्राहियों से संवाद करने के उद्देश्य से प्रदेश में आरंभ की जा रही विकसित भारत संकल्प यात्रा का आज वर्चुअली शुभारंभ किया। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव उज्जैन में आयोजित राज्यस्तरीय कार्यक्रम में शामिल हुए। टीकमगढ़ जिले का मुख्य कार्यक्रम कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के पश्चात अमित नुना, विवेक चतुर्वेदी, सांसद प्रतिनिधि अनुराग वर्मा, अभिषेक खरे अन्य जनप्रतिनिधिगण, कलेक्टर अवधेश शर्मा ने अतिथियों के साथ जिले के लिये प्राप्त विकसित भारत संकल्प यात्रा की आईईसी मोबाइल वैनो को हरी झण्डी दिखा कर रवाना किया गया। आईईसी मोबाइल वैन के माध्यम से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धारित रूटचार्ट अनुसार केन्द्र सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाया जायेगा। इसके जरिए प्रधानमंत्री श्री मोदी का संदेश, योजनाओं की जानकारी और योजनाओं से संबंधित चलचित्र प्रदर्शित होंगे। इसके अलावा योजनाओं से संबंधित पम्पलेट, बुकलेट आदि वितरित करने के साथ-साथ योजनाओं के लाभ लेने के लिए आवेदन, लाभ वितरण भी सुनिश्चित किया जाएगा। योजनाओं के संबंध में जागरूकता के लिए क्विज, सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे। लाभार्थियों की व्यक्तिगत सफलता की कहानियों और उपलब्धियों को साझा करने के लिए 'मेरी कहानी-मेरी जुबानी' जैसे कार्यक्रम होंगे तथा धरती कहे पुकार के, स्वच्छता गीत आदि जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। साथ ही प्राकृतिक खेती, स्वाईल हेल्थ कार्ड के संबंध में जानकारी दी जाएगी। विकसित भारत संकल्प यात्रा' के अंतर्गत स्वास्थ्य मेला, उज्जवला योजना, आधार कार्ड अपडेटेशन आदि के स्टॉल होंगे। इसके साथ ही नागरिक उपयोगी अन्य सभी योजनाओं का लाभ दिलाने भी इन स्टाल में व्यवस्था होगी। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ नवीत कुमार धुर्वे, अपर कलेक्टर पीएस चौहान, एसडीएम टीकमगढ़ संजय कुमार दुबे सहित अधिकारी, गणमान्यजन तथा विभिन्न योजनाओं के लाभान्वित हितग्राही उपस्थित रहे।

पुण्यतिथि पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी दाऊ सरदार सिंह को हजारों लोगों ने किया याद, दी श्रद्धांजलि

पूर्वजों की छवि को किसी प्रकार का दाग लगे, ऐसा कार्य नहीं करूंगा: यादवेन्द्र

टीकमगढ़, देशबन्धु। अपने पिता स्व. दाऊ साहब ने जो सेवा और कार्य किए हैं, उनके कारण ही अब तक आप सभी का स्नेह और आशीर्वाद मिलता आ रहा है। हमने प्रयास किया है कि हमारे पूर्वज जिस तरह से आप सभी के निकट रहे और आपका प्यार सदैव मिला है। इसी तरह आप सभी हमारे परिवार का हिस्सा बने रहें। हमारा प्रयास रहा है कि जिस तरह पिताजी ने कार्य और सेवा भावना के द्वारा अपने ईमानदार और सेवाभावी की छवि बनाई थी, उसे किसी प्रकार से दागदार न होने दूं। सुख-दु:ख में हम और हमारा परिवार आप सभी के साथ है। आप सभी दाऊ साहब की पुण्य तिथि पर होने वाले कार्यक्रम में जिस तरह से हर वर्ष शामिल होते है, वह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। यह बात यहां पुण्य तिथि समारोह के अवसर पर विधायक यादवेन्द्र सिंह कही। बताया गया है कि सहकारिता के जनक एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय दाऊ सरदार सिंह की 41वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन शिवधाम कुण्डेश्वर नगरी में प्रतिमा स्थली पर किया गया। शनिवार को हुए कार्यक्रम में शहर के गणमान्य नागरिक उपसथिति सराहनीय रही। इस अवसर पर प्रतिभावन छात्र.छात्राओं का सम्मान समारोह कार्यक्रम समिति द्वारा आयोजित किया गया।

स्थानीय कांग्रेस विधायक यादवेन्द्र सिंह बुन्देला के पिता स्वर्गीय दाऊ सरदार सिंह की 41वीं पुण्यतिथि पर शनिवार को श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन गत वर्षों की भांति इस वर्ष किया गया। जिसमें कार्यक्रम के मुख्य अथिति डॉ अवध किशोर मिश्रा पूर्व संचालक लोक शिक्षण संचनालय भोपाल एवं अध्यक्षता शिक्षाविद् घनशयामदास तिवारी ने की। इस मौके पर उपस्थित सभी लोगों ने जहां दाऊ साहब के जीवन पर प्रकाश डाला, वहीं उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर सच्ची श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम में उपस्थित बुन्देली कवि राजेन्द्र बिदुआ ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय सरदार सिंह के जीवन पर कुछ पंक्तिया बोलते हुए कहा कि दाऊ साहब हमारे बीच भले ही न हों, लेकिन उनकी साफगोई किसी से छिपी नहीं है। वह जिसके साथ खड़े हुए, उसकी हर संभव मदद करने के लिए वह तैयार रहते थे। उन्हीं के आदर्श विचारों पर टीकमगढ़ विधायक यादवेन्द्र सिंह बुन्देला चल रहे हैं। इसी का कारण है कि इस बार के विधानसभा चुनाव में उन्होंने भाजपा को करारी शिकस्त देते हुए पुन: विधायकी हासिल की है। इस अवसर पर नगर पालिकाध्यक्ष अब्दुल गफ्फार पप्पू मलिक, कांग्रेस जिलाध्यक्ष नवीन साहू, प्रेमलाल वर्मा, केएल टेलर, मनोहर सिंह , राजाराम यादव, किरण अहिरवार, भानु श्रीवास्तव, रामगोपाल शर्मा, राजू दांगी, अरविंद खटीक, देवेन्द्र नापित, लक्ष्मण रैकवार, सलीम खान, पप्पू पहलवान, हनीफ खान, पुष्पेन्द्र सिंह, डां इसरार मुहम्मद, राजू यादव नीमखेरा, विनय जैन सुनवाहा, विजय तैवरेया, अंकित जैन, राजीव जैन, नपाउपाध्यक्ष प्रतिनिधि संजय नायक, कृष्ण दीपक वैद्य, हबीब राईन, फरीद खांन, ध्रुव यादव, मौना जैन, अनीस अहमद, राम कुमार यादव, अरविन्द रजक, कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष गौरव शर्मा, शंकर काजी, पंकज अहिरवार, राम नारायण पांडेय कारी, नरेन्द्र यादव, इंजीनियर राकेश सिंह, राज खान, कुंवरलाल यादव

पूर्व सरपंच, रामेश्वर यादव सरपंच, घनेन्द्र यादव रानीपुरा, राजाराम यादव पहाड़ी, अशोक अहिरवार, देवी अहिरवार, दलूराम अहिरवार पूर्व जनपद अध्यक्ष के अलावा हजारों लोगों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

प्रतिभावान किरण कौशिक का हुआ सम्मान

स्वर्गीय दाऊ सरदार सिंह स्मृति द्वारा शनिवार को उनकी 41वीं पुण्य तिथि पर लोक सेवा आयोग में सहायक संचालक स्कूल शिक्षा के पद पर चयन होने पर प्रतिभावान छात्रा कुमारी किरण कौशिक का सम्मान किया गया। इसके अलावा कराटे प्रतियोगिता में उत्तीर्ण रोजी बानो, आकांक्षा प्रजापति, नीलम राजपूत, तनिष्का सिंह लोधी, अक्शा खांन सहित मध्यप्रदेश पर्यटन क्विज प्रतियोगिता में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत तीन बच्चों को सम्मानित किया गया। जिन्होंने जिले में प्रथम स्थान दर्ज किया है।

दुकानदारों को प्रशासन ने दी समझाईश खुले में लगीं दुकानें तो होगी कार्रवाई

टीकमगढ़, देशबन्धु। मध्य प्रदेश के नवनियुक्त मुख्यमंत्री मोहन यादव के आदेश पर प्रशासन की टीम ने मीट, मछली, मुर्गा और अंडा बेचने वाले दुकानदारों को आज समझाईश दी गई है। प्रशासनिक टीम ने दुकानदारों से कहा कि मंदिर, मस्जिद वाले रास्तों में, खुले में व सड़क किनारे लगी हुई मांसाहारी दुकानों को बंद किया जाएगा। यह दुकानें रविवार से कस्बे के कुशवाहा मुहल्ले के पीछे मीट बाजार में लगाई जाएगी। शनिवार शाम दिगौड़ा कस्बे में तहसीलदार मनीराम कोंदर, एसआई नीरज लोधी, एएसआई कल्याण सिंह, पीसीओ सुल्तान सिंह, हल्का पटवारी इकबाल खान सहित पुलिस व राजस्व विभाग के अन्य कर्मचारियों ने झांसी हाइवे पर सड़क किनारे, बस स्टैंड व मंदिर-मस्जिद जाने वाले रास्तों में मीट, मछली, मुर्गा व अंडा की दुकानें संचालित करने वाले दुकानदारों को समझाइश दी गई। तहसीलदार व एसआई ने मीट मछली बेचने वाले दुकानदारों से कहा कल यानी रविवार से इन स्थानों पर यह दुकानें संचालित नहीं होनी चाहिए। यह दुकानें कस्बे में निर्मित कुशवाहा मोहल्ला के पीछे मीट बाजार में लगाई जाए। यदि कल से इन स्थानों पर यह दुकान लगाई गई, तो मीट, मछली, मुर्गा व अंडा बेचने वालों पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। कस्बे में यह दुकान केवल एक ही स्थान पर संचालित की जाएगी। सड़क किनारे, मंदिर-मस्जिद वाली रास्ता में यह दुकान संचालित नहीं की जाएगी। जो भी दुकानदार ऐसी जगहों पर मीट मछली की दुकानें संचालित करते हुए पाया जाएगा, तो उस पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ

टीकमगढ़, देशबन्धु। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केंद्र सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाने एवं इनसे लाभ लेने वाले हितग्राहियों से संवाद करने के उद्देश्य से प्रदेश में आरंभ की जा रही विकसित भारत संकल्प यात्रा का आज वर्चुअली शुभारंभ किया। प्रधानमंत्री वर्चुअल माध्यम से यात्रा के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों से जुड़ें और हितग्राहियों से चर्चा की। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव उज्जैन में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में शामिल हुए। टीकमगढ़ जिले का मुख्य कार्यक्रम कृषि महाविद्यालय के सभागार में अमित नुना, विवेक चतुर्वेदी, सांसद प्रतिनिधि अनुराग वर्मा, अभिषेक खरे, अन्य जनप्रतिनिधिगण, कलेक्टर अवधेश शर्मा के अतिथ्य में आयोजित किया गया। इस दौरान जिला पंचायत सीईओ नवीत कुमार धुर्वे, अपर कलेक्टर पीएस चौहान, एसडीएम टीकमगढ़ संजय कुमार दुबे सहित अधिकारी, गणमान्यजन तथा विभिन्न योजनाओं के लाभान्वित हितग्राही उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों एवं आमजन द्वारा प्रधानमंत्री का उद्बोधन सुना एवं देखा। विकसित भारत संकल्प यात्रा जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में 16 दिसंबर से 26 जनवरी तक चलेगी। कार्यक्रम में केन्द्र की विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों ने अपने अनुभव साँझा किये। केन्द्र सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का काम आईईसी मोबाइल वैन के जरिए होगा। इसके जरिए

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव उज्जैन में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में हुए शामिल
- जिला स्तरीय कार्यक्रम कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित
- 16 दिसंबर से 26 जनवरी तक चलेगी संकल्प यात्रा

प्रधानमंत्री श्री मोदी का संदेश, योजनाओं की जानकारी और योजनाओं से संबंधित चलचित्र प्रदर्शित होंगे। इसके अलावा योजनाओं से संबंधित पम्पलेट, बुकलेट आदि वितरित करने के साथ-साथ योजनाओं के लाभ लेने के लिए आवेदन, लाभ वितरण भी सुनिश्चित किया जाएगा। योजनाओं के संबंध में जागरूकता के लिए क्विज, सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे। लाभार्थियों की व्यक्तिगत सफलता की कहानियों और उपलब्धियों को साझा करने के लिए 'मेरी कहानी-मेरी जुबानी' जैसे कार्यक्रम होंगे तथा धरती कहे पुकार के, स्वच्छता गीत आदि जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। साथ ही प्राकृतिक खेती, स्वाईल हेल्थ कार्ड के संबंध में जानकारी दी जाएगी।

स्वास्थ्य मेला और अन्य जरूरी सुविधाओं के लिए कैंप

विकसित भारत संकल्प यात्रा' के अंतर्गत स्वास्थ्य मेला, उज्जवला योजना, आधार कार्ड अपडेटेशन आदि के स्टॉल होंगे। इसके साथ ही नागरिक उपयोगी अन्य सभी योजनाओं का लाभ दिलाने भी इन स्टाल में व्यवस्था होगी। 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' के अंतर्गत ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में संचालित योजनाएं सम्मिलित होंगी। ग्रामीण क्षेत्र में क्रियान्वित आयुष्मान भारत, पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना, दीनदयाल अंत्योदय योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, पीएम आवास योजना, पीएम उज्जवला योजना, पीएम विश्वकर्मा योजना, पीएम किसान सम्मान योजना, क्रिसान क्रेडिट कार्ड, पीएम पोषण अभियान, हर घर जल-जल जीवन मिशन, स्वामित्व योजना, जन-धन योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, नैनो उर्वरक का उपयोग, स्वाइल हैल्थ कार्ड, उन्नत कृषि यंत्र आदि से संबंधित गतिविधियां शामिल होंगी। शहरी क्षेत्रों में पीएम स्वनिधि योजना, पीएम विश्वकर्मा योजना, पीएम उज्जवल योजना, पीएम मुद्रा लोन योजना, स्टार्ट-अप इंडिया, स्टेंड-अप इंडिया, आयुष्मान भारत, पीएम आवास योजना शहरी, वंदे भारत ट्रेनें और अमृत भारत स्टेशन योजना, स्वच्छ भारत अभियान, उजाला योजना, अमृत योजना, पीएम जन औषधि परियोजना, सौभाग्य योजना, डिजिटल भुगतान अधोसंरचना, आरसीएस योजना और खेलो इंडिया से संबंधित योजनाएं व गतिविधियाँ शामिल होंगी।

वेब पोर्टल से होगी मानिटरिंग

भारत सरकार और पीएमओ द्वारा इस यात्रा की मॉनीटरिंग वेब आधारित पोर्टल से की जाएगी। यात्रा से संबंधित सामग्री इस वेब पोर्टल में साझा की जाएगी। साथ ही हितग्राहियों को दिये जाने वाले लाभ की सूचना इस पोर्टल में होगी। शिविरों में आने वाले आवेदनों के संबंध में भी जानकारी इस पोर्टल में होगी।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ, प्रचार वैन को हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

गरीब कल्याण की योजनाओं से जीवन स्तर में आया बदलाव : शर्मा

पन्ना, देशबन्धु। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गरीब व्यक्तियों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं संचालित की गई हैं। केन्द्र व राज्य सरकार की हितग्राही मूलक योजनाओं का लाभ मिलने से गरीब व वंचित परिवार के लोगों के जीवन स्तर में बदलाव आया है अब शेष वंचित परिवार और हितग्राहियों तक विभिन्न सरकारी योजनाओं व सुविधाओं का लाभ आसानी से पहुंच सके, इसके लिए विकसित भारत संकल्प यात्रा शुरू की गई है। यह बात सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने शनिवार को स्थानीय टाउन हॉल में विकसित भारत संकल्प यात्रा के शुभारंभ अवसर पर कही। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रचार वैन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। श्री शर्मा ने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा में प्रत्येक ग्राम पंचायत में शिविर के माध्यम से नागरिकों के आवेदन प्राप्त कर निराकरण सुनिश्चित किया जाएगा। प्रत्येक दिवस दो-दो ग्राम पंचायतों में यात्रा पहुंचेगी। आईईसी वैन के माध्यम से केन्द्र सरकार की योजनाओं और उपलब्धियों का लघु फिल्म के जरिए प्रचार-प्रसार किया जाएगा। सांसद ने अधिकारी कर्मचारियों सहित जनप्रतिनिधियों से भी गांव-गांव और घर-घर तक यात्रा के बारे में लोगों को जागरूक और सूचित करने तथा अब तक योजनाओं के लाभ से वंचित हितग्राहियों को आवश्यक प्रयास कर लाभांवित करने का आग्रह किया। विधायक एवं पूर्व मंत्री बृजेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि केन्द्र व राज्य सरकार की योजना का लाभ हर लाभार्थी तक पहुंचाना यात्रा का उद्देश्य है। उन्होंने शिविर के अलावा प्रत्येक परिवार तक सर्वे के माध्यम से योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित करने तथा कर्मचारियों की जवाबदेही तय करने की बात कही। कटनी जिले के विजयराघवगढ़ विधायक संजय पाठक ने वंचित लोगों तक सेवाभाव के साथ जनहितैषी योजनाओं का लाभ पहुंचाने का आग्रह किया। गुनौर विधायक राजेश वर्मा ने कहा कि प्रत्येक वर्ग तक शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचे, इसके लिए आमजनों तक यात्रा व अभियान के बारे में मुनादी तथा अन्य माध्यमों से सूचना दी जाए। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभावान बच्चों का सम्मान समारोह आयोजित करने के लिए भी कहा। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं यात्रा के नोडल अधिकारी संघ प्रिय ने कार्यक्रम में जिले की सभी 386 ग्राम पंचायतों तक यात्रा के आगमन संबंधी तैयारियों और नागरिकों को मिलने वाले लाभ तथा अन्य गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में यात्रा के लिए सात आईईसी वैन प्राप्त हुई हैं। नगरीय निकायों में 31 दिसम्बर से 4 जनवरी तक पृथक से प्रचार वैन भेजी जाएगी। अभियान में मिलने वाली विभिन्न सेवाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। कार्यक्रम स्थल पर उपस्थितजनों ने प्रधानमंत्री के संबोधन को देखा और सुना। शुभारंभ कार्यक्रम में विधायक पवई प्रह्लाद लोधी, राजनगर अरविन्द पटेरिया, जिला पंचायत अध्यक्ष मीना राजे, उपाध्यक्ष संतोष सिंह यादव, नपाध्यक्ष मीना पाण्डेय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव एनबीएस राजपूत, कलेक्टर हरजिंदर सिंह सहित रामबिहारी चौरसिया, सतानंद गौतम, रामऔतार पाठक, बृजेन्द्र गर्ग तथा बड़ी संख्या में विभिन्न योजनाओं के हितग्राही व आम नागरिक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन परियोजना अधिकारी संजय सिंह परिहार द्वारा किया गया।

प्रधानमंत्री मोदी का सपना है देश लगातार प्रगति करते विकसित देश के रूप में उभरे: मलैया

दमोह देशबन्धु। विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन एवं समाज के अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं की पहुंच को सुगम बनाये जाने के उद्देश्य से विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ पूर्व वित्तमंत्री एवं नवनिर्वाचित विधायक जयंत मलैया के मुख्य आतिथ्य में जिले की ग्राम लकलका में हुआ। इस अवसर पर पूर्व जनपद अध्यक्ष मुकेश यादव, हजारी, कमल राजू ठाकुर, एसडीएम दमोह आरएल बागरी, सीईओ जनपद सहित अन्य विभागों के अधिकारी-जनप्रतिनिधि और ग्रामीणजन मौजूद रहे।

विकसित भारत संकल्प यात्रा केंद्र सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाने एवं इनसे लाभ लेने वाले हितग्राहियों से संवाद करने के उद्देश्य से आरंभ की गई विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार 16 दिसम्बर को दोपहर चार बजे किया। प्रधानमंत्री वर्चुअल माध्यम से देश भर में यात्रा के अंतर्गत आयोजित होने वाले कार्यक्रमों से जुड़े और हितग्राहियों से चर्चा की। कार्यक्रम की शुरुआत विकसित भारत संकल्प यात्रा की शपथ के साथ हुई। इस अवसर पर पूर्व वित्तमंत्री एवं नवनिर्वाचित विधायक जयंत मलैया ने कहा भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सपना है कि देश लगातार प्रगति करते हुए, विकसित देश के रूप में उभरे। पीएम श्री मोदी के मार्गदर्शन में विकास का पहिया दोगुनी रफ्तार से दौड़ रहा है। जबसे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने मोर्चा संभाला है, तब से देश लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

लाउड स्पीकर एवं डीजे की निर्धारित ध्वनि को लेकर दी समझाइश

दमोह देशबन्धु। शहर के विभिन्न समाज के वर्गों की बैठक नगर पालिका दमोह में एसडीएम आरएल बागरी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में लाउडस्पीकर एवं डीजे ध्वनि को निर्धारित शासन के मानक स्तर पर अर्थात जो शासन ने डेसिबल निर्धारित किया हैं, के संबंध में समझाइश दी गई। साथ ही इसको पालन करने हेतु बताया गया। यह भी बताया गया कि भविष्य में यदि पालन नहीं किया जाता हैं तो शासन के निर्देशानुसार कार्रवाई की जाएगी। इस अवसर पर टीआई दमोह विजय राजपूत सहित अन्य वरिष्ठजनों की उपस्थिति रही।

अयोध्या से आया अक्षत कलश, निकलेगी भव्य शोभायात्रा

दमोह देशबन्धु। श्री राम मंदिर में श्री राम भगवान की प्राणप्रतिष्ठा के पूर्व देश के अलग अगह हिस्सों से अक्षत कलश यात्रा का आयोजन किया जा रहा है, इसी शोभायात्रा के लिए श्री मंदिर तीर्थ क्षेत्र समिति अयोध्या से दमोह के फुटेरा वार्ड नंबर 4 में अक्षत कलश की स्थापना की गई हैं। उक्त अक्षत कलश शहर के अलग अलग मार्गो से होता हुआ माँ बड़ी देवी में स्थापित होगा, शोभायात्रा आज 17 दिसम्बर 2023 को दोपहर 1 बजे माँ बड़ी देवी मंदिर से होते हुए गौरीशंकर चौराहा, महाकाली चौराहा, धगट चौराहा, घंटाघर, अंबेडकर चौराहा से होते हुए जेल गेट स्थित शिवशनी में अल्प विराम लेगी, इस कलश के माध्यम से शहर के अलग अलग हिस्सों से अक्षत एकत्रित होकर श्री तीर्थ क्षेत्र श्री राम मंदिर अयोध्या पहुचेंगे। इस शोभायात्रा में शहर के सभी आम जनमानस श्री राम भक्तों की उपस्थिति रहेगी।

जिले में विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ

दमोह देशबन्धु। जिले में विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ शुभारंभ हुआ। विकासखण्ड पथरिया के ग्राम नरसिंहगढ़ के ग्राम पंचायत भवन में विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया । कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष प्रीतम सिंह लोधी, जनपद अध्यक्ष डॉ खिलान अहिरवार, सीईओ जिला पंचायत अर्पित वर्मा, एसडीएम निकेत चौरसिया, कविता साहू, लाखन सिंह, ब्रजेश मिश्रा, सीईओ जनपद मनोज कुमार गुप्ता, तहसीलदार दीपा चतुर्वेदी, जिला क्षय अधिकारी डॉ गौरव जैन सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी मौजूद थे। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के संदेश का लाईव प्रसारण देखा व सुना गया। विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा कुल 42 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण एवं जाँचे कर दवा वितरित की गई, 06 निरूक्षय मित्रों द्वारा उपचारित क्षय रोगियों को फूड बॉक्स किट बॉटे गये एवं पोषण तथा स्वास्थ्य शिक्षा एवं नियमित उपचार लेने हेतु सलाह दी गई। नरसिंहगढ निवासी रामअवतार अहिरवार एवं मकुंदी यादव को मृदा परीक्षण कार्ड का वितरण किया गया एवं 61 वर्षीय फूल बाई/कालूराम रैकवार को वृद्धा पेंशन स्वीकृत की गई।

भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान हेतु गायत्री परिवार निकलेगा श्रद्धा संवर्धन यात्रा

दमोह/हटा देशबन्धु। युग तीर्थ शांतिकुंज हरिद्वार के मार्गदर्शन में मातृशक्ति अखंड दीप की जन्म शताब्दी के उपलक्ष में समाज में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना हेतु गायत्री परिवार तहसील की प्रत्येक पंचायत में श्रद्धा संवर्धन यात्रा निकालेगा । जनसंपर्क अभियान खमरगौर की बैठक में उक्त जानकारी देते हुए तहसील के समन्वयक पंडित दिनेश दुबे ने बताया अभी तक गैसावाद, अदनवारा ,देवरा जामशा, तेवरईया, हुसैना, बलेह, पुरैना हरदुआ उमराव में बैठक कर व्यवस्था समिति का गठन किया गया है। जिन्हें यात्रा के स्वागत हेतु ग्राम वासियों के आमंत्रण, ग्राम के ही किसी देवालय सार्वजनिक श्रद्धा के केंद्र में सामूहिक पूजन माता बहनों को सिर पर कलश रखकर अगवानी करने की जिम्मेदारी दी गई है। बाल संस्कार शाला संचालक लीलाधर पटेल ने देव संस्कृति की महत्ता को प्रतिपादित किया। डाक्टर जानकी पटेल एवं कृष्ण प्रताप सिंह राजपूत ने गाजे बाजे के साथ यात्रा के स्वागत की बात कही एवं बैठक में उपस्थित हरिनारायण पटेल, पंडित गिरधर पटेरिया, धनीराम दहिया, रघुवीर पटेल सहित सभी ग्राम वासियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

बाल प्रतिभा सम्मान से सम्मानित हुए बाल कलाकार

दमोह देशबन्धु। प्रतिवर्ष अनुसार नीलम संगीत साधना केंद्र दमोह पर बाल प्रतिभा सम्मान 2023 कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, सर्वप्रथम ज्ञान की देवी विद्यादायिनी देवी सरस्वती के समक्ष संस्था के संस्थापक अध्यक्ष पंडित श्याम सुंदर शुक्ला मुख्य अतिथि डॉक्टर चेतन जैन विशिष्ट अतिथि प्रिया मंडलोई एवं विशेष अतिथि अनीता जैन ने पूजन अर्चन कर कार्यक्रम का प्रारंभ किया, सरस्वती वंदना हे शारदे मां अज्ञानता से हमें तार दे मां की प्रस्तुति संस्था की साक्षत्रों के द्वारा प्रस्तुत की गई। संगीत शिक्षक मुकेश दुबे के द्वारा अतिथियों का फूल माला एवं तिलक लगाकर स्वागत किया गया। डॉ प्रेमलता नीलम ने बतलाया बाल प्रतिभा सम्मान विगत कई वर्षों से दमोह जिले के बाल कलाकारों को दिया जा रहा है नीलम संगीत साधना केंद्र का यह आठवां वर्ष है जब से किसी संगीत विद्यालय के उन बच्चों को दिया जाता है जो नियमित भारतीय संगीत की शिक्षा ग्रहण करते हैं और अपने भविष्य को उज्जवल बनाते हैं उन्हें ही प्रदान किया जाता है।

शासकीय हाईस्कूल किन्द्रहों में बाल मेले का आयोजन

दमोह/पथरिया देशबन्धु। शासकीय हाईस्कूल किन्द्रहों में बाल मेले का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं द्वारा कबाड़ से जुगाड़ थीम के तहत विभिन्न कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया। बाल मेले का शुभारंभ उत्कृष्ट विद्यालय प्राचार्य भारद्वाज, सरपंच हीरा सिंह राव साहब, सचिव तखत पटेल द्वारा किया गया। कार्यक्रम में संकुल प्राचार्य सुभाष चंद्र जैन, अवधेश बड़गैयां प्रधानध्यापक तथा जन शिक्षक की विशेष उपस्थिति रही। छात्रों को भारद्वाज एवं एस सी जैन एवं अवधेश बड़गैयां ने उज्जवल भविष्य की शुभकामनायें दी मेला प्रभारी राहुल जैन शिक्षक ने बताया कि प्राचार्य संतोष जैन के निर्देशन में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है, छात्रों को विद्यालय स्तर पर शैक्षणिक के साथ-साथ समय-समय पर बौद्धिक विकास हेतु विभिन्न गतिविधियां कराई जाती हैं। कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन प्राचार्य द्वारा किया गया इस कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था के सभी शिक्षकों का पूर्ण सहयोग रहा।

कबाड़ से जुगाड़ की युक्ति से बनाई कलाकृति

विकसित भारत अभियान पर परिचर्चा आयोजित

दमोह देशबन्धु। शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह में विकसित भारत अभियान पर परिचर्चा आयोजित की गई। जिसमें सशक्त भारत, सम्पन्न एवं सुदृढ़ अर्थव्यवस्था, इनोवेशन, सुशासन एवं सुरक्षा तथा विश्व में भारत विषय पर डॉ. केपी अहिरवार, डॉ. आलोक जैन, डॉ. हरिओम दुबे, डॉ. कुंवर सिंह बामनिया, डॉ. के.के. कोरी, डॉ. एम.एम. महन्त, डॉ. जितेन्द्र कुमार चौधरी ने विषय विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किए। विद्यार्थियों ने भी बढ़-चढ़कर परिचर्चा में भाग लिया एवं विकसित भारत पोर्टल पर अपने विचार दर्ज किए। डॉ. जितेन्द्र धाकड़, डॉ अनिल यादव, डॉ निहारिका चौरसिया, डॉ. एकता मसीह आदि महाविद्यालय के अधिकारियों कर्मचारियों ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

मांस अंडा आदि विक्रय एवं कोलाहल अधिनियम के तहत होगी कार्रवाई

दमोह देशबन्धु। दमोह.मध्यप्रदेश शासन के निर्देशन में पुलिस थाना परिसर हटा विकास खंड हटा स्तर में एक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमे प्रदेश के नये मुख्यमंत्री की मंशा अनुसार मंदिर मस्जिद एवं डीजे पर बजने वाले ध्वनि विस्तारक यंत्रों को निर्धारित माप दडों के अनुसार चलाने एवं क्षेत्र में जगह जगह संचालित माँस अंडा मछली मटन आदि के विक्रय की दुकानों को बंद कर अन्यत्र एकांत स्थान में खोले जाने आदि विषय पर दिशा निर्देश दिए गए.। बैठक में हटा टीआई मनीष मिश्रा ने बैठक के आयोजन के बारे में अवगत कराया गया. तदुपरांत एसडीएम रीता डेहरिया द्वारा एसडीओपी नीतेश पटेल, सीईओ बीएस यादव, नपा अध्यक्ष राजेंद्र खरे, गैसाबाद थाना प्रभारी विकास सिंह चौहान, मड़ियादो थाना प्रभारी ब्रजेश पांडेय, रजपुरा थाना प्रभारी राजीव पुरोहित, कुम्हारी थाना प्रभारी रोहित द्विवेदी सहित व्यवसायियों एवं धर्म गुरुओं और डीजे संचालकों की मौजूदगी में सभी को नियमो के बारे में विस्तार से बताया गया. सुबह 6 बजे से रात 10 बजे तक ध्वनि यंत्रों में निर्धारित नगरीय एवं आवासीय क्षेत्र में अलग अलग लिमिटेशन के बारे में बताया गया। इस दौरान बड़ी संख्या में धर्म गुरु, डीजे संचालक, अंडा मांस विक्रय आदि के संचालकों की बड़ी संख्या में मौजूदगी रही।

भागवत कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया

दमोह देशबन्धु। बटियागढ़ वायपास के पास राजपूत परिवार के द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के चतुर्थ दिवस में कथावाचक आचार्य पंडित मृदुल बिहारी शास्त्री महाराज ने कहा कि भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथी रोहिणी नक्षत्र बुधवार के दिन श्री कृष्ण का जन्म हुआ था. श्री कृष्ण का जन्म मथुरा की कारागार में हुआ था श्री कृष्ण का जन्म वसुदेव की पत्नी देवकी के गर्भ से आंठवी संतान के रूप में हुआ था. जन्म के बाद श्री कृष्ण को गोकुल नन्द यशोदा के पास भेज दिया गया था द्वापर युग में मथुरा के उग्रसेन राजा के बेटे कंस ने उन्हें सिंहासन से उतार कर कारगार में बंद कर दिया था और खुद को मथुरा का राजा घोषित कर दिया था कंस की चचेरी बहिन देवकी का विवाह वसुदेव के साथ तय कर दिया गया और बड़ी धूम-धाम के साथ वसुदेव के साथ उनका विवाह कर दिया गया. लेकिन जब कंस देवकी को हंसी-खुसी रथ से विदा कर रहा था, उस समय आकाशवाणी हुई की, देवकी का आठवां पुत्र ही कंस का वध करेगा आकाशवाणी सुनकर कंस घबरा गया. आकाशवाणी के बाद कंस ने बहन देवकी की हत्या करने की ठान ली. लेकिन उस दौरान वसुदेव ने कंस को समझाया कि देवकी को मारने से क्या होगा. देवकी से नहीं, बल्कि उसको देवकी की आठंवी संतान से भय है. वसुदेव ने कंस को सलाह दी कि जब हमारी आठवीं संतान होगी तो हम आप को सौंप देंगे. आप उसे मार देना. कंस को वासुदेव की ये बात समझ आ गई. लेकिन वसुदेव और देवकी को कंस ने कारगार में कैद कर लिया।

आज 11 ग्राम पंचायतों में पहुंचेगी विकसित भारत संकल्प यात्रा

पन्ना, देशबन्धु। विकसित भारत संकल्प यात्रा आज रविवार को निर्धारित रूट चार्ट अनुसार सभी पांच जनपद पंचायत अंतर्गत कुल 11 ग्राम पंचायतों में पहुंचेगी। पन्ना विकासखण्ड के ग्राम पंचायत रक्सेहा, बिलखुरा और अहिरगुवां में यात्रा का आगमन होगा। इसी तरह अजयगढ़ विकासखण्ड के ग्राम पंचायत आरामगंज और प्रतापपुर में, गुनौर विकासखण्ड के ग्राम पंचायत विक्रमपुर और द्वारी में, पवई विकासखण्ड के ग्राम पंचायत खम्हरिया और इमलिया में तथा शाहनगर विकासखण्ड के ग्राम पंचायत चन्द्रावल और सिमरीकला में यात्रा पहुंचेगी।

केन्द्र सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का काम आईईसी मोबाइल वैन के जरिये होगा। इसके जरिये प्रधानमंत्री का संदेश, योजनाओं की जानकारी और योजनाओं से संबंधित चलचित्र प्रदर्शित होंगे। इसके अलावा योजनाओं से संबंधित पम्पलेट, बुकलेट आदि वितरित करने के साथ-साथ योजनाओं के लाभ लेने के लिए आवेदन, लाभ वितरण भी सुनिश्चित

किया जाएगा। योजनाओं के संबंध में जागरूकता के लिए क्विज, सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे। लाभार्थियों की व्यक्तिगत सफलता की कहानियों और उपलब्धियों को साझा करने के लिए मेरी कहानी-मेरी जुवानी जैसे कार्यक्रम होंगे तथा धरती कहे पुकार के, स्वच्छता गीत आदि जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। साथ ही प्राकृतिक खेती, स्वाइल हेल्थ कार्ड के संबंध में जानकारी दी जाएगी।

स्वास्थ्य मेला और अन्य जरूरी सुविधाओं के लिए लगाये जाएंगे कैंप: विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत स्वास्थ्य मेला, उज्ज्वला योजना, आधार कार्ड अपडेशन आदि के स्टॉल लगाए जाएंगे। इसके साथ ही नागरिक उपयोगी अन्य सभी योजनाओं का लाभ दिलाने की भी व्यवस्था होगी। विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में संचालित योजनाएं सम्मिलित होंगी। ग्रामीण क्षेत्र में क्रियान्वित आयुष्मान भारत, पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना, दीनदयाल अंत्योदय योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, पीएम आवास योजना, पीएम उज्जवला योजना, पीएम विश्वकर्मा योजना, पीएम किसान सम्मान योजना, क्रिसान क्रेडिट कार्ड, पीएम पोषण अभियान, हर घर जल-जल जीवन मिशन, स्वामित्व योजना, जन-धन योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, नैनो उर्वरक का उपयोग, स्वाइल हैल्थ कार्ड, उन्नत कृषि यंत्र आदि से संबंधित गतिविधियां शामिल हैं।

उल्लेखनीय है कि सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने शनिवार को विकसित भारत संकल्प यात्रा की प्रचार वैन को स्थानीय टाउन हॉल से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। रविवार से सभी वैन निर्धारित रूट चार्ट के अनुसार भ्रमण करेंगी। खाद्य विभाग द्वारा शनिवार को कार्यक्रम शुभारंभ स्थल पर स्टॉल के माध्यम से प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के हितग्राहियों का ई.केवायसी किया गया। जिला आपूर्ति अधिकारी देवेन्द्र खोबरिया की टीम द्वारा गैस कनेक्शन के आवेदन प्राप्त किए गए। यात्रा के शिविरों में हितलाभ का वितरण किया जाएगा।

सार-समाचार

सागर, देशबन्धु। विधायक शैलेंद्र जैन ने मप्र शासन के नव नियुक्त उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा से मुलाकात कर नवीन दायित्व के लिए बधाई दी।

खाद्य सुरक्षा प्रशासन ने मीट मार्केट का किया निरीक्षण

सागर, देशबन्धु। आयुक्त खाद्य सुरक्षा प्रशासन के आदेश एवं कलेक्टर दीपक आर्य के निर्देशन में सागर नगर के मकरोनिया क्षेत्र में स्थित मीट चिकन, मछली, अंडा की दुकानों एवं मीट मार्केट का औचक निरीक्षण खाद्य सुरक्षा प्रशासन विभाग द्वारा किया गया। खाद्य सुरक्षा अधिकारी द्वारा व्यवसाय में लगे लोगों को अपने प्रतिष्ठान में साफ सफाई का ध्यान रखने की निर्देश दिए गए। एफएसएसएआई द्वारा जारी रजिस्ट्रेशन लाइसेंस की जांच की गई, मौके पर विकास चिकन, मछली शॉप सनराइज एट सेंटर पर एफएसएसएआई रजिस्ट्रेशन नहीं पाया गया। मकरोनिया स्थित मीट मार्केट में पप्पू रैकवार द्वारा संचालित दुकान का रजिस्ट्रेशन एक्सपायरी पाया गया। उक्त सभी पर सुधार सूचना की कार्यवाही की जाएगी। इसके अतिरिक्त अन्य दुकान एसबीएन चिकन ताजा चिकन शॉप पर रजिस्ट्रेशन पाए गए।

ग्राम मसान झिरी में गर्म वस्त्रों का वितरण

सागर, देशबन्धु। सामाजिक संस्था बुंदेलखंड विकास मंच सागर के सदस्यों द्वारा कनेरा ग्राम के नजदीक सागर की सीमा से लगे आदिवासी बहुल ग्राम मसान झिरी में स्थानीय शिव पार्वती मंदिर के प्रांगण में गांव की महिलाओं बुजुर्गों बच्चों एवं मजदूर वर्ग कि लोगों के लिए कपड़े एवं अन्य सामग्री वितरित की गई। गांव के राकेश सिंह एवं लेखन सिंह गौंड़ के नेतृत्व में ग्रामवासियों द्वारा कपड़े प्राप्त किये गए, बड़ी संख्या में ग्रामीण जन इस अवसर पर उपस्थित रहे। कपड़े वितरण कार्यक्रम में रमाकांत मिश्रा शास्त्री, यूएस पांडे, बसंत श्रीवास्तव, राजेन्द्र गर्ग, राजेन्द्र मिश्रा, गणेश सैनी आदि का सहयोग रहा।

प्रशासन ने 35 एकड़ में किये अतिक्रमण को हटाना शुरू किया

बण्डा, देशबन्धु। कांटी रोड पर बाय पास के बाजू में करीब पैंतीस एकड़ भूमि पर लोगों द्वारा कब्जा किया जा रहा था। जिसके लिए लोगो ने पत्थरों की लाइन लगा कर और उन पर चूना डाल कर अतिक्रमण किया जा रहा था। पूरी खुली जमीन पर लोगों ने पत्थर रख कर जमीन पर कब्जा कर लिया था। शनिवार की सुबह प्रशासन का अमला, नगर परिषद और पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचा और जेसीबी के माध्यम से पत्थरो को हटवाया गया। नायब तहसील दार ममता मिश्रा ने बताया कि पटवारी द्वारा जानकारी मिली थी लोगो द्वारा पत्थर रखकर अस्थाई रूप से अतिक्रमण किया जा रहा है। जिसे प्रशासन द्वारा हटवाया जा रहा है। अभी चिन्हित नही हो पाया है कि किन लोगो द्वारा अतिक्रमण किया गया। यदि फिर से अतिक्रमण किया जाता है तो उन पर कार्यवाही कि जाएगी।

प्रधानमंत्री के 9.5 वर्षों के कार्यकाल में देश में लगातार एक सकारात्मक परिवर्तन: महापौर

सागर, देशबन्धु। केंद्र सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने एवं इनसे लाभ लेने वाले हितग्राहियों से संवाद करने के उद्देश्य से आरंभ की गई विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को दोपहर चार बजे किया। प्रधानमंत्री वर्चुअल माध्यम से देश भर में यात्रा के अंतर्गत आयोजित होने वाले कार्यक्रमों से जुड़े और हितग्राहियों से चर्चा की।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव उज्जैन में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में शामिल हुए। जबकि, सागर जिले का मुख्य कार्यक्रम पद्माकर स्कूल में आयोजित किया गया। जहां से जिले के लिये प्राप्त विकसित भारत संकल्प यात्रा की आईईसी मोबाइल वैनों को कार्यक्रम के मुख्य अतिथियों द्वारा हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। कार्यक्रम में सांसद राजबहादुर सिंह, बंडा विधायक वीरेंद्र सिंह लोधी, जिला पंचायत अध्यक्ष हीरा सिंह राजपूत, महापौर संगीता तिवारी, निगम अध्यक्ष वृंदावन अहिरवार, सुशील तिवारी, पार्षदगण संभागायुक्त डॉ. वीरेन्द्र सिंह रावत, कलेक्टर दीपक आर्य, निगमायुक्त चंद्रशेखर शुक्ला, जिला पंचायत के सीईओ पीसी शर्मा, अधिकारी कर्मचारी और बड़ी संख्या में आमजन मौजूद थे। कार्यक्रम की शुरुआत विकसित भारत संकल्प यात्रा की शपथ के साथ हुई। सांसद राज बहादुर सिंह ने मौजूद सभी अतिथियों और हितग्राहियों को शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सपना है कि देश लगातार प्रगति करते हुए, विकसित देश के रूप में उभरे। जिला पंचायत अध्यक्ष हीरा सिंह राजपूत ने कहा कि दूसरे देश कहते थे कि हम उनसे 100 साल पीछे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमें 50 साल आगे कर दिया और 2047 तक हम भी विकसित बनकर उभरेंगे। गांव में गरीबों के मकान शौचालय से लेकर युवाओं को रोजगार देने तक का कार्य किया जा है। विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत शहर और गांव के सभी क्षेत्रों में वंचित हितग्राहियों को शासकीय योजनाओं का लाभ मिलेगा। महापौर संगीता तिवारी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के करीब 9.5 वर्षों के कार्यकाल में देश में लगातार एक सकारात्मक परिवर्तन देखने मिला है। उनके नेतृत्व में शिक्षा, रोजगार, मुफ्त अनाज हर वर्ग के कल्याण के लिए योजनाओं के माध्यम से लाभ दिया जा रहा है। विकसित भारत संकल्प यात्रा का भी उद्देश्य वंचित हितग्राहियों को लाभान्वित करना है।

आईईसी मोबाइल वैन के जरिए मिलेगा लाभ

केन्द्र सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का काम आईईसी मोबाइल वैन के जरिए होगा। इसके जरिए प्रधानमंत्री का संदेश, योजनाओं की जानकारी और योजनाओं से संबंधित चलचित्र प्रदर्शित होंगे। इसके अलावा योजनाओं से संबंधित पम्पलेट, बुकलेट आदि वितरित करने के साथ-साथ योजनाओं के लाभ लेने के लिए आवेदन, लाभ वितरण भी सुनिश्चित किया जाएगा। योजनाओं के संबंध में जागरूकता के लिए क्विज, सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे। लाभार्थियों की व्यक्तिगत सफलता की कहानियों और उपलब्धियों को साझा करने के लिए मेरी कहानी मेरी जुबानी जैसे कार्यक्रम होंगे तथा धरती कहे पुकार के, स्वच्छता गीत आदि जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। साथ ही प्राकृतिक खेती, सॉइल हेल्थ कार्ड के संबंध में जानकारी दी जाएगी। विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत स्वास्थ्य मेला, उज्जवला योजना, आधार कार्ड अपडेटेशन आदि के स्टॉल लगाए जा रहे हैं। भारत सरकार और पीएमओ द्वारा विकसित भारत संकल्प यात्रा की मॉनीटरिंग वेब आधारित पोर्टल से की जाएगी। यात्रा से संबंधित सामग्री इस वेब पोर्टल में साझा की जाएगी। साथ ही हितग्राहियों को दिये जाने वाले लाभ की सूचना इस पोर्टल में होगी। शिविरों में आने वाले आवेदनों के संबंध में भी जानकारी इस पोर्टल में होगी।

युद्ध में शहीद हुए सैनिकों के बलिदान को श्रद्धांजली देने विजय रन का आयोजन

सागर, देशबन्धु। दक्षिणी कमान विजय रन का एक हिस्सा महार रेजिमेंट सेंटर में सफलता पूर्वक आयोजित किया गया। इस विजय रन का मुख्य उदेश्य सैन्य हदों से बहार निकल कर सभी सिविलयन के साथ दौडकर कर 1971 के युद्ध में शहीद हुए सैनिकों द्वारा दिए गये सर्वोच्च बलिदान को श्रद्धांजली देना था। सैनिकों के लिए दौड़ सैनिकों के साथ दौड़ इसका मुख्य थीम था। इस कार्यक्रम को अधिकतम सार्वजनिक भागीदारी के साथ आयोजित किया गया और राष्ट्र के युवाओं के साथ भारतीय सेना के बंधन को मजबूत करने के लिए नागरिक आबादी, विशेष रूप से युवाओं, छात्रों, एनसीसी कैडेटों और दिग्गजों के साथ इष्टतम पहुंच हासिल की गई। सभी प्रतिभागी उसी रास्ते पर दौड़ने का अनूठा अवसर पाकर रोमांचित हो गये जिस रास्ते पर अग्निवीर दौड़ते है। इस दक्षिणी कमान विजय रन को ब्रिगेडियर आई एस भल्ला, वीएसएम कमांडेंट महार रेजिमेंट सेंटर ने सुबह 7 बजे घासी राम क्रीडांगन से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौड़ में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, महार रेजिमेंट पब्लिक स्कूल, महार चिल्ड्रेन एकेडमी, सेंट जोसफ कोंवेंट स्कूल, एनसीसी कैडेटों के छात्रों और शिक्षकों एवं सैन्य अधिकारियो सैनिकों और उनके परिवारों सहित 3100 कर्मियों ने इस विजय रन में भाग लिया और अद्वितीय अनुभव का आनंद लिया। अंत में ब्रिगेडियर आईएस भल्ला, वी एसएम कमांडेंट महार रेजिमेंट और मोना भल्ला अध्यक्षा परिवार कल्याण सभा ने विजेताओं को मेडल देकर सम्मानित किया।

एएसआई का वर्दी में डांस का वीडियो

शादी समारोह में पिस्टल लगाकर वर्दी में डांस करते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर आया सामने

सागर, देशबन्धु। एएसआई का सड़क पर ढोल-नगाड़ों पर जमकर डांस करते हुए एक वीडियो वायरल हुआ है। वीडियो में एएसआई वर्दी और कमर में पिस्टल लगाए हुए थिरकते नजर आ रहे हैं। वीडियो सामने आते ही शहर में चर्चा का विषय बना हुआ है। बताया जा रहा है कि उक्त वीडियो एक से दो दिन पुराना है। मोतीनगर चौराहे के पास एक शादी समारोह के चलते बारात निकल रही थी। जिसमें वर्दीधारी एएसआई शामिल हुए थे। वे बारात में शामिल ढोल-नगाड़ों पर लोगों के साथ जमकर झूमे। एएसआई को डांस करते देख मौके पर लोगों की भीड़ लगी रही। वीडियो में डांस करते नजर आ रहे एएसआई राकेश भट्ट बताये जा रहे हैं जो मोतीनगर थाने में पदस्थ हैं। वीडियो कब का है और कहां का है इसकी पुष्टि नहीं हो सकी है। मामले में एडिशनल एसपी लोकेश सिंहा ने बताया कि सोशल मीडिया से पुलिसकर्मी का डांस करते हुए वीडियो सामने आया है। पुलिसकर्मी द्वारा वर्दी में सार्वजनिक स्थान पर डांस करना उचित नहीं है। उक्त मामले में तथ्य जुटाकर कार्रवाई की जाएगी।

युवक से मारपीट कर रुपए छीने

सागर, देशबन्धु। गोपालगंज थाना क्षेत्र में जीवन जैन बसेरा के पास बदमाशों ने युवक के साथ जमकर मारपीट की। मारपीट में युवक गंभीर घायल हुआ है। जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायल मोहसिन अली उम्र 28 साल ने बताया कि वह बाइक से दरगाह से लौटकर घर आ रहा था। रास्ते में जीवन रैन बसेरा के पास पांच से छह युवक खड़े थे। उन्होंने ने चेहरे पर कपड़ा बांध रखा था। इसी दौरान एक युवक ने हॉकी मारी तो मैं बाइक समेत सड़क पर गिर गया। जिसके बाद सभी ने एकमत को मारपीट की। मारपीट के दौरान चेहरे पर रेडियम कटर मारा। विवाद होते देख आसपास के लोग आये तो मारपीट करने वाले भाग गये। आसपास के लोगों ने घायल को एंबुलेंस की मदद से अस्पताल पहुंचाया। घायल मोहसिन ने बताया कि वह दरगाह से रुपये लेकर जा रहा था। मारपीट के दौरान बदमाश नकद रुपए और गले में पहनी चेन छीनकर भागे हैं। मामले की शिकायत मिलते ही पुलिस ने प्रकरण जांच में लिया है। मारपीट करने वालों की तलाश की जा रही है।

गौरझामर उप स्वास्थ्य केंद्र में डिलीवरी के दौरान नवजात शिशु की हुई मौत

परिजनों ने लगायें नर्स और अस्पताल प्रशासन पर गंभीर आरोप

गौरझामर, देशबन्धु। जिले का सबसे बड़ा कस्बा कहा जाने वाला, जहां लगभग सैकड़ो गांव, लगभग हजारों की संख्या में जनसंख्या होने के बावजूद भी इस क्षेत्र में आज भी गौरझामर नगर मूलभूत सुविधाओं से कोसों दूर है वही यदि उप स्वास्थ्य केंद्र की कहें तो उप स्वास्थ्य केंद्र तो है, यहां पर डॉक्टर भी पदस्थ हैं पर वह कभी मुख्यालय पर नहीं रहते जब इस विषय में पूछा जाता है तो वह कह देते हैं कि हमें कहीं और अटैच किया गया है इस कारण से हम यहा नहीं आते आखिरकार इस क्षेत्र इतनी बड़ी जनसंख्या होने के बाद भी इस क्षेत्र को एमबीबीएस डॉक्टरों की क्या जरूरत नहीं पड़ती क्या, यहां की जनता को भगवान भरोसे छोड़ दिया गया है। यह तो वही बता सकते हैं पर आखिरकार उप स्वास्थ्य गौरझामर में डॉक्टर न होने के बाद भी माह में लगभग 50 से 70 डिलीवरी होना वह भी भगवान भरोसे की जा रही हैं। फिर भी प्रशासन इस और ध्यान नहीं दे रहा है कि जब इतनी बड़ी संख्या में यहां पर डिलीवरी हो रही है तो क्यों ना यहां पर अनिवार्य रूप से डॉक्टरों को नियमित किया जाये। जबकि अनेकों बार यहा की जनता द्वारा मांग की जा चुकी है कि जो डॉक्टर यहां पदस्थ है उन्हें यहां पर नियमित किया जाये पर प्रशासन कुंभकरण की नींद सो रहा है। पिछली बार अखबारों की सुर्खियां बनी थी कि एक महिला की डिलीवरी के दौरान मृत्यु हो गई थी और यहां पर भ्रष्टाचार के आरोप भी लगाये गये थे पर उसमें भी इतिश्री कर दी गई थी। वहीं एक मामला फिर आया कि ग्राम पंचायत सरखेड़ा की एक महिला जो राजपूत समाज से आती है अपने परिजनों के साथ डिलीवरी करवाने हेतु गौरझामर उप स्वास्थ्य केंद्र पहुंची जहां पर जो नर्सें के सहारे चल रहा उप स्वास्थ्य केंद्र जहां महिला को भर्ती कर लिया गया है और नॉर्मल डिलीवरी होने की बात कही इसके बाद वहीं परिजनों ने आरोप लगाया कि महिला की डिलीवरी के दौरान ही कुछ गलत तरीके से प्रसव करने से नवजात शिशु की कुछ समय बाद मृत्यु हो गई पर नर्स ने आधे घंटे बाद ही परिजनों को बताया कि बच्चों को सागर ले जाओ इन्हें ऑक्सीजन की जरूरत है पर यदि समय पर डॉक्टर उपलब्ध होते तो वह बच्चे को चेक कर गंभीरता से लेते हुए तत्काल रेफर किया जा सकता था, पर नर्स के सहारे चल रहे उप स्वास्थ्य केंद्र पर ऐसी लापरवाही होने के आरोप अनेकों बार लग चुके हैं पर प्रशासन इस तरफ ध्यान नहीं दे रहा है।

बेकाबू होकर भैंस को टक्कर मारते हुए मकान से टकराया टैंकर, 3 घायल

खुरई, देशबन्धु। खुरई देहात थाना क्षेत्र के बरोदिया नोनागिर गांव में शुक्रवार रात कोयले की राख से भरा एक टैंकर बेकाबू होकर भैंस को टक्कर मारते हुए एक मकान से टकरा गया। टैंकर की टक्कर से मकान की दीवार गिर जाने से बुजुर्ग दंपत्ति और उनकी बहू घायल हो गई। सभी घायलों को सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया। जानकारी के मुताबिक कोयले की राख से भरा टैंकर एमपी 19 एचए 4144 खुरई से राहतगढ़ तरफ जा रहा था। अचानक टैंकर बेकाबू होकर बरोदिया नोनागिर गांव के सड़क किनारे खड़ी दौलत प्रजापति की भैंस को टक्कर मार दी, जिससे भैंस की मौत हो गई। इसके बाद टैंकर जमना प्रसाद कुावाहा के मकान में घुस गया। टक्कर से मकान क्षतिग्रस्त हो गया। मकान की दीवार गिर जाने से प्रसादी पिता भुजवल कुशवाहा 85, लाड़ली बाई पति प्रसादी कुशवाहा 80, शांति बाई पति जमना प्रसाद कुशवाहा 55 घायल हो गई। सभी घायलों को सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना के बाद टैंकर ड्राइवर वाहन छोड़कर मौके से फरार हो गया। घटना की जानकारी मिलने के बाद खुरई देहात थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल शुरू कर दी। खुरई सिविल अस्पताल में भर्ती घायल शांतिबाई कुशवाहा ने बताया कि सास, ससुर सो रहे थे और वह घर का काम कर रही थी तभी एक टैंकर बेकाबू होकर घर में घुस आया। जिससे घर की दीवार गिर जाने से सास, ससुर और वह नीचे दब गए थे। तेज आवाज को सुनकर आसपास के लोग और परिजन आ गए और सभी लोगों ने उन्हें बाहर निकाला। इसके बाद अस्पताल पहुंचाया। यदि टैंकर घर के और अंदर चला जाता तो बड़ी घटना हो सकती थी। इस मामले की जांच कर रहे खुरई देहात थाने के सहायक उपनिरीक्षक शेखर सिंह ने बताया कि कोयले की राख से भरा टैंकर बेकाबू होकर घर से टकरा गया। जिसमें तीन लोगों को चोट आई हैं। टैंकर चालक मौके से फरार हो गया था। राजकुमार पिता जमना प्रसाद कुशवाहा 28 की रिपोर्ट पर से अज्ञात टैंकर चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पेंशनर्स समाज सागर द्वारा पेंशनर्स दिवस का आयोजन आज

सागर, देशबन्धु। मप्र पेंशनर्स समाज सागर द्वारा वरिष्ठ पेंशनर्स जिनकी आयु 80 वर्ष से अधिक है का सम्मान शाल, श्रीफल भेंट कर किया जायेगा। कार्यक्रम आज रविवार को स्तुति मेरिज गार्ड में सुबह 11 बजे से किया जावेगा। कार्यक्रम में सभी ब्लाकों, तहसील व जिला स्तर के पेंशनर्स उपस्थित रहेगे। यह दिवस 17 दिसम्बर 1982 को डीएन नकरा द्वारा विरूद्ध केन्द्रीय शासन को इसी दिन सवौच्च न्यायालय ने पेंशनर्स के हित में अपना निर्णय दिया था एवं सेवानिवृत्त पेंशनर्स के पेंशन अन्तर को संविधान के अनुच्छेद 14 के विरूद्ध असंवैधानिक बताया था एवं पेंशनर्स के अधिकारों की रक्षा की थी। इस कारण सभी प्रकार पेंशनर्स संगठन इस दिवस को पेंशनर्स दिवस के रूप में मनाते है। इस कार्यक्रम में पेंशनर्स समाज के एवं सभी पेंशनर्स को उपस्थित होने अपील की। अपील करने वालों में जेपी पाण्डेय, आरएस बादल, जीपी विश्वकर्मा, प्रीतम मिश्रा, केके तिवारी आदि शामिल है।

सड़क दुर्घटना में एक युवक की मौत

बीना, देशबन्धु। खिमलासा रोड पर तहसील कार्यालय के पास सड़क दुर्घटना में एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल युवक को सिविल अस्पताल लाया गया, जहां इलाज के दौरान युवक की मौत हो गई। अनिल पिता भगवान सिंह नायक 30 निवासी प्रहलादपुर थाना भोगनीपुर जिला कानपुर उप्र बाइक से जा रहा था। सड़क दुर्घटना में वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे लोगों ने सिविल अस्पताल पहुंचाया। यहां इलाज के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि अनिल बीना के गांधी तिराहा के पास किराए से रहता है। पुराने मोबाइल खरीदने का काम करता था। अस्पताल प्रबंधन ने इसकी जानकारी पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर पंचनामा कार्रवाई कर शव का पोस्टमार्टम कराया। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

अयोध्या में श्रीराम की प्राणप्रतिष्ठा का स्थानीय स्तर पर उत्सव आयोजित करने हुई बैठक

सागर, देशबन्धु। 22 जनवरी को अयोध्या में रामजी की प्राणप्रतिष्ठा होगी जिसका उत्सव देश भर में मनाया जायेगा। सागर में भी घरों के साथ मंदिरों में भी भव्य रूप से उत्सव मनाया जाये इसको लेकर श्रीराम मंदिर प्राणप्रतिष्ठा ग्रह संपर्क अभियान के महाकौशल प्रांत संयोजक आलोक सिंह पुजारी पुरोहितों के साथ बैठक करने सागर प्रवास आए। शनिवार को बैठक आयोजित की गई। आरएसएस के जिला प्रचारक आस्तिक और युवा सर्व ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष पं. भरत तिवारी ने उनका शाल श्रीफल से सम्मान किया। बैठक को संबोधित करते हुए आलोक सिंह ने कहा कि चित्रकूट से जो पवित्र अक्षत कलश आए हुए है वो 30 दिसंबर तक प्रत्येक मंदिर में विशाल शोभायात्रा के साथ दर्शनार्थ पहुंचेंगे इसके बाद 1 से 15 जनवरी तक पूजित कलश के अक्षत से घर घर निमंत्रण दिया जायेगा। अयोध्या में ज्यादा भीड़ न हो इसको ध्यान में रखते हुए प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम स्थानीय स्तर पर मनाये जाये। पं. भरत तिवारी ने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा के दिन सभी सनातन धर्मी उत्सव के रूप मे अपने-अपने घरो में दीपक जलाये, लाइट लगाए, रंगोली वंदन वारे व प्रभु श्री राम की स्तुति भजन पूजन करें। अपने आस पास के लोगो को मिष्ठान वितरित करें। संचालन पुरोहित पुजारी विद्वत संघ के अध्यक्ष पं. रामचरण शास्त्री श्रीहरि, विश्व हिंदू परिषद के अनुज सिंह परिहार ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सुरेश नारायण द्विवेदी, श्रीराम चौबे, बालमुकुंद शास्त्री, रघु शास्त्री, शिवनारायण शास्त्री, गणेशराम शास्त्री, रामचंद शर्मा आदि उपस्थित थे।

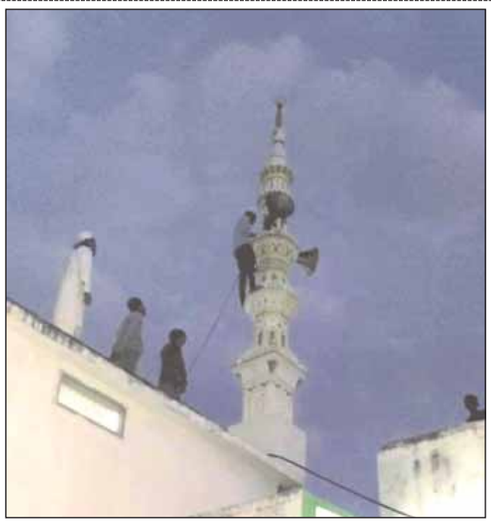

धार्मिक स्थलों से स्वप्रेरणा से हटाये गए लाउड स्पीकर

अनुविभागीय अधिकारियों द्वारा ली गई शांति समिति की बैठक

सागर, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश के तत्काल पश्चात कलेक्टर दीपक आर्य के निर्देशन में सभी अनुविभागीय अधिकारियों के द्वारा जिले में लगातार समन्वय के साथ धार्मिक संगठनों के द्वारा माइक, लाउड स्पीकर हटाने की कार्रवाई स्व प्रेरणा से की जा रही है। कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक अभिषेक तिवारी के द्वारा सभी अनुविभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया गया। सभी को शांति समिति की बैठक आयोजित करने के निर्देश दिए गए, जिस पर शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। जिसमें सभी शांति समिति के सदस्यों, धार्मिक संगठनों के धर्म गुरुओं को आमंत्रित कर शासन के निर्देश को विस्तार से बताया गया। जिले के सभी धर्म गुरुओं एवं शांति समिति के सदस्यों द्वारा शासन के निर्देशों का अक्षरश: पालन करते हुए स्वप्रेरणा से मंदिर मस्जिद सहित अन्य धार्मिक स्थानों से माइक, लाउड स्पीकर हटाने की कार्यवाही शनिवार को की गई। अनु. अधिकारी राहतगढ़ अशोक सेन के द्वारा राहतगढ़ में मंदिर एवं मस्जिद से धर्म गुरुओं के सहयोग से लाउड स्पीकर हटाने की कार्यवाही की गई। इसी प्रकार रहली विकासखंड के अनु विभागीय अधिकारी गोविंद दुबे द्वारा सभी धर्म गुरुओं के साथ शांति समिति के सदस्यों की बैठक लेने के पश्चात सभी के द्वारा निर्णय लिया गया कि सभी सौहार्दपूर्ण वातावरण एवं स्वप्रेरणा से मंदिर मस्जिद से अपनी इच्छा से लाउड स्पीकर हटाएंगे। जिससे कि शासन के निर्देश का पालन हो सके और सभी में भाईचारा बना रहे। इसी परिप्रेक्ष्य में शनिवार को रहली में लाउड स्पीकर हटाने की कार्रवाई की गई। अनुविभागीय अधिकारी देवरी गगन बिसेन, अनु विभागीय अधिकारी खुरई रविश श्रीवास्तव, एसडीएम बंडा संदीप सिंह परिहार के द्वारा शांति समिति की बैठक आयोजित कर सभी धर्म गुरुओं एवं समिति के सदस्यों की समन्वय एवं स्वप्रेरणा से मंदिर मस्जिद से लाउड स्पीकर हटाए गए। मालथौन एसडीएम रोहित बमोरे ने बताया कि मालथौन अनुविभाग के अंतर्गम समस्त मंदिर मजिस्दों के समन्वय के साथ स्वप्रेरणा से माईक हटाये जा रहे है। एसडीएम सागर विजय डहेरिया के द्वारा सागर कार्यालय में सभी धर्म गुरुओं एवं शांति समिति की बैठक आयोजित की गई, जिसमें निर्णय लिया गया कि रविवार को सभी धर्मगुरु अपने-अपने मंदिर मस्जिद सहित अन्य धार्मिक स्थान से लाउड स्पीकर हटाए जाएंगे।

स्वामी पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि.के लिए प्रकाशक गिरिराज चाचा मुद्रक गिरिराज चाचा द्वारा दैनिक भास्कर प्रेस (डी बी कार्प लि.) प्लाट नं. 36 इंडस्ट्रीयल एरिया सागर म.प्र. सागर से मुद्रित एवं 56 अग्रवाल बिल्डिंग एक्सिस बैंक के पीछे 10 सिविल लाईन्स, सागर मप्र से प्रकाशित, संपादक: **पलाश सुरजन,** कार्यकारी संपादक: **ज़ाकिर अली** * प्रबंध संपादक **डॉ. योगेश दत्त तिवारी** फोन 07582-228742 ई-मेल. deshbandhusgr@yahoo.in **प्रेस पंजीयन- MPHIN/2016/69061** समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार।